10.1 दिमागी गुलामी की परकाष्ठा : गीता

आज के समय में गीता ब्राह्मण-धर्म की सबसें प्रसिद्ध पुस्तक मानी जाती है. आज के समय में लोग वेद, उपनिशद आदि को भूल चुके हैं. वस्तुतः उन्हें रद्दी की टोकरी में डाल चुके हैं. हिन्दुओं की 99 प्रतिशत आबादी चारों वेदों का नाम भी नहीं जानती. मात्र कुछेक विद्यार्थी तथा कुछेक ब्राह्मण पुरोहित हैं जो चारों वेदों का नाम जानते हैं. और शायद ही कोई होगा जिसने चारों वेद पढ़े होंगे. 108 उपनिशदों की तो किसी ने शक्ल भी न देखी होगी. 18 पुराणों के पुलिंदे भी किसी ने खंगालने की जहमत नहीं की होगी. ले दे कर मात्र बचती है गीता. और गीता ही वह पुस्तक है जो अब तक ब्राह्मण-धर्म को बचाये हुए है. अगर गीता न होती तो ब्राह्मणों की रोजी रोटी का साधन कभी का समाप्त हो लिया होता तथा ब्राह्मण-धर्म अपनी मौत कभी का मर लिया होता.

अतः प्रश्न उठना स्वभाविक है कि ऐसा क्या है गीता में जो इसे इतना मान दिया जा रहा है. इस प्रश्न का सीधा सा उत्तर है कि गीता ब्राह्मण-धर्म का आईना है. ब्राह्मण-धर्म वास्तव में धर्म न होकर राजनीति, व्यापार और जालसाजी का ऐसा संगठन है जिसका एक मात्र लक्ष्य पैसा कमाना और सत्ता पर काबिज रहना है. इस लक्ष्य के लिए इस धर्म के ठेकेदार अर्थात ब्राह्मण कुछ भी करने को तैयार रहते हैं. इनके लिए धर्म वही है जो इनको धन और सत्ता दिला सके. गीता इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए इनका मुख्य हथियार है.

जैसे एक ही सुपर मार्किट में बाल उगाने सें लेकर बाल उड़ाने तक के सभी प्रसाधन होते हैं वैसे ही गीता में सभी कुछ है. चाहे साधु बनो या चोर बनो सारे रास्ते गीता में मौजूद हैं. विश्वविद्यालय के कुलपति सें लेकर अंगूठाछाप मजदूर तक सभी को गीता में अपने जैसा बने रहने का साधन मिल जाता है. गांधी को अहिंसा रूपी कायरता और सरदार भगत सिंह को बम फोड़ने की बहादुरी गीता सें मिल जाती हैं. कुल मिला कर जैसे सुपर मार्किट में अलग अलग खानों में अलग अलग किस्म की वस्तुएं रखी होती हैं और ग्राहक अपनी मन मर्जी सें कोई भी वस्तु ले सकता है वैसे ही गीता है. इसके भिन्न भिन्न अध्यायों में भिन्न भिन्न प्रकार के संदेश भरे पड़े हैं. वैसे व्यक्ति को इसके भिन्न भिन्न अध्यायों में जाने की आवश्यकता ही नहीं पड़ती क्योंकि हरेक को एक ही अध्याय में अपनी जरूरत का सामान मिल जाता है. जैसी भक्त की आवश्यकता हो वैसा श्लोक छांट ले. कई जगह तो लगातार दो श्लोक एक दूसरे के विपरीत हैं. एक श्लोक में आत्मा एक शरीर सें दूसरे में जाने वाली वस्तु है तो दो श्लोकों के बाद यही आत्मा अचल व स्थिर है. एक श्लोक में ईश्वर न तो संसार को बनाने वाला, न चलाने वाला है दूसरे श्लोक में उसकी इच्छा के बिना पत्ता भी नहीं हिलता. एक श्लोक में वेद बेकार वस्तु है तो अन्य श्लोक में वे परम पद दायक हैं. एक श्लोक में ज्ञान सें मुक्ति मिलती है तो दूसरे में ज्ञान सें कुछ होने वाला नहीं है. जिसकी जैसी इच्छा हो वही श्लोक अपना ले.

गीता के इन्हीं गुणों के कारण भदन्त आनन्द कोसलायन ने गीता को भानुमति का पिटारा कहा है. पिटारा खोला जो इच्छा हुई, निकाल लिया. जैसे सुपर मार्किट वाले एक ही ग्राहक को वजन घटाने और वजन बढ़ाने की दवा दे सकते हैं वैसे ही ब्राह्मण गीता में सें आत्मा और अनात्मा, ज्ञान और अज्ञान सभी कुछ दे सकते हैं. आचार्य चतुरसेन ने बिल्कुल सही कहा है कि जिसने भी गीता लिखी उसने चाहे कुछ और दिया या न दिया हो, ब्राह्मणों को सारी उम्र की रोटी जरूर दे दी है. ब्राह्मणों की रोजी रोटी के लिए गीता में तीन तरह के शोशे गढे गए हैं जिनके चक्कर में फंस कर प्राणी सारी उम्र इन ब्राह्मणों के चक्कर काटता रहता है. यह तीन शोशे हैं :

1. **अवतारवाद का सिद्धांत** : ईश्वर धर्म की रक्षा के लिए अवतार लेता है. अतः जब भी धर्म का नाश होता है भगवान उसे बचाने के लिए धरती पर अवतार ले लेता है.
2. **आत्मा का सिद्धांत** : प्रत्येक जीवित प्राणी में आत्मा होती है. उस आत्मा को परमात्मा सें मिलाना अर्थात मोक्ष प्राप्त करना हर प्राणी का परम धर्म है. मोक्ष के रास्ते ब्राह्मणों के पास हैं.
3. **कर्म का सिद्धांत** : आदमी को काम करना चाहिए, फल की उम्मीद नहीं करनी चाहिए.

गीता के उरोक्त सिद्धांतों के बारे में जो प्रचार किया जाता है उस संदर्भ में पंचतन्त्र में एकदम सटीक एक कथा है कि एक बार एक भोला भाला आदमी अपनी भेड़ लेकर कहीं जा रहा था. रास्ते में उसे तीन ठग मिले. भेड़ पर उनकी नीयत खराब हो गई. उन्होंने उससें भेड़ हथियाने की साजिश रची. साजिश के अनुसार तीनों अलग अलग स्थानों पर खड़े हो गए. पहले एक ठग उसके पास आया. हाल चाल पूछने के बाद बोला, ''यह कुत्ता कहां लिए जा रहे हो ?'' आदमी हैरानी सें बोला यह तो भेड़ है. पहला ठग मुस्कराया और आगे बढ़ गया. आदमी ने भेड़ की ओर ध्यान सें देखा. उसे लगा कि उसके पास भेड़ ही है. वह आगे चल पड़ा. कुछ देर के बाद दूसरा ठग उसे मिला. उस आदमी को देखते ही बोला, '' यह गंदा सा कुत्ता कहां लेकर जा रहे हो ?'' वह आदमी बेचारा परेशान होकर धीरे सें बोला यह तो भेड़ है. वह ठग उसकी तरफ देखकर जोर सें मुस्करा दिया. तभी वहां तीसरा ठग आ गया. आते ही बोला, ''यह कुत्ता बीमार है क्या ?'' उस व्यक्ति ने भेड़ को गौर सें देखा. उसे यह भेड़ जैसी ही दिखी मगर तीन अलग अलग लोगों सें उसे कुत्ता

सुनकर उसे लगा कि वे तीनों झूठे नहीं हो सकते. उसने भेड़ को वहीं छोड़ा और आगे बढ़ गया. रात को उन तीनों ठगों ने मजे सें उस भेड़ की दावत उड़ाई.

ऐसा ही कुछ भारतीय समाज के साथ हो रहा है. कश्मीर सें कन्या कुमारी तक पंजाब सें आसाम तक ऐसे ठग भरे पड़े हैं. सुबह सें शाम तक टीवी रेड़ियो फिल्में अखबार, हर जगह पर यह ठग चिल्ला रहे हैं : आत्मा है, अवतार हुए हैं, जैसे तुम हो यह तुम्हारे कर्मों का फल है. जब तीन ठगों के कहने सें आदमी भेड़ को कुत्ता समझ लेता है यहां तो तीन करोड़ हैं. सभी एक सुर में चिल्ला रहे हैं. अभी कुछ दिन पहले एक ही दिन पूरे भारत के मंदिरों में मूर्तियों ने दूध पीया. इनका तन्त्र इतना सशक्त है कि पूरे भारत में एक साथ एक ही दिन मूर्तियों को दूध पिलाने का प्रपंच रच दिया गया. पूरी भारत सरकार का प्रचार तन्त्र चाहे तो भी वह इस तरह का प्रपंच नहीं रच सकता जो इन ब्राह्मणवादियों ने कर दिखाया.

ऐसा ही गीता का प्रचार है.

10.1 अवतार का सिद्धांत

अवतार का सिद्धांत गीता के अध्याय 4, श्लोक 7 एवं 8 में मिलता है. यह श्लोक इस प्रकार सें हैं:

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानि भर्वतिभारत !
अभ्युत्थानमधर्मस्यतदात्मानं स्जाम्यहम् !! (7)
परित्राणाय साधूनां विनाशाय दुष्कृताम् !
धर्मसंस्थापनार्थय संभावमि युगे युगे !! (8)

इन श्लोकों का अर्थ इस प्रकार सें हैः
जब जब भी धर्म की हानि अथवा कमी होती है, हे भारत, अधर्म बढ़ता है तब मैं स्वयं अपनी सृजना अर्थात रचना करता हूँ. साधुओं की सुरक्षा के लिए तथा दुष्टों के विनाश के लिए तथा धर्म की संस्थापना करने के लिए मैं युग युग में संभव होता हूँ अर्थात अवतार या जन्म लेता हूँ.
इस सिद्धांत के अनुसार "अवतार" घटित होने सें सम्बंधित तीन बातें प्रमुख हैं :

1. ईश्वर स्वयं की सृजना करता है अर्थात स्वयं को पैदा करता है.
2. धर्म की हानि और अधर्म की बढोतरी को समाप्त करके धर्म की स्थापना करता है.
3. साधुओं की सुरक्षा करता है तथा दुश्टों का नाश करता है.

सुननें में यह सिद्धांत बहुत कर्णप्रिय है. पूरे विश्व में कोई नहीं चाहेगा कि भगवान ऐसा न करे. हर कोई मानता है कि भगवान होता इसीलिए ही है कि वह धर्म को बचाए, भले लोगों को बचाए. शैतानों और पापियों को हटाए.
प्रश्न उठना स्वभाविक ही है कि क्या सच में अवतार संभव होता है? और जैसा यह सिद्धांत है क्या वास्तव में ब्राह्मण-धर्म में ऐसा हुआ भी है ?. क्या उनके जितने भी अवतार हुए हैं उन्होंने वास्तव में धर्म की स्थापना की है? क्या उन्होंने वास्तव में साधु लोगों की रक्षा की है और दुश्टों को मारा है? इस अध्याय में आगे इन्हीं प्रश्नों की विवेचना की गई है.
अवतार का अर्थः उपरोक्त श्लोक के अनुसार ब्राह्मणों का भगवान स्वयं अपनी इच्छा सें देह धारण करता है. वह किसी की जीवित प्राणी की शक्ल में अपनी रचना कर सकता है. अब तक वह सूअर, मछली, कछूए, अर्धनर के रूप में तो आ चुका है. शेश कभी भी गधे घोड़े कुत्ते बिल्ली सांप आदि की शक्ल में भी आ सकता है. कई बार अजीवित वस्तुओं के रूप में भी आया है जैसा झण्डा शोर आदि.

अन्य धर्मों में तो भगवान सर्वशक्तिमान, निराकार और असीमित है. अन्य धर्मों के संस्थापकों अथवा गुरुओं ने स्वयं को भगवान का बेटा बताया अथवा उसका दूत बताया. केवल ब्राह्मणवाद के अवतारों ने स्वयं को भगवान बताया. केवल ब्राह्मणों का भगवान ही सीमित आकार का तथा घटिया मानव भावनाओं के बस में रहने वाला है. उनके तीन भगवान हैं ब्रह्मा, विश्णु और महेश. तीनों एक नम्बर के आवारा और काम वासना में लिप्त रहने वाले.

अवतार के बारे में उनकी एक बात सांझी है कि अवतार कब लेना है क्यों लेना है अवतार लेकर कौन कौन से कारनामे अंजाम देने हैं यह सब अवतार लेने सें पहले ही तय कर लिया जाता है. राम ने महात्मा रावण को कत्ल करने के लिए ही अवतार लिया था. वह चाहे सीता का हरण करते या न करते राम ने उनका कत्ल करना ही था. जैसे भेड़िये ने बकरी के बच्चे को खाना ही था चाहे वह पानी गंदा करे या चाहे उससें जुबान लड़ाये! कृष्ण ने राम के रूप में ही सभी देव पत्नियों और ऋशियों को बता दिया था कि अगले अवतार में वह उन सब की काम वासना शांत कर देगा.

कंस चाहे पाप करता या न करता कृश्ण ने तो उनकी काम वासना मिटाने के लिये अवतार लेना पहले ही तय कर लिया था.

अवतार की सम्भवता : उपरोक्त श्लोक के आधार पर निम्नलिखित चार शर्तें पूरी होने पर ही ''अवतार'' होने की सम्भावना बनती है :

1. ईश्वर का अस्तित्व होना चाहिए.
2. ईश्वर सर्वशक्तिमान होना चाहिए और भला होना चाहिए.
3. धर्म की ग्लानि होनी चाहिए.
4. साधुओं का दमन होना चाहिए.

1. जहां तक ईश्वर के अस्तित्व की बात है तो बुद्ध धर्म और जैन धर्म किसी भी साकार भगवान के अस्तित्व को स्वीकार ही नहीं करते. उनके अनुसार ईश्वर अगर कोई है तो वह ऐसा बिल्कुल भी नहीं है कि वह किसी प्राणी के वीर्य सें मादा की कोख सें पैदा हो! अतः उनके लिए अवतारवाद एक झूठ, पाखंड के अतिरिक्त कुछ नहीं है. ईश्वर का अस्तित्व मात्र पुरोहितों के लिए ही लाभकारी रहा है. ब्राह्मण पुरोहितों के अतिरिक्त किसी आम आदमी को ईश्वर के होने सें कभी कोई लाभ हुआ हो, ऐसा कोई उदाहरण नहीं है. ब्राह्मणों के लिए ''भगवान'' का अस्तित्व कमाई का मुख्य साधन है. भगवन बुद्ध और जैन तीर्थंकर को कमाई करने का लालच न था. अतः उन्होंने उसके अस्तित्व को नकार दिया.

अन्य सभी धर्म एक ही ''भगवान'' को मानते हैं जो कि निराकार है. सिख धर्म में भी ''एकमकार" अर्थात एक निराकार भगवान को मान्यता दी गई है. समस्त सन्तों ने भी निराकार ईश्वर की सत्ता को स्वीकार किया है. सभी धर्म ईश्वर को एक प्रकाश पुन्ज के रूप में मान्यता देते हैं जिसका कि कोई निश्चित आकार नहीं होता. लेकिन ब्राह्मणों ने तो कमाई करने के लिए अनगिनत भगवान पैदा कर रखे हैं: हत्यारे, बलात्कारी, जुआरी, नपुंसक, पशु नरपशु सभी उनके भगवान हैं जिसको जैसा चाहिए ले जाए!

जहां तक भगवान के भला तथा सर्वशक्तिमान होने की बात है तो यह दोनों बातें परस्पर विरोधी हैं. अगर भगवान भला और सर्वशक्तिमान दोनों है तो वह दुश्ट पैदा ही क्यों करता है या पैदा होने ही क्यों देता है जिससें कि उसे अवतार लेने का कष्ट उठाना पड़े. यह भी सच्चाई है कि दुश्ट तो पैदा होते ही रहते हैं. अतः या तो भगवान सर्वशक्तिमान नहीं है या फिर वह भला नहीं है. अगर वह भला नहीं है तो वह शैतान है और कुदरती तौर पर शैतान भगवान नहीं हो सकता! अगर वह सर्वशक्तिमान नहीं है तो हम जैसा एक साधारण प्राणी है. और हम सब जानते हैं कि साधारण प्राणी भगवान नहीं होता है. अतः अगर वह ''भगवान'' नहीं है तो अपनी इच्छा सें अवतार नहीं ले सकता. अतः कुल मिला कर अवतार का सिद्धांत एक झूठा, कल्पित और पाखंडपूर्ण सिद्धांत है जिसका सच्चाई सें कोई सरोकार नहीं है. किसी भी स्थिति में अवतार होने की सम्भवना नहीं है.

जहां तक ब्राह्मण–धर्म के तथाकथित भगवान के अवतारों की बात है तो इस सिद्धांत को झूठ और पाखंड सिद्ध करने के लिए एक ही तथ्य काफी है कि उनका **कोई भी ''भगवान'' तथा कोई भी ''अवतार'' भला नहीं था**. सभी ने एक सें बढ़ कर एक अनैतिक धन्धे किये हैं. उनके कारनामे पढ़ कर फिल्मी तथा असली गुंडे अथवा डॉन के कारनामे टुच्चे से लगते हैं. उदाहरण के तौर पर आज के समय में ओसामा बिन लादेन को सबसें बड़ा आतंकवादी घोशित किया हुआ है. लादेन का कसूर यह बताया जाता है कि उन्होंने अमरीका के दो व्यापारिक टॉवर ध्वस्त करने की साजिश रची थी. लेकिन ब्राह्मणों के भगवानों अथवा उनके अवतारों ने जो कारनामे अंजाम दिये हैं उसकी तुलना में लादेन का काम तो ''एटम बम के सामने गुलेल की कंकरी" के समान है.

राम के दूत हनुमान ने पूरी लंका को जला डाला जिसमें बच्चे बूढ़े स्त्रियां, बीमार, अपाहिज सभी जल कर मर गए थे. अगर सीता को महात्मा रावण लेकर गये थे तो लंका में रहने वाली बेचारी आम जनता का क्या दोश था. दूध पीते बच्चों का क्या दोश था ? जो उन्हें भी जिन्दा जला कर कत्ल कर दिया गया.

कृश्ण और अर्जुन ने खाण्डव वन में आग लगा दी. उस जंगल में रहने वाले नाग कबीले के लोग जला कर मार दिए गए. ब्राह्मण–ग्रन्थों में बड़े गर्व सें वर्णन किया गया है कि जो बच्चे, बूढ़े, जवान व स्त्रियां जान बचाकर जंगल सें बाहर भागे उन को पकड़ पकड़ कर वापिस आग में फैंक दिया गया. बच्चे बूढ़ों स्त्रियों ने रहम की भीख मांगी, रोये, गिड़गिड़ाये मगर कृश्ण और अर्जुन की रक्त पिपासा पर उनकी सिसकियां बेअसर रही. जब तक पूरे खाण्डव वन के समस्त नर नारी बच्चे जल नहीं मरे इनकी दरिंदगी शांत न हुई.

इन ब्राह्मणों का एक और अवतार ब्राह्मण कुल में पैदा हुआ परशुराम था. उसका बाप जमदग्नि एक ऋशि था. उसका किसी अर्जुन नामक आदमी सें झगड़ा था जो कि क्षत्रिय था. उनके झगड़े में परशुराम का बाप मारा गया. बदले में ब्राह्मणों के भगवान के अवतार ने पूरी धरती पर जितने क्षत्रिय थे उन सबको कत्ल कर दिया. जो धरती पर आ चुके थे उन्हें ही नहीं मारा बल्कि जो बच्चे क्षत्राणियों की कोखों में पल रहे थे, उनको भी मार दिया. उसने अपने परशु (फरसा) सें गर्भवती स्त्रियों के पेट फाड़ दिये. गर्भ सें बच्चे निकाल कर उन्हें काट दिया. ब्राह्मणों के उस ''भगवान के

अवतार'' ने एक बार नहीं बल्कि 21 बार ऐसा किया. काश ! बिन लादेन मियां ब्राह्मणवादी होते! तो आज वे भी इनके अगर भगवान नहीं तो छोटे मोटे देवता तो जरूर बना दिए जाते.
अतः ब्राह्मणों के किसी भी भगवान ने कभी भी ''अवतार'' लेकर भला काम नहीं किया.

ब्राह्मणों का भगवान यानि आत्महत्या का मार्ग

वैसे तो भगवान का अस्तित्व लगभग सभी धर्म वाले मानते हैं लेकिन ब्राह्मणवाद में भगवानों की लाईन लगी हुई है. तरह तरह के भगवान इसमें मौजूद हैं लेकिन यह भी तथ्य है कि अनेकों ब्राह्मणवादी भगवान को न पाकर आत्महत्या करने पर मजबूर हुए हैं. श्री एस एन शास्त्री ने अपनी पुस्तक "ईश्वर चक्र धर्म चक्र प्रवर्तन सूत्र और चुनाव चक्र" में ऐसे कुछ भगवानों की सूचि दी है.

- रामतीर्थ ने विदेशों में वेदान्त का प्रचार किया. "अहं ब्रह्मास्मि अर्थात मैं ब्रह्मा हूँ" का प्रचार किया लेकिन अंत में ब्रह्म न पाकर उसने अलखनंदा में डूब कर आत्महत्या कर ली
- कुमारिल भट्ट ब्राह्मण था. साम की नीति अपनाते हुए उसने बौद्ध धर्म को अपनाने का दिखावा किया. जब लोग उसे बौद्ध समझने लग गये तो उसने बौद्ध धर्म विरोधी आचरण करना शुरू कर दिया. भगवान की खोज करने लग गया. अन्त में भगवान न पाकर तथा बुद्ध धर्म के विरुद्ध झूठा प्रचार करने की ग्लानि में स्वयं को आग लगा कर आत्महत्या कर ली.
- संकराचार्य ने भी कुमारिल भट्ट जैसा आचरण किया. संकराचार्य उससें भी दो कदम आगे निकल गया. एक तो उसने राजा सुन्धवा की सेना लेकर बौद्ध भिक्षुओं का कत्लेआम किया तथा उसने स्वयं को ब्रह्म अर्थात भगवान घोशित कर दिया. लेकिन अंत में जब उसका भंडा फोड़ हुआ तो उसने भी आत्महत्या कर ली.
- चैतन्य ने स्वयं को भगवान सें भी ऊपर की चीज बताया. अपने आप को महाप्रभु कहलवाया लेकिन भगवान न पाकर वह भी समुद्र में डूब मरा.
- ज्ञानेश्वर के सामने भैंस रंभाई. उसने लोगों सें कहा कि भैंस के मूंह सें वेद की आवाज निकल रही है. उसने भैंस के रंभाने और वेद मन्त्रों के पाठ में एकसमानता को सिद्ध किया. लेकिन अंत में वेदों के द्वारा भगवान की प्राप्ति न होने पर उसने भी आत्महत्या कर ली.
- मरहटा शिवा के गुरू रामदास ने भी भगवान को न पाकर आत्महत्या कर ली.
- ब्राह्मणों के तथाकथित भगवान ने पांडवों के हाथों उनके सभी भाई बन्धु मरवा दिये. अंत में पांडवों ने भी हिमालय की बर्फ में दब कर आत्महत्या कर ली.
- औरों का तो क्या कहना स्वयं विशणु का एक चौथाई अवतार कहे जाने वाले लक्ष्मण ने राम के कहने पर सरयू में डूब कर आत्महत्या कर ली थी और विशणु का एक आधा अवतार कहे जाने वाला राम भी अंत में जीवन भर दुख उठा कर सरयू में डूब मरा.

जहां तक धर्म का सम्बंध है, अब तक भगवान मात्र ब्राह्मणों का ही धर्म बचाने आया है. स्वयं तुलसी भी कहता है कि "विप्र धेनु सुर संत हित लीन्ह मनुज अवतारा" अर्थात ब्राह्मण और गाय के भले के लिए ही अवतार होते हैं. शेश दुनिया गई भाड़ में! किसी भी अन्य धर्म में भगवान उसके पुरोहितों को बचाने अवतार बन कर नहीं आया. तो क्या भगवान का दायरा सिर्फ ब्राह्मणों तक ही सीमित है? जैसे आगे दी गई सूचि सें स्पश्ट है अवतारों ने नैतिकता की बजाए मात्र ब्राह्मणों की रक्षा की है. धर्म के नाम पर जो कुकर्म ब्राह्मण करते थे, उनका भगवान उन कुकर्मों को ही बचाने आया है.

दूसरों का तो कहना ही क्या, भगवान कभी जो उसके अपने धर्म के आम आदमी हैं उनको बचाने भी नहीं आया. औरंगजेब पर जबरन धर्म परिवर्तन करवाने का आरोप है. तब भगवान नहीं आया. पंजाब में एक दशक तक हजारों बेगुनाहों को बसों सें उतार कर मारा गया, तब भी ब्राह्मणों का भगवान नहीं आया. और तो और जब लुटेरों ने ब्राह्मणों के मंदिर लूटे और उनकी बहन बेटियां अगवा कर ले गये तब भी वह अवतार नहीं हुआ. गुजरात में हजारों बेगुनाह मारे गए, हिन्दु भी मुस्लिम भी, तब भगवान अवतार बनके क्यों नहीं आया? इन्दिरा गांधी के कत्ल के बाद हजारों बेगुनाह जिन्दा जलाये गए. तब क्यों नहीं उसने आकर मोदी, अडवानी, भगत राजनीतिज्ञ नरपिशाचों को सज़ा दी?

लेकिन ब्राह्मणों का भगवान तो स्वयं ऐसे काम करता रहा है. इन्द्र ने 99 घर जलाए, हनुमान ने लंका जलाई, कृश्ण ने खांडव वन जलाया. बेगुनाहों को जिन्दा जलाना तो इनका सनातन धर्म है इसीके लिए ही तो उनका भगवान 'संभवामि युगे युगे' होता है.

धर्म को लेकर गीता में जो बयान बाजी की गई है उसके अनुसार धर्म का अर्थ नैतिकता नहीं है. कृश्ण ने गीता का भड़काऊ भाशण तब दिया जब कौरव और पांडव जूए में हारी सम्पत्ति को लेकर लड़ने मरने को तैयार हो गए थे.

जूआ खेलना और उसमें प्रयुक्त सम्पत्ति को लेकर लड़ना मरना, मात्र ब्राह्मणवाद में ही धर्म कहे गए हैं. पूरे विश्व में किसी भी अन्य धर्म में इन जैसे कुकर्मों को धर्म नहीं कहा गया है.

अगर मान लें कि गीता कृश्ण के मुख सें ही फूटी है तो वह एक जगह तो (4.7/8) तो कहता है कि जब भी धर्म की हानि होती है वह धर्म को बचाने के लिए अवतार ले लेता है. लेकिन आगे चल कर वह अर्जुन सें फिर कहता है कि वह सब धर्मों को छोड़ कर उसकी शरण में आ जाए. सो अगर भक्तों सें धर्म ही छुड़वा देना है तो अवतार लेने की आचश्यकता ही क्या रह जाती है. लगता है गीता लिखते समय ग्रन्थकार ने सोम कुछ ज्यादा ही चढ़ा ली थी. अतः एक जगह तो भगवान धर्म बचाने आ गया, दूसरी जगह धर्म छुड़वाने यानि नश्ट करवाने आ गया. श्लोक 1.40 में हर कुनबे का अपना कुलधर्म होता है. 1.43 के अनुसार वर्णसंकर संतान का जाति ही धर्म होता है. 2.39 के अनुसार योग अथवा कसरत भी धर्म है. सो कौन सा धर्म बचाने ब्राह्मणों का भगवान अवतार लेता है यह गोरख धन्धा समझ सें परे की बात है. इसी गोरख धन्धे को पंजाबी में भंभल भूसा कहा जाता है.

हितोपदेश की एक कथा है कि एक स्त्री व्यभिचारिणी (राधा) थी. जब उसके पति को इस बात का पता लगा तो उसने स्त्री को मार पीट कर बांध दिया ताकि वह घर सें बाहर न जा सके. तभी उसकी दूसरी साथिन उसे बुलाने आई कि उसका जार उसे बुला रहा है. वह स्त्री बोली कि वह ऐसा कष्टदायक काम नहीं करेगी. दूसरी स्त्री बोली,'' यह कुलटाओं का धर्म नहीं है कि कष्ट के डर सें वे अपने जारों को छोड़ दें.'' निश्चित रूप में ऐसे ही धर्म को बचाने के लिए ब्राह्मणों के भगवान अवतार लेते हैं.

ब्राह्मणवाद के अवतारों पर सटीक टिप्पणी, अनजाने में ही सही, तुलसी ने राम चरित में की है. जब राम ने छुप कर बालि की हत्या की तो तुलसी ने लिखा.

धरम हेत अवतार गोसाई,
मारेहु मोहि व्याध की न्याई

अर्थात गोसाईं तुलसी का कहना है कि राम ने धर्म की रक्षा के लिए अवतार लिया है. इसीलिए उसने बालि को वैसे ही कत्ल किया है जैसे शिकारी छिप कर पशु पक्षियों को मारता है.

जहां तक साधुओं को कष्ट होने का प्रश्न है तो सबसें पहले तो यही प्रश्न उठता है कि साधु कौन होता है? हम सब इस बात सें सहमत होंगे कि साधु होने के लिए शुद्ध आचरण सबसें प्रमुख कसौटी है. जिस व्यक्ति का आचरण शुद्ध नहीं है, वह चाहे किसी कुल, किसी जाति में पैदा हुआ हो वह साधु कहलाने के योग्य नहीं है. मात्र ब्राह्मण कुल में पैदा होना ही किसी को साधु नहीं बना देता. राम ने तो तप करते महान ऋशि शम्बूक की हत्या कर दी थी! एक निर्मल साधु की हत्या करके राम ने अवतारवाद के झूठ होने की पुश्टि की है. हनुमान ने जब लंका में आग लगाई तो अनेकों साधु उसमें जिन्दा जल कर मर गए! हनुमान को शिव का अवतार बताया जाता हैं! सो अवतारों ने कभी किसी साधु की रक्षा नहीं की.

आधुनिक काल में बर्बर हमलावरों ने तक्षशिला और नालंदा में शिक्षा ग्रहण करने वाले हजारों भिक्षुओं को मार दिया, सन्त रैदास को ब्राह्मणों ने लाठियों सें पीट कर मार डाला, सन्त कबीर को अनगिनत कष्ट दिए गए. साधु सन्तों को कष्ट देने की उदाहरणों सें इतिहास भरा पड़ा है लेकिन तब एक बार भी अवतार नहीं हुआ! मात्र ब्राह्मण पुराहितों को बचाने ही अवतार क्यों आए? जहां तक साधुओं की रक्षा करने का सवाल है किसी भी अवतार ने कभी किसी असली साधु की रक्षा तो दूर सहायता भी नहीं की.

अतः अवतारवाद का सिद्धांत मात्र ढकोसला है. ब्राह्मणों की कमाई का एक जरिया मात्र है.

अवतारवाद के झूठ

अवतारी त्रिदेव : लगभग सारे अवतार तीन देवों ब्रह्मा, विष्णु और महेश ने लिये हैं. लेकिन त्रिदेव कैसे पैदा हुआ इसकी कथा भी कम धार्मिक नहीं है. एक बार नारद को इन तीनों की बीवियों ने पूछा कि दुनिया में सबसें पतिव्रता नारी कौन है. नारद ने कहा अत्रि की पत्नि अनुसुइया सबसें बड़ी पतिव्रता है. यह सुन कर तीनों ने पूछा कि वे तीनों सबसें बड़ी पतिव्रता क्यों नहीं हैं. तब नारद ने उन तीनों के व्यभिचार के किस्से बयान किये. सुन कर उनकी बोलती बंद हो गई. तब उन्होंने यह ठाना कि अनुसुइया को अपने बराबर बना देंगी.

अतः उन्होंने उस भोली भाली स्त्री के विरुद्ध एक भयंकर षडयन्त्र रचा. उन्होंने अपने पतियों सें कहा कि वे तुरंत जाकर अनुसुइया सें संभोग (बलात्कार अथवा व्यभिचार) करें. तीनों देवों को तो जैसे मूंह मांगी मुराद मिल गई. वे ब्राह्मण का वेश बना कर अनुसुइया के पास गए. उसने उन तीनों को ब्राह्मण समझ उनके लिए खाना बनाया. वे बोले खाना तब खाएंगे अगर वह नंगी हो कर उनके सामने आये. वह जानते थे कि ब्राह्मण की बात मानने सें कोई भी नारी मना नहीं कर सकती. वह नंगी होकर खाना परोसने लगी कि तभी अत्रि आ गया. अत्रि अगर कुछ देर लेट हो जाता तो अनुसुइया का भी वही हाल होता जो सरस्वती, वृंदा अथवा मोहिनी का हुआ था.

अत्रि को आया देख कर तीनों नवजात बच्चे बन गये. अनुसुइया ने उन तीनों को एक ही पालने में सुला दिया. वहीं पड़े पड़े उन तीनों के धड़, हाथ पैर आपस में जुड़ गये. अतः उन तीनों का एक नया बालक बन गया जिसके तीन सिर और एक धड़ था. यह त्रिदेव के पैदा होने की धार्मिक कथा है. (बाबा साहिब 8.174)
क्या सबक मिलता है हमें ऐसी कथा सें. यही कि ब्राह्मणों के भगवानों की बीवियां भी चरित्रहीन थीं, व्यभिचारी थीं. वे न केवल शरीर सें चरित्रहीन थीं बल्कि मन आत्मा सें भी चरित्रहीन थीं. उन्होंने अपने पतियों सें यह कहा कि वे किसी गैर की पतिव्रता स्त्री का सतीत्व भंग करें.

एक पल के लिए कल्पना करें कि यह घटना आपकी आँखों के सामने हो रही है. तीनों देव बैठे हैं और वे तीनों चरित्रहीना अपने पतियों को अनुसुइया सें यौन सम्बंध बनाने के लिए कह रही हैं. उन्होंने अपने पतियों को अलग अलग नहीं कहा बल्कि छओं ने एक जगह बैठ कर ही आमने सामने बात की है. ऐसी बातें आजकल वेश्याओं के कोठे पर ही होती हैं या फिर अनैतिक चरित्र वाले लोग ही ऐसी बेहयाई की बातें कर सकते हैं.

इस षडयंत्र के सिवाय तीनों अवतारी आपस में अगर कुत्तों की तरह नहीं तो सांडों की तरह अवश्य लड़ते रहते थे. स्कंद पुराण की कथा के अनुसार एक बार ब्रह्मा और विष्णु में इस बात पर लड़ाई हो गई कि कौन पहले जन्मा है. वे मरने मारने को तैयार हो गए. तभी शिव बोला सबसें पहले तो मैं पैदा हुआ हूँ. ब्रह्मा गाय को ले आया जिसने झूठी गवाही दे दी. गुस्सें में आकर शिव ने ब्रह्मा का सिर काट डाला और विष्णु को प्रथम जन्मा बता दिया. ब्रह्मा भक्तों ने बदले में विष्णु को ब्रह्मा की नाक सें निकला सूअर बना दिया.

रामायण के अनुसार जब राम सीता को जीत कर आ रहा था तो परशुराम ने राम को रोक लिया और कहा कि उसने शिव का धनुष तो तोड़ दिया अब विष्णु का धनुष तोड़ कर अपनी बहादुरी साबित करे. इस बात पर शिव और विष्णु आपस में भिड़ गये. देवों ने दोनों को अलग किया. अंत में विष्णु को बड़ा मान लिया गया. (पहेली 10)

बाबा साहिब के अनुसार ब्राह्मणधर्म में अनेकों देवों भगवानों का होना और उनका आपस में टकराना यह दर्शाता है कि यह धर्म अनेक कबीलों सम्प्रदायों का जमघट है जिनमें हरेक का अपना अपना देवता है. इसी कारण सें हिन्दू की परिभाषा नहीं है और यह बताना लगभग असंभव है कि "हिन्दू" कौन है.

त्रिदेवों का आपसी रिश्ता : अगर ब्राह्मण ग्रन्थों को पढ़ा जाए तो एक अजीब सी बात सामने आती हैं कि देवों में आपस में बड़ी अजीब सी रिश्तेदारी है. आज के समय में हम ऐसे रिश्ते बनाने की कल्पना भी अनैतिक समझते हैं. पार्वती दक्ष की बेटी और ब्रह्मा की पोती है और शिव की बीवी है. अतः शिव ब्रह्मा का पोता-जंवाई है. दुर्गा कृष्ण की बहन है तथा शिव की बीवी है. कृष्ण विष्णु का अवतार है. अतः शिव कृष्ण यानि विष्णु का जीजा है. काली ....की बेटी है और शिव की बीवी है. यहां तक तो रिश्ता कुछ ठीक है.

अब एक कथा है देवी भागवत पुराण सें (पहेली 11). कथा है कि श्री नामक देवी ने हथेलियां रगड़ कर पहले ब्रह्मा को पैदा किया. पैदा करते ही उससें बोली कि वह उससें विवाह (यौन सम्बंध) करे. ब्रह्मा बोला कि वह तो उसकी माँ है उससे विवाह करना पाप है. देवी ने उसे जला कर राख बना दिया. फिर विष्णु को पैदा किया. उसके साथ भी वही हुआ. अंत में देवी ने शिव पैदा किया. शिव के सामने भी वही प्रस्ताव रखा गया. शिव बोला अपने भाईयों के बिना शादी कैसे करूं. देवी ने उन दोनों को दुबारा पैदा (जिंदा) कर दिया तथा साथ में दो लड़कियां भी पैदा कर दीं. तीनों भाईयों की शादी तीनों स्त्रियों सें हो गई.

यहां स्थिति बड़ी विचित्र हो गई है. एक तरफ तो त्रिदेव आपस में मांजाए भाई हैं दूसरी तरफ एक शिव का दादा ससुर तो दूसरा साला है. साथ में वे देवी के पुत्र हैं उन तीनों में सें एक ने तो अपनी माँ सें तथा दो ने माँ द्वारा पैदा दो बेटियों सें विवाह (यौन सम्बंध) बनाया. इस तरह उन में सें एक तो ससुर हुआ बाकी दो उसके जंवाई हुए. एक ही माँ के जाए पुत्र आपस में ससुर जंवाई आज के समय में हो नहीं सकते.

एक और बात बड़ी अजीब सी है कि वैदिक काल में त्रिदेव ही राक्षसों और अन्य दुश्मनों सें टक्कर लेते थे लेकिन जब सें देवियां पैदा हुई यह त्रिदेव खुडेलाईन लगा दिया गया. हो सकता है वे बुढया गये हों. हाथ पांवों की ताकत जवाब दे गई हो. पुराणों में देवियां घढ़ दी गईं. तब सें वे ही दुश्मनों सें लड़ रही हैं. त्रिदेव चूड़ियां पहन कर घर के अंदर बैठे हैं.

एक और अचरज वाली बात यह है कि केवल शिव की बीवियां ही लड़ने मरने को गईं. उसकी दादी सास सरस्वती या सालेहज (साले की बीवी) लक्ष्मी कभी किसी सें लड़ने नहीं गई. बाबा साहिब ने भी इस बात पर हैरानी प्रकट की है. (पहेली 11) लेकिन इस बात का उत्तर किसी के पास नहीं है. इसका बस इतना ही उत्तर हो सकता है कि चतुर दुकानदारों की तरह ब्राह्मण नित्य नये ब्राण्ड के देव देवियां लेकर आते रहे हैं. जैसे ही एक ब्राण्ड का देव कमाई करना बन्द करता है उसे उठा कर कचरे/स्टोर में डाल दिया जाता है तथा उसकी जगह नया ब्राण्ड रख दिया जाता है.

एक बात और भी है कि कई देवियां इस त्रिदेव ने अपनी शक्ति सें "सांझे" में पैदा की हैं. बाबा साहिब पूछते हैं कि ऐसे कायर देवों के पास शक्ति कहां सें आई कि वे शक्ति की देवी को ही पैदा कर दें.. अगर उनमें शक्ति थी तो वे

स्वयं क्यों नहीं लड़े! अगर उनमें स्वयं में लड़ने की शक्ति नहीं थी तो देवियों को कहां सें दे दी. बाबा साहिब इसे देवों का अपमान मानते हैं (पहेली 12)

अवतार मात्र भारत में, और भारत में भी उत्तर प्रदेश तक ही सीमित रहे हैं. क्या उत्तर प्रदेश के बाहर भगवान की धरती नहीं है. या यू पी सें बाहर धर्म की ग्लानि नहीं होती?

दशरथ के चारों बेटे विश्णु के अवतार बताए जाते हैं. रामायण के अनुसार राम विश्णु का आधा भाग था, लक्ष्मण एक चौथाई भाग था तथा भरत व शत्रुघ्न शेश बचे एक चौथाई का आधा आधा भाग थे. इस तरह पूरे विश्णु के यह चारों चार भाग थे. लेकिन विश्णु के आधे भाग राम को परशुराम सें टक्कर लेनी पड़ी थी. परशुराम पूरे विश्णु का पूरा अवतार था. तो एक ही भगवान के दो गुणा अवतार पाँच प्राणियों में पैदा हो गए. और सबसें हैरानी की बात तो यह है कि एक ही भगवान के दो अवतार आपस में लड़ मरे. और फिर पूरे विश्णु वाला (परशु) आधे विश्णु वाले अवतार (राम) सें हार गया!! बड़ी अनहोनी बात है कि एक विश्णु अपने सें दोगुना में पैदा हो गया. फिर एक पूरा विश्णु, दूसरे आधे विश्णु सें भिड़ गया और हार भी गया. बड़ा अजीब भगवान है ब्राह्मणों का. उसे पता ही नहीं है कि वह अपने आप सें ही लड़ रहा है!! फिर सबसें पहले विश्णु का एक चौथाई (लक्ष्मण) आत्महत्या कर लेता है, फिर आधा (राम) सरयू में डूब मरता है. भरत और शत्रुघ्न कब मरे पता नहीं. परशु अभी तक नहीं मरा, ऐसा दावा किया जाता है. सो विश्णु ऐसे हिस्सों में मर कर वापिस आया!! यह गोरख धन्धा सभी की समझ सें बाहर है.

लक्ष्मण एक चौथई विश्णु है और साथ में पूरा शेशनाग है. एक ही शरीर में भिन्न भिन्न डेढ भगवान? सारी उम्र तो विश्णु शेशनाग पर पसरा रहता है. अब वह आधा पूरे शेशनाग के साथ लक्ष्मण के शरीर में पैदा हो गया. ये डेढ भगवान लक्ष्मण के शरीर में कहां और कैसे रहे, अनबूझ पहेली है.

ब्राह्मणों का भगवान स्त्री रूप में, वह भी एक वेश्या (मोहिनी) के रूप में अवतार लेता है. वह बालिका बन कर पैदा नहीं होता बल्कि ''पूरी जवान'' ही पैदा हो जाता है. फिर उसका रूप देख कर दैत्य, दानव, राक्षस कोई भी विचलित नहीं हुआ. मात्र ब्राह्मणों का वह भगवान जिसने कामदेव को जीत लिया बताते हैं, उस मोहिनी के पीछे भाग लिया. यह तो शुक्र हुआ कि भागते भागते शिव का वीर्य स्खलित हो गया वर्ना विश्णु तो शिव के कई बच्चों की माँ बन गया होता!! कितनी जोरदार धार्मिक कथा बन जाती अगर एक भगवान ने दूसरे भगवान के बच्चे पैदा कर दिये होते!! लानत है ऐसे भगवानों के!! और लानत है उनके जो ऐसों को भगवान बताते हैं.!!

इस अवतार लेने का झूठ तो इस बात सें ही प्रकट हो जाता है कि जहां उपरोक्त श्लोक (4.7) में तो कृश्ण कहता है कि धर्म की रक्षा करने के लिए मैं अर्थात भगवान अवतार लेता हूँ वहीं श्लोक में वह कहता है कि वह तथा अर्जुन दोनों क्रमशः नारायण और नर के अवतार हैं. इस तरह गीता रचियता स्वयं अपनी बात का खण्डन कर देता है कि भगवान ही ब्राह्मण–धर्म की रक्षा के लिए अवतार लेता है. वैसे दोनों को ब्राह्मणवाद के नर नारायण का अवतार बता कर गीता रचियता ने सत्य ही बोला है क्योंकि कृश्ण ने तो जूए की सम्पत्ति के लिए कौरवों और पांडवों में युद्ध करवा कर तथा राधा व गोपियों के साथ हवस का खेल खेलकर ब्राह्मण–धर्म की पुर्नस्थापना कर दी. वैसे ही अर्जुन ने धोखाधड़ी सें अपने सगे संबधियों को मार कर अपने अवतार होने का प्रमाण दे दिया था.

गीता (2.1) में कृश्ण को मधु–सूदन अर्थात मधु को मारने वाला कहा गया है. जबकि भागवत आदि पुराणों में मधु की हत्या ब्राह्मणों की ''माता'' ने की थी. वास्तव में ब्राह्मण–ग्रन्थ हत्याओं के किस्सों सें ही भरे पड़े हैं. किसने किस को मारा, कोई ध्यान रख ही नहीं सकता. कसाई भी इतने जानवर नहीं मार पाता होगा जितने प्राणी ब्राह्मणों का प्रत्येक देवी देवता मार देता था.

तब भगवान क्यों नहीं आया जब • • • •

1. 1018 ईस्वी में महमूद गजनवी ने मथुरा तथा वृंदावन के मंदिरों और मूर्तियों को तोड़ा. वह मंदिरों में सें 30 मन सोना तथा हीरे लूट कर ले गया. (पंजाब केसरी 26.11.2000 में प्रकाशित सत महाजन का लेख ''चार शाही लुटेरों की कहानी'') ब्राह्मणों का भगवान कहे जाने वाला कृश्ण अपनी कर्मस्थली अथवा ऐयाशगाह को बचाने भी न आया.
2. उग्रवाद के समय पंजाब तथा कश्मीर में 53000 निर्दोश लोग मौत के घाट उतारे गए. यह कत्लेआम 10 साल सें अधिक चलता रहा. लेकिन भगवान का अवतार न हुआ. क्या मात्र जुआरियों के धन के लिए अवतार लेना ''धर्मस्य ग्लानि" है?
3. सम्राट अशोक के राज्य की समाप्ति कर जब ब्राह्मणों ने सत्ता हथियाई, विदेशियों ने भारत पर पर अधिकार जमाना शुरू कर दिया. तब सें लेकर 1947 तक हम भारतीय विदेशियों की गुलामी करते रहे. हर प्रकार के हमलावरों ने न केवल हमारा धन माल लूटा, मंदिर तोड़े बल्कि हर कोई हमलावर हमारी बहन बेटियों को भी अगवा करके ले गया. बड़ी विडम्बना है कि कृश्ण को जुआरियों द्वारा जूए में हारे धन के लिए किए गए युद्ध में तो धर्म की ग्लानि नजर आई मगर जब जीती जागती मासूम लड़कियों को लुटेरे हांक ले गए, तो उसे धर्म की हानि नहीं सूझी. जलियांवाले बाग में जब हजारों निरपराध लोग कत्ल किए गए तब भी उसे धर्म की ग्लानि नजर न आई. नील की खातिर अंग्रेजों ने

भारतीयों पर जो अत्याचार किए उसे सुन कर ही रोंगटे खड़े हो जाते हैं. मगर ब्राह्मणों के किसी भगवान को उन्हें बचाने की फुर्सत न थी. और तो और अवतार का शोशा इजाद करने वाले ब्राह्मणों पर गुलामों के भी गुलाम भी राज कर गए तथा उनकी बहन बेटियों को अगवा करके ले गये मगर उनका भगवान तब भी न आया. अकबर ने ब्राह्मणों और क्षत्रियों की बेटियों सें अपने हरम भर लिए, तब भी उनका भगवान न आया.

4. भुवनेश्वर के लिंगराज मंदिर के दरवाजे तोड़ कर लुटेरे 8.5 किलो चांदी तथा सोना लूट ले गये. (द हिन्दू 7.11. 2001) माना जा सकता है कि यह तो छोटी मोटी घटना थी मगर सोमनाथ का मंदिर तो 17 बार लूटा गया. तब भी भगवान न अवतरित हुआ. मोहिनी के पीछे भागने के लिए तो उनका भगवान साक्षात ही आ गया था. ऐसा नहीं है कि पुराने समय में लोग इन ब्राह्मणों की नीयत पर शक नहीं करते थे. पहले भी लोग इन की नीयत पर शक करते थे. इसलिए इन्होंने अपने ग्रन्थों में यह बात घुसेड़ी "धर्मस्य तत्वं निहितं गुह्यम" अर्थात धर्म के तत्व बेहद सीक्रेट हैं. हर किसी को समझाए नहीं जा सकते. अतः जब भी किसी ने शंका जाहिर की, उसके सामने ब्राह्मण यह श्लोक दोहरा देते थे. इसलिए ब्राह्मणों और उनके भगवानों की नजर में मोहिनी के पीछे भागने में तो "धर्म" है मगर मासूमों की इज्जत बचाने में कोई धर्म नहीं है.

5. पिछले दिनों में रघुनाथ मन्दिर जम्मू तथा अक्षरधाम मन्दिर गुजरात में आतंकी हमले हुए जिसमें पचासों श्रद्धालू मारे गए. कोई भगवान बचाने न आया. जो पुलिस वाले बचाने आए उन में सें भी कई शहीद हुए. पता नहीं अर्जुन के जूए में हारे धन में ऐसा क्या था कि मात्र उसी में ब्राह्मणों के भगवान को धर्म दिखाई दिया. 04.11.2005

6. ईटीवी राजस्थान अक्तूबर 2005 के समाचार अनुसार राजस्थान के एक प्रसिद्ध मन्दिर में एक नाबालिग लड़की सें चार लोगों द्वारा बलात्कार किया गया. लेकिन मन्दिर के अंदर भी भगवान उस अबला को बचाने न आया.

ब्राह्मण–धर्म के अवतार

सबसें महत्वपूर्ण प्रश्न यही है, जैसा कि गीता में कहा गया है, क्या ब्राह्मण-धर्म के अवतार वास्तव में ऐसे ही थे? अर्थात जो भी अवतार हुए क्या उनका आचरण गीता में बताए गए सिद्धांत के अनुरूप ही रहा है ? इस प्रश्न के उत्तर के लिए यह जानना जरूरी है कि ब्राह्मण–धर्म ने कुल कितने अवतार पैदा किये हैं और उनका उद्देश्य क्या था और आचरण कैसा रहा है.

ब्राह्मण–धर्म के भिन्न भिन्न ग्रन्थों ने अवतारों की भिन्न भिन्न सूचियां दी हैं जो कि इस प्रकार सें हैं.

क्र. सं.	हरिवंश पुराण	नारायणी आख्यान	वाराह पुराण	वायु पुराण	भागवत पुराण
1.	वाराह (सूअर)	हंस	कूर्म (कछुआ)	नरसिंह	सनत्कुमार
2.	नरसिंह	कूर्म (कछुआ)	मछली	वामन (बौना)	वाराह (सूअर)
3.	वामन (बौना)	मछली	वाराह (सूअर)	वाराह (सूअर)	नरनारायण
4.	परशुराम	वाराह (सूअर)	नरसिंह	कूर्म (कछुआ)	कपिल
5.	राम	नरसिंह	वामन (बौना)	संग्राम (लड़ाई)	दतात्रेय
6.	कृश्ण	वामन (बौना)	परशुराम	आदिवक	यज्ञ
7.		परशुराम	राम	त्रिपुरारि	ऋशभ (सांड)
8.		राम	कृश्ण	अंधकार	पृथि
9.		कृश्ण	बुद्ध	ध्वज (झंडा)	मछली
10.		कल्कि	कल्कि	वर्त	कूर्म (कछुआ)
11.				हलाहल (जहर)	धन्वंतरि
12.				कोलाहल (शोर)	मोहिनी
13.					नरसिंह
14.					वामन (बौना)
15.					परशुराम
16.					वेदव्यास
17.					नरदेव
18.					राम
19.					कृश्ण
20.					बुद्ध
21.					कल्कि

इन सूचियों को प्रथम दृश्टि सें देखने पर ही इनकी सत्यता का अंदाजा हो जाता है. हर ग्रन्थकार अपनी अपनी हांक रहा है. जैसे स्पर्धा के चलते एक दुकानदार दूसरे सें ज्यादा वैरायटी का सामान अपनी दुकान पर रखता है कि कहीं ग्राहक वापिस न चला जाए, वैसी ही इन पुराणकारों में होड़ लगी हुई लगती है. हर कोई अपने पुराण में दूसरे सें बढ़ कर अवतार बना रहा है. 21 तक की वैरायटी तो बन चुकी. देखें अभी और कितने बनने हैं. कहा जाता हे कि मानव जीवन सर्वश्रेश्ठ होता है. लेकिन ब्राह्मणों पर पता नहीं क्या भूत सवार हुआ कि उन्होंने अपने भगवान को कछुआ, मछली, सांड और यहां तक कि नित्य गंदगी में मूँह मारने वाला सूअर तक बना दिया. लड़ाई, झण्डा एवं शोर बना दिया. ऐसा रूप धारण करके इनके भगवानों ने ऐसा क्या किया है कि जो भगवान मानव रूप में नहीं कर सकता था? न केवल इन सूचियों में अंतर है बल्कि कौन किसका अवतार है इस बारे में भी ग्रन्थकारों ने अपनी अपनी हांकी है. जिस ग्रन्थकार को जो पसन्द आ गया उसी का नाम छाप दिया. न केवल इनकी सूचियों में अंतर है बल्कि उनके उद्देश्यों में भी अंतर है. ऐसा लगता है कि ग्रन्थकार के सोम अथवा भांग कुछ ज्यादा चढ़ गई और वह लोर में उसे जैसे ख्याल आते रहे वह वैसा लिखता रहा.

हरिवंश के अनुसार कुल में कुल 6 अवतार हुये हैं. वाराह पुराण तथा नारायणी आख्यान के अनुसार 10–10 अवतार हुए हैं. वायु पुराण के अनुसार 12 तो भागवत के अनुसार 21 अवतार हुए हैं. गीता 2 ही अवतारों की बात करती है. गीता ईश्वर के अतिरिक्त मनुश्य के अवतार की भी बात करती है. भगवान तो, मान लेते हैं कि धर्म बचाने आता है लेकिन मनुश्यों की तो धरती पर भरमार है. फिर भगवान को अपने साथ आदम के अवतार की क्या आवश्यकता है! कृश्ण को अपने साथ अर्जुन को लाने की क्या आवश्यकता थी. पृथ्वी पर उसे बहुतेरे जुआरी मिल जाते जो माल के लिए, बिना गीता ज्ञान सुने ही लड़ने मरने को तैयार हो जाते! लड़ाई के लिए तैयार करने के लिए कृश्ण को 18 अध्याय लम्बी बकवाद् न करनी पड़ती.

- वायु पुराण के अनुसार राम कृश्ण परशु आदि के अवतार हुए ही नहीं हैं.
- भागवत में अवतरित सनतकुमार कपिल आदि को अन्य ब्राह्मण ग्रन्थ अवतार नहीं मानते.
- भागवत के अनुसार वेश्या मोहिनी भी भगवान का अवतार है. हो सकता है कल को राधा भी अवतार बना दी जाए.

चाहे सभी ग्रन्थ अवतारों की अपनी अपनी सूचियां देते हैं मगर एक बात पर सभी सहमत हैं कि कोई भी अवतार वैध तरीके सें पैदा नहीं हुआ है. कोई तो नाजायज बाप की औलाद है तो कोई बिना माँ के ही जन्मा हुआ है.

क्या बुद्ध कभी ब्राह्मणों के अवतार हो सकते हैं?

उपरोक्त सूचियों में कुल 30 अवतारों के नाम हैं. जिनमें सें एक नाम ''बुद्ध'' भी है. ''बुद्ध'' का नाम अपने पतित अवतारों के साथ जोड़ना उनकी सोची समझी एवं धूर्त चाल का नतीजा है. भगवन बुद्ध पहले ऐसे पुरूश थे जिन्होंने ब्राह्मणवाद के विरूद्ध सफलता पूर्वक आवाज उठाई थी और जिन्होंने भारत में सें ब्राह्मणों द्वारा धर्म के नाम पर किए जा रहे अनाचार को उखाड़ फैंका था. लेकिन ब्राह्मणों ने अपनी साम, दाम, दंड, भेद की नीति अपनाते हुए, भारत भूमि सें बौद्धों को समाप्त कर दिया. जहां एक ओर अशोक के पौत्र वृहदर्थ को मारने के बाद ब्राह्मणों ने राजसता पर कब्जा करके प्रत्येक भिक्षु के सिर पर सौ दीनारों का ईनाम घेशित कर दिया, वहीं अपनी ''साम'' की नीति अपनाते हुए भगवन बुद्ध को अवतार घोशित कर ''अपना ही आदमी'' बना दिया.

लेकिन नकली काँच के टुकड़ों में हीरा कब तक छुपा रह सकता है. आज कोई भी ब्राह्मण कथाकार जब अपने अवतारों की कथा सुनाता है तो भगवन बुद्ध का नाम नहीं लेता क्योंकि वह जानता है कि जिस दिन उसने भगवन बुद्ध का नाम लिया, उनकी शिक्षाएं बताईं तो ब्राह्मणवाद का बंटाधार हो जाएगा. असली हीरे की चमक देखते ही लोग इन नकली काँच के टुकड़ों को कूड़े में फैंक देंगे. वैसे भी बुद्ध ने ब्राह्मणों के अवतारों जैसा कोई ''कारनामा'' नहीं किया. न उन्होंने अपनी मामी संग रास रचाया, न गर्भवती पत्नि को जंगली जानवरों के सामने फेंका, न मोहिनी के पीछे भाग कर सोने चांदी की खाने बनाई. अतः उनकी ऐसी कोई ''कथा'' है ही नहीं जो इन के अवतारों के साथ सुनाई जा सके.

''बुद्ध'' और ब्राह्मण–धर्म के अवतारों में कहीं कोई तुलना भी नहीं हो सकती. सिद्धार्थ ने घायल हंस को बचाया तो राम ने निरीह पशु मार मार कर जंगल में दहशत फैला दी. सिद्धार्थ ने अपने परिवार को कष्टों सें बचाने के लिए देश निकाला स्वीकार कर लिया वहीं राम अपने भाई भरत के पीछे सें उसकी गद्दी हड़पने की साजिश रची. सिद्धार्थ ''बुद्ध'' बन कर जब अपने पुराने घर आते हैं और यशोधरा उन्हें मिलती है तो बुद्ध उन्हें ''बहन'' कह कर बुलाते हैं. दूसरी ओर कृश्ण और ब्रह्मा ऐसे अवतार हैं जिन्होंने गैरों की तो क्या अपनी माँ, बहन, बेटियों को भी अपनी हवस का शिकार बनाया. सिद्धार्थ बुद्धत्व प्राप्त करने के लिए ''मार'' अर्थात काम वासना को मन सें हटाते हैं जबकि ब्राह्मण–धर्म

के भगवानों का सारा जीवन ही काम वासना के चक्कर में बीता है. हम में सें कोई भी ''बुद्ध" बन सकता है. उसके लिए दस पारमिताएं ग्रहण करनी पड़ती हैं. ब्राह्मणों के भगवानों के कारनामे कोई भी साधारण प्राणी करने की सोच भी नहीं सकता. हम में सें कितने लोग कृशण की तरह अपनी सगी मामी सें भोग कर सकते हैं! कितने लोग राम की तरह पूरी दिनों की गर्भवती पत्नि को जंगली जानवरों के आगे डाल सकते हैं! कितने लोग परशु की तरह गर्भवती स्त्रियों के पेट चीर कर उन में पल रहे बच्चे काट सकते हैं और कितने लोग विश्णु की तरह अपने विरोधी की पत्नि सें बलात्कार कर सकते हैं अथवा ब्रह्मा की तरह अपनी बेटी सें ही बलात्कार कर सकते है!! सूचि अंतहीन है.

इसके विपरीत ''बुद्ध'' बनने के लिए 10 पारमिताएं यानि अवस्थाएं हैं जो हर बोधिसत्व (बुद्ध बनने का प्रयास करने वाले व्यक्ति) को ग्रहण करनी पड़ती हैं. यह दस पारमिताएं इस प्रकार सें हैं:

1. मुदिता : जैसे सुनार मैल हटा कर सोने चांदी को शुद्ध करता है वैसे ही बोधिसत्व अपने पहले चरण में अपने मन सें मैल हटाते हैं. उनका मन बादलों सें मुक्त चंद्रमा की तरह संसार को आलोकित करता है.

2. विमला : दूसरे चरण में बोधिसत्व काम वासना सें मुक्त हो जाते हैं. उनका मन सब के प्रति करूणा भाव सें भरा होता है.

3. प्रभा : तीसरे चरण में बोधिसत्व अपनी प्रज्ञा को दर्पण की तरह साफ कर लेते हैं. आम भाशा में प्रज्ञा का अर्थ है भले बुरे, सत्य असत्य का ज्ञान होना. इस ज्ञान को बहुजन के हित में प्रयोग करते हैं.

4. अर्चिश्मती : चौथे चरण में बोधिसत्व अपना घ्यान पंचशील तथा अश्टांगिक मार्ग पर लगाते हैं. पंचशील अर्थात पांच प्रकार के शील इस तरह सें हैं

    1. किसी भी जीव की हिंसा न करना.
    2. दूसरों की वस्तु पर नीयत न डिगाना.
    3. व्यभिचार न करना.
    4. असत्य न कहना.
    5. नशीली चीजों का सेवन न करना.

5. सुर्दुजयाः इस चरण में बोधिसत्व सापेक्ष और निरपेक्ष के सम्बन्ध को अच्छी तरह सें जान लेते हैं. साधारण भाशा में सापेक्ष का अर्थ है कि कौन सा काम कब, कहां करना उचित है और कब, कहां अनुचित है. निरपेक्ष का अर्थ है वह काम जो बिना बाहरी प्रभाव सें उचित अथवा अनुचित है. चोरी कभी भी की जाए, पाप है. अतः चोरी निरपेक्ष पाप है.

6. अभिमुखी : इस चरण में बोधिसत्व चीजों के विकास उनके बारह निदानों को पूरी तरह जान लेते हैं.

7. दूरगमा : इस चरण में बोधिसत्व देश, काल के बन्धनों सें परे हो जाते हैं. किसी सें कोई निजि सम्बन्ध नहीं रह जाता है. उनके लिए सारा संसार एक हो जाता है. वह लोगों को धर्म इस प्रकार सें समझाते है कि सब की समझ में आ जाए.

8. अचल : इस चरण में बोधिसत्व को अच्छे काम करने के लिए प्रयत्न नहीं करना पड़ता बल्कि उनसे सही काम अपने आप होने लग जाते हैं. उनसें गलत काम होता ही नहीं है.

9. साधुमतिः इस चरण में बोधिसत्व सब प्रकार के कार्यों और उनकी पद्धतियों में पारंगत हो जाते हैं. सब दिशाओं को जीत लेते हैं. समय की सीमा को लांघ जाते हैं.

10. धर्म मेधाः उपरोक्त सभी पारमिताओं को ग्रहण कर लेने के बाद बोधिसत्व 'धर्म–मेधा' बन जाते हैं. तब उनको किसी गुरू अथवा सहारे की आवश्यकता शेश नहीं रह जाती.

अष्टांगिक अर्थात आठ अंगों वाला मार्ग इस प्रकार सें है:

1 **सम्यक दृश्टि** : मन सें अविद्या का नाश करना, पाखण्ड पूर्ण जीवन का त्याग करना. किसी भी काम अथवा चीज को करने सें पहले उसका भला बुरा जांचना. अपने मन, वचन तथा कर्म को सब के प्रति बिना भेद भाव वाला बनाना.

2 **सम्यक संकल्प**: यह ठान लेना कि सब अच्छा ही अच्छा करना है. किसी का बुरा नहीं करना. मन, वचन तथा कर्म सें सही करने का संकल्प लेना. बुरी चीजों को त्यागने का संकल्प करना.

3 **सम्यक वाणी** : सत्य बोलना, चुगली न करना, अफवाह न फैलाना, गाली न निकालना. मूर्खतापूर्ण और तर्कहीन बातें न करना. डींगें न मारना.

4 **सम्यक कर्मांत** : अपना कोई भी छोटा बड़ा काम करते समय यह ध्यान रखना कि इस काम सें किसी और का नुकसान अहित न हो.

5 **सम्यक आजीविका** : अपनी जीविका कमानें के लिए भले काम करें. दूसरों को हानि पंहुचा कर धन न कमाएं.

6 **सम्यक व्यायाम** : अच्छाई अथवा भलाई के मार्ग पर चलना और लगातार चलना. जैसे शरीर को स्वस्थ रखने के लिए लगातार कसरत करने की आवश्यकता होती है वैसे ही जीवन को नैतिक बनाये रखने के लिए भी लगातार अच्छे काम (सम्यक व्यायाम) करने की आवश्यकता होती है.

7 **सम्यक स्मृति** : इस बात के प्रति सचेत रहना और इस बात को हमेशा याद रखना कि मन, वचन तथा कर्म सें किसी का बुरा नहीं करना है.

8 **सम्यक समाधि**: सत्य के मार्ग पर चलना बहुत कठिन होता है. मन को लोभ, द्वेश, आलस्य, संदेह की भावनाएं घेरे रहती हैं. इन भावनाओं को दूर करने के लिए समाधि की आवश्यकता होती है. सम्यक समाधि सें मन एकाग्र होता है तथा व्यक्ति को सही रास्ते सें भटकने नहीं देता.

इन पारमिताओं सें बोधिसत्व को ''बुद्धत्व'' प्राप्त होता है. लेकिन ब्राह्मणों का भगवान बनने के लिए नैतिकता की कहीं कोई कसौटी नहीं है. सबसें बड़ी बात ब्राह्मण–धर्म के किसी भी भगवान ने नैतिकता का आचरण कभी किया ही नहीं. सबके सब मारने, काटने, लूटने तथा बलात्कार व्यभिचार में डूबे रहे. इन पारमिताओं की कसौटी पर अगर ब्राह्मण अवतारों को परखा जाए तो हरेक अवतार निम्न सें निम्नतर स्तर का पाया जाएगा. बुद्ध के सामने सब के सब अवतार वैसे ही हैं जैसे हंस के सामने गन्दी नाली के कीड़े! बुद्ध और ब्राह्मण अवतारों का कहीं कोई मेल ही नहीं है.

ब्राह्मणों के अवतारों के आचरण की समीक्षा करने सें पहले उन भगवानों का चरित्र जानना भी आवश्यक है जो अवतार लेते हैं अथवा जिन का अवतार होता है. उपरोक्त सूचि के अनुसार सारे अवतार ब्रह्मा, विश्णु और शिव के हुए हैं.

ब्रह्मा : ब्रह्मा के चरित्र का वर्णन अध्याय 5 में पहले ही किया जा चुका है. अगर ब्राह्मणों की बात सत्य मान ली जाए कि ब्रह्मा उनका आदि पुरूश है तथा सभी आर्य लोग उसी के वंशज हैं तो निश्चित रूप में वे सब ''खताना ऊत'' की पैदावार हैं क्योंकि :

1. ब्रह्मा ने अपनी बेटी सरस्वती सें बलात्कार करके नारद को पैदा किया. उसके जैसा चुगलखोर न कभी हुआ न कभी पैदा होगा. आज के समय किसी को नारद कहना उसे गाली देना जैसा है.
2. अन्य बेटी पोतियों सें संभोग करके मनु को पैदा किया जिसकी मनुस्मृति के जातिवाद के जहर को हम भारतीय आज तक झेल रहे हैं.
3. ब्रह्मा ने अपनी बेटी पोतियां ही नहीं भोगी बल्कि दुल्हन बनी पार्वती पर भी नीयत खराब कर ली थी. यह तो शुक्र है कि पार्वती की रक्षा करने शिव अपना त्रिशूल लिए वहीं मौजूद था वर्ना सरस्वती की तरह पार्वती सें भी वह कितने मनु या नारद पैदा करता, आज ब्राह्मण ग्रन्थ इन कथाओं सें भरे मिलते. यहां ध्यान देने वाली बात है कि ब्रह्मा रिश्ते में शिव का दादा–ससुर लगता था. लेकिन जो आदमी अपनी बेटी और पोती को भोग सकता है वह पौत्र–जंवाई की वधु पर नीयत खराब कर ले तो कौन सी बड़ी अनहोनी बात हो गई.

सीधी सी बात है कि अगर ब्रह्मा भगवान होकर ऐसे कारनामे करता है तो वह अवतार लेकर वह कौन से धर्म की रक्षा करेगा, किस प्रकार के ''साधुओं" की मदद करेगा, इसकी हर कोई सहज कल्पना कर सकता है.

विश्णु: विश्णु के चरित्र का वर्णन अध्याय 5 में पहले ही किया जा चुका है. सब सें अधिक अवतार इसी के नाम हैं. इसकी अपनी कहानी बहुत कम है. इसने अधिकतर करतूतें अवतार लेकर ही की हैं. अपने जीवन में इसने दो ऐसी करतूतें की हैं जो हर बड़ा गुण्डा अपना काम साधने के लिए प्रयोग में लाता है. मानव इतिहास में अपना काम साधने के लिए ''स्त्री'' का प्रयोग सबसें पहले विश्णु ने शुरू किया था. इस अभूतपूर्व देन के लिए गुण्डे सदा विश्णु के ऋणी रहेंगे.

1. सभी यह कथा जानते हैं कि देवों और असुरों ने मिल कर समुद्र मंथन किया. उसमें सें अनेकों वस्तुएं निकलीं. असुरों के हिस्से में अमृत निकला. नैतिकता का तकाजा था कि उन्हें अमृत दे दिया जाता. लेकिन नैतिकता और देवों का तो दूर दूर का भी श्तिा न था. शराफत सें मान जाना तो देवों का काम ही न था. विश्णु के दिमाग में धोखे का कीड़ा कुलबुलाया. अमृत हासिल करने के लिए उसने सुन्दर वेश्या का भेश बनाया और अमृत का घड़ा उठा कर भाग लिया. असुर बेचारे अभी कुछ समझ ही न पाये थे कि काम को मारने का दावा करने वाला शिव कामांध होकर वेश्या बने विश्णु के पीछे भाग लिया. विश्णु को भूतों के राजा शिव सें अपनी इज्जत बचानी मुश्किल हो गई. इसी छीना झपटी में अमृत भी छलक गया. साथ में ही शिव का वीर्य पतन हो गया वर्ना किस्सा कुछ और ही बन जाता.
2. पहली बार तो विश्णु स्वयं स्त्री बन कर आ गया लेकिन अगली बार उसने वह महापाप किया जिसकी मिसाल किसी अन्य धर्म में नहीं मिलती. भारत भूमि पर असुर सम्राट जालंधर का राज्य था. सती वृन्दा उनकी पत्नि थी. पाँच सतियों में एक नाम उनका भी गिना जाता है. महारानी वृन्दा अपने पति की अंतरंग मित्र, सलाहकार और शक्ति थीं. उनके राज्य में सब ओर अमन शांति थी. पराये सामान अथवा पराई स्त्री की ओर कोई आँख उठा कर भी न देख सकता था. देवों और ब्राह्मणों की ऐयाशी बन्द हो गई थी. तब उन्होंने एक ऐसी साजिश रची जिसके बारे में किसी ने

पहले कल्पना भी न की थी. विश्णु ने वृन्दा सें बलात्कार करने की कुत्सित योजना बताई जिसे सुन कर सभी देव और ब्राह्मण अत्यंत खुश हुए.

अपनी कुत्सित योजना को पूरी करने के लिए विश्णु ने जैसे वेश्या मोहिनी का वेश धारण किया था वैसे ही उसने सम्राट जालंधर जैसा वेश बनाया और उसने वृन्दा की इज्जत लूट ली. वृन्दा इस आघात को सहन नहीं कर पाई और उहोंने आत्महत्या कर ली. मरने सें पहले उन्होंने विश्णु को श्राप दिया कि उसका मूंह काला हो जाए. इसी कारण राम कृश्ण आदि अवतार अपना उसका मूँह काला लेकर पैदा हुए. यहां तक कि आज तक अनेक मन्दिरों में विश्णु भी काले मूँह वाला है. **बलात्कारियों और चोरों का मूँह काला करने की परिपाटी तभी सें हमारे समाज का अंग बन गई है.** वृन्दा की जहां अस्थियां डाली गईं वहां तुलसी का पौधा उग आया. आज हिन्दु लोग उस तुलसी के पते तोड़ कर उसी बलात्कारी विश्णु के चरणें में चढातें हैं!! एक पल के लिए सोचें कि जो हृदय विदारक घटना वृन्दा के साथ हुई अगर हमारी बहन बेटी के साथ ऐसी हुई होती तो!! तो क्या हम उसके बलात्कारी के चरणों में हम हमारी बहन बेटी की समाधि पर उगे फूल चढ़ाते!! हर बार जब भी कोई तुलसी की पत्तियां तोड़ कर बलात्कारी विश्णु के चरणों में चढ़ाता है तो वृन्दा की आत्मा को लगता होगा कि जैसे फिर सें किसी ने उसके फटे वस्त्र उतार कर उसे विश्णु के आगे फैंक दिया है!! विश्णु ने तो उसके शरीर सें ही बलात्कार किया था, हम तो हर रोज उसकी आत्मा को ही विश्णु के आगे बलात्कार के लिए भेंट कर देते हैं. उसकी आत्मा हर रोज़ बलात्कार सें चीत्कार करती होगी! काश हम उनकी चीत्कार सुन पाते!!

इस तरह विश्णु को आदि–गुण्डा भी कहा जा सकता है क्योंकि उसने ही यह पाठ पढ़ाया है कि अपना काम निकालने के लिए 'स्त्री' का उपभोग कैसे किया जाए. उसके कृत्यों के अनुसार या तो मोहिनी के रूप में स्त्री भेंट कर दो अथवा वृन्दा के रूप में भेंट ले लो. दोनों ही हालातों में सफलता मिलेगी! हम आम लोगों में अभी तक बुद्ध और तीर्थंकर की शिक्षाओं का असर बाकी है इसलिए हम ऐसे कुत्सित काम नहीं करते वर्ना विश्णु की बात मान लेते तो आज कोई भी स्त्री सलामत न रहती. हर स्त्री को मोहिनी अथवा वृन्दा में सें एक तो बना ही दिया जाता!!

अभी कुछ समय पहले ही तहलका काण्ड हुआ था जिसमें एक बहादुर पत्रकार ने उन केन्द्रीय मंत्रियों और उच्च अधिकारियों का पर्दा फाश किया था जिन्होंने सेना के लिए खरीदे गए सामान में रिश्वत खाई थी. उन पत्रकार पर आरोप लगा कि इस काम को करने के लिए उन्होंने वेश्याओं की मदद ली. लगभग सभी अखबारों ने इस बात पर उनकी निन्दा की. कितनी हैरानी की बात है कि वे ही अखबार रोजाना उस विश्णु की स्तुति में कुछ न कुछ छापते रहते हैं जिसने आदि काल में ही स्वयं वेश्या बन कर अपना काम साधा था.

महेश : शिव के चरित्र का वर्णन भी अध्याय 5 में पहले ही किया जा चुका है. त्रिमूर्ति में महेश कहे जाने वाला शिव, शंकर आदि नामों सें भी जाना जाता है. अभी कुछ समय पहले तक शिव मात्र शूद्रों का देवता माना जाता था. तुलसी ने अपनी पुस्त्क रामचरित तक में शिव की निन्दा की है. स्वयं राम के मुख सें कहलवाया है 'सिव पूजक मम द्रोही'. अगर शिव को ऐतिहासिक प्राणी मानें तो वह ब्रह्मा–विश्णु विरोधी गुट का नायक था. अगर इस सिद्धांत को मान लिया जाए कि आर्य बाहर सें आये थे तो शिव यहां भारत में उस समय रहने वाले मूल निवासियों का राजा, देवता अथवा नायक था. पुराणों व अन्य ब्राह्मण ग्रन्थों में वर्णित कथाओं के अनुसार लगभग सभी असुर कहे जाने वाले राजा शिव को अपना नायक अथवा देव मानते थे. शिव और आर्य देवों में कई बार खूनी संघर्श भी हुआ.

ऐसा लगता है कि अन्त में ब्राह्मण देवों ने अपनी साम दाम की नीति का सहारा लिया. दण्ड अथवा लड़ाई में वे सफल न हो पाये थे. अतः उन्होंने साम अथवा समझौते वाला दांव चला. हरि वंश पुराण के अनुसार ब्रह्मा के तीन बेटे–दक्ष मारीचि और धर्म तथा एक बेटी सरस्वती थी. उस सरस्वती सें ब्रह्मा ने तो नारद पैदा किया ही, दक्ष ने भी अपनी बहन के 50 कन्याएं पैदा कर दीं. उन्हीं में सें एक सती नामक कन्या उन्होंने शिव को भेंट कर दी. (शादी का रिवाज आर्यों में था ही नहीं). इस प्रकार ब्रह्मा शिव का दादा ससुर लगा. सती की कथा सभी जानते हैं कि उसके बाप ने जब यज्ञ किया तो शिव को नहीं बुलाया और न ही उसे यज्ञ में चढ़े माल में सें हिस्सा दिया. नतीजा यह रहा कि शिव ने अपने आदमी भेजे और अपने ससुर का यज्ञ नश्ट करवा दिया. यज्ञ में आए अधिकतर देवों व मनुश्यों तथा दक्ष को मार दिया गया. उसके आदमियों ने यज्ञ वेदी में पेशाब तक कर दिया. यज्ञ वेदी में मूत्र करना इस बात का संकेत है कि शिव तथा उसके आदमी यज्ञ को कोई पवित्र अथवा धार्मिक क्रिया नहीं मानते थे. शिव को अपने पक्ष में बनाए रखने के लिए सती के आत्महत्या कर लेने पर दक्ष की दूसरी बेटी उमा शिव को सौंप दी गई.

शिव के ''धार्मिक कृत्य'' अध्याय 5 में दिए जा चुके हैं. ब्राह्मणों ने शिव का ब्राह्मिकरण करते हुए उसके नाम भी कुछ कारनामे जोड़ दिए हैं:

1. राजस्थानी भाशा में एक लोकगीत है जिसे कि ''हरजस'' कहा जाता है. यह गीत अक्सर स्त्रियां उस समय गाती हैं जब घर में किसी के निधन पर रातिजगा (रात भर जाग कर भजन करना) किया जाता है. इस हरजस के अनुसार जब शिव 12 वर्श की तपस्या करके घर लौटा तो 9 वर्श के गणेश ने उसे घर के अंदर नहीं जाने दिया. फलतः शिव ने उसकी गर्दन काट डाली.

इस कथा का सीधा सा अर्थ है शिव गणेश का बाप नहीं था. अगर वह उसका बाप होता तो उसकी गर्दन नहीं काटता. भगवान तो वह हो ही नहीं सकता क्योंकि जब उसे यही पता नहीं चला उसके तपस्या में लीन रहते उसकी पत्नि ने पुत्र पैदा कर लिया है तो उसे शेश त्रिलोक की खबर कहां सें रहेगी! फिर भगवान इतना निर्दयी तो नहीं हो सकता कि एक 9 साल के बच्चें की गर्दन ही काट डाले!!

2. दूसरी कथा मोहिनी बने विश्णु के पीछे कामांध होकर भागने की है. सभ्य समाज की तो बात ही क्या है वेश्यालयों में भी शायद पुरूश इस तरह सें स्त्रियों के पीछे नहीं भागते होंगे जिस तरह शिव कामांध होकर मोहिनी के पीछे भाग लिया था. ऐसा ''भगवान'' अवतार लेकर क्या गुल खिलाएगा, हर कोई सहज कल्पना कर सकता है. शायद उसकी इसी कामेच्छा को पूरी करने के लिए, जब उसने हनुमान के रूप में अवतार लिया था तो राम ने उसे 16 कमसिन कन्याएं भेंट की जिनके गुप्त अंगों पर अभी रोंएं उगना शुरू हुए थे! (बा.रा. उत्तर कांड)

3. तीसरी कथा शिव के गुप्त अंग अर्थात शिव लिंग की पूजा सें सम्बंधित है. कथा है कि एक बार तीनों "भगवान'' यह दावा करने लगे कि वही सबसें बड़ा है. अतः भृगु को इस बात का फैसला करने के लिए जॅज नियुक्त किया गया. वह जब ब्रह्मा के पास गया तो उसने भृगु की सेवा नहीं की. सो भृगु बोला तूने ब्राह्मण की पूजा नहीं की है अतः आज के बाद तेरी भी कोई पूजा नहीं करेगा. तब वह शिव के निवास पर गया. शिव पार्वती के साथ मैथुन में लीन था. उसने भी भृगु की सुध नहीं ली. सो भृगु बोला तू हमेशा लिंग के कामों में लीन रहता है अतः तू लिंग बन जा. अतः शिव योनि सहित लिंग बन गया. विश्णु ने उसकी सेवा कर दी सो उसने उसे भगवान घोशित कर दिया.

इस कथा में कहीं कोई सच्चाई नहीं है. अगर सजा अथवा श्राप के कारण ही अगर शिव को ''लिंग—योनि" बनना पड़ा तो आज हर मंदिर में उसी लिंग की पूजा क्यों होती है? ऐसा मात्र ब्राह्मण धर्म में ही होता है कि किसी को श्राप देकर आदमी सें कुछ और बना दिया जाए और फिर उसके शापित तथा असली दोनों रूपों को पूजा जाए. ''लिंग—योनि" बनने के बाद शिव का जीवन समाप्त क्यों नहीं हो गया? असली शिव मोहिनियों के पीछे भागने के कारनामे करता रहा, ब्राह्मण उसका लिंग पुजवाते रहे!

लिंग पुराण का कथाकार एक और ही कथा बताता है. उसके अनुसार एक बार ब्रह्मा और विश्णु में इस बात को लेकर लड़ाई हो गई कि वही सबसें बड़ा है. वे दोनों लड़ रहे थे कि उन दोनों के बीच वहां एक लिंग आ गया जो कि आकार में बहुत बड़ा था. तय हुआ कि जो उस लिंग का छोर ढूंढ लेगा वही बड़ा कहलायेगा. ब्रह्मा लिंग का ऊपरी छोर ढूंढने निकल पड़ा और विश्णु नीचे वाला छोर ढूंढने निकल पड़ा. दोनों कई साल इसी काम में लगे रहे मगर वे उस लिंग का छोर नहीं ढूंढ पाये. अंत में उन्हे पता चल गया कि यह तो शिव का लिंग था. अतः उन्होंने शिव के उस वृहदाकार लिंग की पूजा की और उन्होंने यह मान लिया कि शिव उन दोनों सें भी बड़ा है.

ऐसा लगता है कि यह कथा मजमा लगा कर सैक्स की दवा बेचने वाले किसी विद्वान डाक्टर द्वारा लिखी गई है क्यों कि वे लोग ही ऐसी ''विद्वता पूर्ण'' बातें करते हैं.

वास्तव में सच्चाई यह है कि ब्राह्मण यज्ञों में जी भर कर ऐय्याशी करते थे. बुद्ध और तीर्थंकर की शिक्षाएं अपना कर लोग यज्ञों को छोड़ चुके थे. ब्राह्मणों की ऐय्याशी बन्द हो चुकी थी. सम्राट अशोक के पौत्र वृहदर्थ की हत्या करके ब्राह्मण सत्ता पर काबिज हुए. उन्होंने यज्ञ फिर सें चालू किये मगर लोगों ने साथ न दिया. तब जैसे चतुर व्यापारी समय के अनुरूप नई नई वस्तुएं लेकर आता है, वैसे ही ब्राह्मणों ने एक बिलकुल ही नई चीज खोज निकाली. उन्होंने अपने भगवान को ही ''लिंग—योनि'' बना डाला. आज भी ब्राह्मण लोगों सें अपने इस लिंग को पुजवाते आ रहे हैं!

जो व्यक्ति चौबीसों घंटे काम वासना में लीन रहता हो उसे भगवान बताना ही पाप है, अधर्म है. विश्व में अनेकों धर्म हैं लेकिन किसी भी अन्य धर्म में "लिंग" भगवान नहीं है. और न ही अन्य किसी धर्म में चौबीसों घंटे काम वासना में लीन रहने वाला भगवान अवतार लेता है!

अन्य कथा उसके द्वारा अग्नि नामक देव के मूंह में अपना वीर्य डालने की घटना है. (स मु 2/50)

कितनी अजीब और शर्म की बात है कि हम लोग ऐसी करतूतें करने वालों को भगवान मानते हैं. अगर यह सब काम भगवान के हैं तो शैतान की तो कोई आवश्यकता ही नहीं है! जब ऐसे भगवान अवतार लेंगे तो वह ऐसे ही गुल खिलायेंगे, इस बात का प्रमाण अवतारों द्वारा किए गये कारनामे हैं. राजस्थानी भाशा में सत्य कहा गया है कि आकड़ा कै तो आकड़ा ही लागींगा. अर्थात आक के तो आक ही लगेंगे, आम नहीं. यह भी सत्य कहा गया है जैसी माटी तैसी पाटी अर्थात जैसी मिट्टी होगी वैसे ही बर्तन बनेंगे!

ब्राह्मणों के इन भगवानों के कारनामे इस प्रकार सें रहे हैं:

1. **वाराह यानि सूअर** : ब्राह्मणों का भगवान सूअर भी है, आश्चर्य नहीं!! तैतरीय संहिता (7.1.5.1)(स.मु. 4.97) के अनुसार पहले जल ही जल था. ब्रह्मा ने सूअर का अवतार लिया और पानी में घुस गया. पानी में सें उसे धरती मिली

जिसे उठा कर वह बाहर ले आया. लेकिन वाराह पुराण वाले को यह कथा कुछ हज़म नहीं हुई. अतः उसने नई कहानी गढ़ी कि एक बार हिरण्याक्ष पृथ्वी को उठा कर पाताल में भाग गया. विश्णु ने अवतार लिया, सूअर बन कर पाताल में गया और धरती को उठा लाया. एक अन्य कथा के अनुसार एक बार ब्रह्मा को छींक आई तो उसकी नाक सें विश्णु सूअर बन कर निकल पड़ा. (दसवीं पहेली पृ.83)

सर्वप्रथम तो जिस जिस ने भी यह कथाएं गढ़ी हैं वह महामूर्ख रहा होगा. उसने सूअर को पानी कीचड़ में लोटते देखा होगा. उसे लगा होगा कि सूअर पानी के भीतर भी रह सकता होगा. सो उसने ब्रह्मा को सूअर बना कर जल में घुसेड़ दिया. दूसरे ब्राह्मण ने सूअर को अपनी थुथनी सें मिट्टी खोदते देखा होगा तो उसने सोचा कि सूअर ऐसे धरती खोदते हुए पाताल तक जा सकता है. सो उसने अपने विश्णु को सूअर बना कर पाताल में भेज दिया. कथाकार के दिमागी दिवालियेपन की झलक इस बात सें भी मिलती है कि उसे इतना तक पता नहीं कि पाताल भी पृथ्वी का ही हिस्सा है. अतः पृथ्वी को उठा कर कोई भी पाताल में नहीं ले जा सकता. वैसे ही जैसे कोई घर को उठाकर छत पर नहीं ले जा सकता वैसे ही धती को उठा क पातल में नहीं ले जाया जा सकता.

खैर इस कथा में कौन से धर्म की ग्लानि हुई थी, कौन से साधु को कष्ट हुआ था, ऐसा कहीं उल्लेख नहीं है. सो गीता का कथन झूठा है कि ईश्वर किसी धर्म को बचाने के लिए अवतार लेता है. वास्तव में यह कथाएं इस बात का सबूत हैं कि ब्राह्मणों के भगवान पशुओं की तरह अपने वर्चस्व की लड़ाई लड़ते थे. इसलिए उनके गुट वालों ने ऐसी कहानियां गढ़नी पड़ी कि उनका भगवान दूसरों सें महान है. एक ने कहा कि उनका भगवान सूअर बन कर जल में सें धरती निकाल कर लाया तो दूसरे ने कथा गढ़ दी कि उनका भगवान सूअर बन कर धरती खोदता हुआ पाताल तक जा पहुंचा. तीसरे ने अपने ब्रह्मा को ऊँचा दिखाने के लिए यह कथा गढ़ दी कि विश्णु तो उनके भगवान की नाक सें निकली मैल सें बना सूअर मात्र है.

2. हंस

3. मत्स्य अर्थात मछली : लगता है कुछ काम ऐसे भी होते हैं जो भगवान अथवा उसका अवतार मनुश्य रूप में नहीं कर सकता. इसलिए ब्राह्मण–धर्म के भगवानों को जानवरों के रूप में जन्म लेना पड़ता है. एक कथा के अनुसार मनु पानी पी रहा था कि उसकी अंजलि (ओक) में मछली आ गई. देखते ही देखते वह मछली 1 लाख योजन लम्बी हो गई. एक योजन लगभग 8 मील अथवा 11 किलोमीटर के बराबर होती है. यानि वह मछली धरती सें चाँद की दूरी सें भी लगभग 4 गुणा लम्बी हो गई. पृथ्वी का कोई समुद्र इतना बड़ा नहीं है कि उस मछली को अपने में समा सके. तब कहां पर रही वह मछली ?

पदम पुराण के अनुसार यह कथा झूठी है. उसके अनुसार मकर नामक दैत्य वेद उठा कर भाग गया. तब विश्णु ने मछली बन अवतार लिया और मकर को मार कर वेद वापिस ले आया. इस कथा में और कुछ हो न हो इतना सत्य अवश्य है कि इस कथा की रचना तब हुई जब वेद किताब के रूप में छप गए थे. अतः यह कथा बहुत अधिक पुरानी नहीं है.

गीता की कसौटी पर इसे परखें तो इस में धर्म का कोई प्रश्न नहीं है, साधुओं तथा दुश्टों का भी कोई रोल नहीं है. अगर मकर एक किताब उठा ले गया था तो दूसरी छाप लेनी थी. आज पूरे भारत में 10 घर ऐसे नहीं होंगे जहां चारों वेद मौजूद हो और उनका पाठ किया जाता हो. बावजूद इसके लोग धार्मिक हैं. अतः वेद सें धर्म का कोई सम्बंध नहीं है. लोगों के लिए वेदों की कीमत कबाड़ की पुस्तकों सें अधिक नहीं है. मकर भी लगता है कबाड़ी था. वह भी उठा कर भागा तो कबाड़ की पुस्तकें. कबाड़ कौन रखता है घर में!!

4. **कूर्म (कछुआ)** : शतपथ ब्राह्मण (7.5.1.15) के अनुसार ब्रह्मा ने प्रजा पैदा करने के लिए कछुए का अवतार लिया. लेकिन भागवत पुराण इसे झूठ मानता है. उसके अनुसार जब देव और दैत्य समुद्र मन्थन कर रहे थे तो उनकी मथनी बना मंदर पर्वत नीचे धसने लगा तब विश्णु ने कछुए का अवतार लिया और पर्वत को ऊपर की ओर धकेल दिय.

सबसें पहले तो इस अवतार का झूठापन इस बात सें ही स्पश्ट हो जाता है कि किसी को यही पता नहीं है कि अवतार लिया किसने था. जिसको जो बहाना मिल गया, चिपका दिया. या फिर हो सकता है जैसे पहले दिलीप कुमार की देवदास बनी. बाद में शाहरूख खान की बनी. ऐसे ही अलग अलग कथाकारों ने अपने अपने हीरो को कछुआ बना दिया हो. और सच्चाई यही है कि अवतार किसी ने नहीं लिया.

वैसे भी इस अवतार को गीता के सिद्धांत पर परखें तो गीता का सिद्धांत एक बार फिर बकवास सिद्ध होता है. ब्राह्मणों के भगवान तो प्रजा पैदा करने आते हैं. ब्रह्मा ने अपनी बेटी सें बलात्कार करके हर प्रकार के जीव तो पैदा कर दिए थे. कछुआ बन कर उसने कौन सी नई किस्म की जनता पैदा करनी थी, यह कथाकार ने नहीं लिखा. अपनी बेटी की इज्जत सें खेल कर कौन से धर्म की रक्षा की गई ?

5. नरसिंह : उपरोक्त अवतार तो ब्राह्मणों का भगवान पूरा पशु था लेकिन नरसिंह ऐसा अवतार था जो आधा पशु आधा पुरूश था. अर्थात नरपशु था. नरसिंह ने हरिण्यकश्पु की हत्या की थी. उनकी हत्या करने के दो कारण थे. पहला

यह कि उनके पास असीमित धन था. सोने के पहाड़ बन जाएं इतना सोना उनके पास था. इसीलिए उनका नाम पड़ा था 'हरिण्यकश्पु' अर्थात सोने के पर्वत. इसी धन पर देवों की नजर थी. ऋग्वेद आदि में ऐसे श्लोक भरे पड़े हैं जो इस बात का द्योतक हैं कि ब्राह्मणों के भगवान लूट मार का ही धन्धा करते थे. देवों का राजा इन्द्र तो विशेश रूप में इसी काम में लगा रहता था. दूसरा कारण यह था कि उन्होंने तीर्थंकर सें दीक्षा ले कर वैदिक धर्म छोड़ दिया था. अहिंसा की दीक्षा लेकर उन्होंने यज्ञों में माँस, मदिरा तथा मैथुन पर पाबंदी लगा दी थी. यज्ञ बिना माँस, मदिरा तथा मैथुन के होने लगे तो ब्रह्माणों और देवताओं को सहन नहीं हुआ. उनकी रोजी रोटी व ऐयाशी के साधन बन्द हो गये थे. अतः उन्होंने साजिश रची. अपने चिर परिचित साम दाम दंड भेद के हथियार का प्रयोग किया. वही साधन जिसे अपना कर राम ने प्रथम क्रांतिकारी समाज सुधारक महात्मा रावण की हत्या की थी. जैसे राम ने विभीशण को गद्दी का लालच दिया. वैसे ही देवों ने प्रह्लाद को गद्दी का लालच देकर अपनी ओर मिला लिया.

प्रह्लाद ने अपने पिता सें गद्दारी की. एक दिन शाम को जब दोनों वक्त मिलते हैं हरिण्यकश्पु पूजा घर में थे तो विश्णु शेर की खाल ओढ़ कर आया. उसने हाथों में बघनखे पहन रखे थे. प्रह्लाद उसे भीतर ले आया. उसने पूजा करते हरिण्यकश्पु पर खम्भे के पीछे छिप कर हमला कर दिया. इससें पहले कि हरिण्यकश्पु संभल पाते वह नरपशु उन्हें घसीटता हुआ बाहर दहलीज/चौखट पर ले आया. प्रजा में दहशत फैलाने के लिए उसने शाम के धुंधकले में सब के सामने उनका पेट चीर दिया. आंतें बाहर निकाल दीं. बहुत दिनों सें उसे यज्ञ में माँस नहीं मिला था. आज उस नरपशु ने जी भर कर नर माँस खाया. लोगों में दहशत फैल गई. पूरे राज्य में भय का वातावरण छा गया.

प्रह्लाद को राजा घोशित कर दिया गया. ब्राह्मणों की पुनः चल निकली. फिर सें माँस, मदिरा तथा मैथुन वाले यज्ञों का प्रचलन शुरू हो गया. शीघ्र ही प्रह्लाद को अपनी गलती का अहसास हो गया. उसने भी अपने पिता की तरह माँस, मदिरा तथा मैथुन वाले यज्ञों का विरोध करना शुरू कर दिया. नतीजा वही हुआ जो होना था. देवों और ब्राह्मणों ने प्रह्लाद के विरूद्ध युद्ध छेड़ दिया. युद्ध में देवों ने प्रह्लाद के पुत्र विरोचन को बन्दी बना लिया. लेकिन प्रजा देवों और ब्राह्मणों सें तंग आ चुकी थी. प्रजा ने विद्रोह कर दिया और विरोचन को आजाद करवा लिया.

विरोचन कार्तिक महीने की अमावस्या को देवों की कैद सें छूटे. **देवों में इन्द्र और असुरों में विरोचन श्रेष्ठ थे.** उस दिन लोगों ने खुशी सें घी के दीप जलाये. विरोचन राजा बन गए. लोगों को देवों और ब्राह्मणों के चंगुल सें मुक्ति मिल गई थी. फिर हर वर्श यह पर्व मनाया जाने लगा. दीवाली अर्थात दीपावली तब सें ही कार्तिक महीने की अमावस्या को मनाई जाने लगी.

लेकिन सोहलवीं सदी में जब तुलसी ने रामचरित लिखी तो ब्राह्मणों ने कार्तिक में मनाये जाने वाली दीपावली का सम्बंध राम के बनवास वापसी सें जोड़ दिया. जबकि सच्चाई यही है कि राम अयोध्या सें **चैत्र मास में गया** था तथा 14 साल पूरे होते ही वह **चैत्र मास में ही वापिस** अयोध्या लौट आया था. कार्तिक महीने में मनाई जाने वाली दीपावली सें राम का कहीं कोई लेना देना नहीं है.

यहां एक बात और भी अपना ध्यान आकर्शित करती है कि प्रह्लाद तथा विभीशण में कई बातों की समानता थी. उदाहरणतः दोनों ही राक्षस कुल सें सम्बंधित थे. दोनों ने अपने तत्कालीन राजा सें गद्दारी की थी. दोनों अपने पिता अथवा भाई को मरवा कर गद्दी पर काबिज हुए. दोनों ने ब्राह्मण धर्मियों सें मदद ली अथवा उनके उकसाने पर गद्दारी करने को तैयार हुए.

इन दोनों में सें विभीशण तो चुपचाप कठपुतली बन कर राज करता रहा. लेकिन प्रह्लाद व उसके पुत्र विरोचन ने देवों के विरूद्ध बगावत की तथा उनसें युद्ध भी किया. फिर क्या कारण है कि ब्राह्मणों और देवताओं के विरूद्ध युद्ध करने वाले दैत्यराज प्रह्लाद के नाम पर तो लोग अपने बच्चों के नाम रख लेते हैं लेकिन विभीशण सें लोग आज भी नफरत करते हैं. उसका नाम लेना भी अपशकुन समझते हैं. जबकि अगर देखा जाए तो उसने तो ब्राह्मणों के भगवान की पत्नि को अगवा करने वाले महात्मा रावण को शहीद करवाया था. प्रह्लाद ने तो अपने पिता को मरवा कर गद्दी हथियाइ थी और बाद में उसी प्रह्लाद ने देवों और ब्राह्मणों सें युद्ध भी कर लिया था.

तब ऐसी क्या बात है कि लोग प्रह्लाद तथा विरोचन को आदर सें मानते हैं परन्तु विभीशण को बुरा मानते हैं ? इसी प्रश्न के उत्तर में ब्राह्मणवाद की सच्चाई छिपी है.

वास्तव में भारतीय समाज ने कभी भी ब्राह्मण धर्म को स्वीकार नहीं किया है. उन्होंने हमेशा श्रमण धर्म को अपनाया है. भगवन बुद्ध और तीर्थंकर की शिक्षाओं को अपनाया है. ब्राह्मणों और उनके देवों के कार्यों को कभी नहीं अपनाया गया. ब्राह्मण सें लोग इतनी नफरत करते हैं कि शुभ काम पर जाते समय ब्राह्मण के दर्शन होना अपशकुन माना जाता है. चाहे लोग राम कृश्ण या दूसरे देवताओं का कितना भी नाम रटें उनके मन में कहीं न कहीं उनके द्वारा किये गए कुकर्म खटकते ही रहते हैं. कोई अन्य विकल्प न होने के कारण लोग इन ब्राह्मणों और उनके कुकर्मी देवताओं का भार ढोने को मजबूर हैं. पिछले हजार साल सें भारत पर इन ब्राह्मणों का वर्चस्व रहा है. भारतीय लोग धर्म के नाम पर इन लोगों द्वारा परोसा गया अधर्म हजम करने को मजबूर रहे हैं. लेकिन विरोचन के समय में लोगों के पास ऐसी

मजबूरी न थी. लोगों के पास श्रमण धर्म था. देवताओं की करतूतों को उन्होंने अपनी आँखों सें देखा था. अनेकों लोग इनके भुगत भोगी भी थे.

इसीलिए देवों की कैद सें जब विरोचन के छूटे तो लागों ने घी के दीप जलाये. देवों के विरूद्ध युद्ध करने वाले प्रह्लाद को लोग सम्मानित मानते हैं. देवों की गुलामी करने वाले विभीशण को लोग आज भी गद्दार मानते हैं.
अग्नि पुराण में भी हरिण्यकश्पु की कथा है परन्तु वहां प्रह्लाद का उल्लेख ही नहीं है. अग्नि पुराण में प्रह्लाद का उल्लेख न होना यह दर्शाता है कि भागवत पुराण में प्रह्लाद द्वारा गद्दारी करने का किस्सा बाद में जोड़ा गया है. यह भी तथ्य है कि भागवत में अधिकतर किस्से मनगढ़ंत हैं तथा बाद में जोड़े गए हैं. लेकिन प्रह्लाद ने देवों सें युद्ध किया था, यह एक अकाट्य सत्य है. देवों के विरूद्ध युद्ध करना यह दर्शाता है कि प्रह्लाद ने या तो अपने पिता सें गद्दारी की ही नहीं. और अगर उन सें भूल हो भी गई थी तो बाद में उसका पाश्चाताप कर लिया. देवों सें युद्ध करके उन्होंने अपने श्रमण धर्म का झण्डा बुलन्द किया.

लिंग पुराण में एक अन्य किस्सा है कि शिव ने नरसिंह को मार दिया तथा उसकी खाल उतार कर अपने शरीर पर लपेट ली. यह वही खाल है जो शिव अपने शरीर पर ओढ़े रखता है अथवा बैठे हुए अपने नीचे बिछाए रहता है.
अगर नरसिंह सचमुच अवतार था तो शिव ने उसकी खाल क्यों उतार ली?

जहां तक भागवत में वर्णित कथा की सत्यता की बात है तो यह कथा अपने आप में झूठ है. कथा है कि हरिण्यकश्पु ने तप किया तो ब्रह्मा ने उन्हें अमर होने का वर दिया. और शर्त रखी कि कोई उनको न दिन में मार सकेगा न रात में, न घर के भीतर न बाहर मार सकेगा, न धरती पर मार सकेगा न आकाश में. न पशु मार सकेगा न मनुश्य.

इसलिए विश्णु नरपशु बन कर शाम के समय आया और उसने चौखट अथवा दहलीज पर हरिण्यकश्पु की हत्या कर दी. वास्तव मे देखा जाए तो उस समय वह नरपशु आधा मनुश्य था आधा पशु था. अगर सही कहा जाए तो शरीर सें तो वह मनुश्य था मगर दिलो दिमाग सें दरिंदा था. अतः वह मनुश्य भी था और पशु भी था. दोनों ही हालात में हरिण्यकश्पु को न मारने योग्य.

जब उनकी हत्या की गई तब शाम का समय था. ब्राह्मण ग्रन्थों में तर्क दिया गया है कि उस समय न रात थी न दिन था. पूछा जा सकता है कि क्या कोई ऐसा समय भी हो सकता है जो दिन और रात के बाहर होता हो? पश्चिमी काल गणना के अनुसार दोपहर 12 बजे के बाद शाम का समय शुरू हो जाता है तथा रात के 12 बजे के बाद अगली सुबह का समय शुरू हो जाता है. भारतीय काल गणना के अनुसार सूर्य निकलने सें लेकर सूर्य डूबने तक दिन का समय होता है तथा सूर्य डूबने सें लेकर सूर्य निकलने तक रात का समय होता है. दिन और रात के 24 के घण्टों को तीन तीन घण्टों के 8 पहरों में भी बांटा गया है. अतः जब विश्णु ने यह नृशंश हत्या की उस समय अगर सूर्य दिख रहा था तो दिन था अगर सूर्य डूब चुका था तो रात थी. अतः ब्रह्मा के वरदान के अनुसार उनकी हत्या नहीं हो सकती थी.
जहां तक घर के अंदर या बाहर की बात है तो उन की दहलीज पर हत्या की गई. तब उनका आधा शरीर अंदर तथा आधा बाहर था. अतः वे घर के अंदर भी थे तथा घर सें बाहर भी, हर हालत में अवध्य. और घर चौखट तक ही नहीं होता है उसके आगे जो दालान होता है वह भी घर का हिस्सा होता है. हरिण्यकश्पु सम्राट थे. अतः महल में रहते थे. हर महल के चारों ओर एक चारदीवारी अर्थात परकोटा होता है. उनका घर उस परकोटे तक था जबकि उस नरपिशाच ने उन्हें महल की चौखट पर मारा.

जहां तक ''न धरती न आकाश'' का प्रश्न है, उस नरपिशाच ने हरिण्यकश्पु की हत्या अपने घुटनों पर लिटा कर की थी. तो क्या घुटनों पर लेटा व्यक्ति धरती पर नहीं होता? क्या जब हम बस अथवा रेलगाड़ी सें सफर कर रहे होते हैं तो क्या हम धरती पर नहीं होते? क्या छत पर बैठा व्यक्ति धरती सें जुड़ा नहीं होता. जो भी व्यक्ति जब तक धरती सें जुड़ा रहता है वह धरती पर ही रहता है. जब उसका धरती सें जुड़ाव नहीं रहता तो वह आसमान में होता है. उदाहरण के तौर पर हवाई जहाज में बैठा व्यक्ति तब तक धरती पर होता है जब तक विमान धरती पर खड़ा होता है या दौड़ रहा होता है. जैसे ही जहाज जमीन छोड़ कर हवा में उठता है, ऐसा कहा जा सकता है कि जहाज व उसमें सवार व्यक्ति आसमान में हैं. अतः जब हरिण्यकश्पु की हत्या की गई वे धरती पर ही थे. अपने घर की छत अभी भी उनके सिर के ऊपर ही थी.

अतः इन परस्थितियों में सम्राट हरिण्यकश्पु की हत्या दिन दिहाड़े, घर के अंदर, धरती पर एक नरपिशाच द्वारा की गई. ब्रह्मा द्वारा वर दिए जाने की कथा निरी बकवास है. जो आदमी अपनी बेटी पोती पर नीयत बिगाड़ सकता है, वह भगवान हो ही नहीं सकता. इतना नीच आदमी किसी को वर अथवा आर्शीवाद तो क्या, किसी को बद्दुआ देने के काबिल भी नहीं होता है. ब्रह्मा जैसा नीच प्राणी, सन्त सरीखे सम्राट को कुछ दे ही नहीं सकता. यह तो बिल्कुल ऐसा है जैसे कोई कहे कि बिन बाती के दीये ने सूर्य को रोशनी दे दी !!

एक अत्यंत महत्वपूर्ण प्रश्न है कि सम्राट हरिण्यकश्पु का दोश क्या था कि उनकी हत्या की गई.

उनका कसूर मात्र इतना था कि उन्होंने ब्राह्माणों के धार्मिक कर्मकांड मानना छोड़ दिया था. उन्होंने यज्ञों में पशु बलि पर पाबन्दी लगा दी थी. किसी भी ब्राह्मण ग्रन्थ में ऐसा कहीं वर्णन नहीं है कि उन्होंने आम जनता को परेशान किया हो अथवा उनके राज्य में जनता दुखी रहती हो. दुख था तो मात्र ब्राह्मणों को क्योंकि सम्राट हरिण्यकशिपु उनका धर्म न मान कर वे श्रमण धर्म को मानते थे. अतः वे अपने राज्य में धर्म के नाम पर निरीह दुधारू पशुओं का कत्लेआम नहीं होने देते थे.

ब्राह्मणों को यज्ञों में मिलने वाले माँस, मदिरा तथा महिला पर रोक लग गई थी. अतः देवों को भी उनका हिस्सा पहुंचना बन्द हो गया था. दोनों पक्ष माँस, मदिरा तथा महिला के लिए छटपटाने लगे. तब उन्होंने सम्राट हरिण्यकशिपु की हत्या करने की साजिश रची. शाम के धुंधकले में जब लोग दीया बाती अथवा सन्ध्या करने लगते हैं उस समय इन लोगों ने उनकी नृशंस हत्या कर दी. दोनों वक्त मिले जब लोग भगवान का नाम लेने, धूप बत्ती करने में व्यस्त होते हैं, ब्राह्मणों और उनके देवता ने ऐसी भयंकर हत्या की कि जिस की विश्व इतिहास में कहीं कोई मिसाल नहीं मिलती! हाँ, ब्राह्मण ग्रन्थों में ऐसी उदाहरणें अवश्य मिलती हैं. ऐसी बेरहम हत्याएं ब्राह्मणों के ही भगवान कहे जाने वाले परशु ने जरूर की थीं जब उसने क्षत्राणियों के गर्भ में पल रहे बच्चे निकाल कर अपने परशु सें काट दिए थे!

बड़ी अजीब सी बात है कि ब्राह्मणों के अवतार ही ऐसी बेरहम हत्याएं क्यों करते थे? कृश्ण ने खांडव वन में रहने वाले नाग कबीले के समस्त स्त्री, पुरूश और बच्चों को जला कर मार डाला! परशु ने तो गर्भ में पल रहे बच्चे तक निकाल कर कुल्हाड़ी सें काट डाले! हनुमान ने पूरी लंका नगरी जला डाली जिसमें रहने वाले बच्चे, बूढ़, स्त्रियां तथा बीमार जल कर मर गए! राम ने परशु राम को मारने के लिए तीर चढ़ाया लेकिन जब उसे पता चला कि सामने वाला भी उसके जैसा अवतार है तो उसने वह तीर दूसरे नगर पर चला दिया जहां रहने वाले सैंकडों नर नारी व बच्चे मारे गए.

6. **परशुराम** : इस प्राणी /दरिंदे के नाम जो कारनामे दर्ज हैं उन्हें आज भी पढ़ कर ही आत्मा थर्रा उठती है. जिन बेचारों के साथ यह बीती होगी उनका क्या हाल हुआ होगा, असोचनीय है. परशुराम का असली नाम तो लेकिन क्यों कि उसने बचपन में अपनी माँ का सिर कुल्हाड़ी सें काट दिया था तथा वह हमेशा हाथ में कुल्हाड़ी फरसा अर्थात परशु लेकर घूमता रहता था, अतः उसका नाम परशु राम पड़ गया.

परशुराम के बाप का नाम जमदग्नि तथा माँ का नाम रेणुका था. जमदग्नि को ऋचीक नामक ऋशि ने सत्यवती सें पैदा किया था. शायद परशु पहला ब्राह्मण था जिसने मनुश्य अथवा क्षत्रिय के विरूद्ध हथियार उठाया था. अन्यथा उससें पहले तो ब्राह्मण मात्र यज्ञ में निरीह पशु काटने के लिए ही हथियार उठाते थे. सबसें पहले परशुराम ने अपने बाप जमदग्नि के कहने पर अपनी माँ की हत्या की. उसकी माँ का दोश मात्र इतना था कि उसने जल में खेलते हुए दो यक्षों को देख लिया था. घर आकर उसने अपने पति को बात बताई. बस इसी सें नाराज होकर उसने अपनी पत्नि का सिर काटने का आदेश दे दिया. शेश भाईयों ने तो मना कर दिया परन्तु परशुराम ने, कहते ही, कुल्हाड़ी मार कर अपनी माँ के दो टुकड़े कर दिये. उसे एक पल के लिए भी विचार नहीं आया कि वह उसकी जन्मदायी माँ है. जितनी बेरहमी सें उसने अपनी माँ का सिर काटा, उतनी बेरहमी सें तो कसाई भी पशु नहीं काटते होते होंगे. जब परशु ने यह कत्ल किया तो उस समय वह बाल्यावस्था में था. (आप्टे) बाल्यावस्था अर्थात आठ दस बरस का था जब उसने पहला कत्ल किया.

एक बार जमदग्नि का क्षत्रिय वंश के अर्जुन सें झगड़ा हो गया. अर्जुन जमदग्नि के आश्रम में सें उसकी गाय चुरा ले गया. जमदग्नि ने अपना ऋशिपन दिखाया अर्थात अर्जुन को मार डाला. बदले में अर्जुन के बेटों ने जमदग्नि को मार दिया. तब परशुराम ने निर्णय किया कि वह धरती पर सें क्षत्रियों का नामो निशान मिटा देगा. अतः उसने अर्जुन के गांव पर धावा बोल दिया. अगर ब्राह्मण ग्रन्थों को सत्य मानें तो परशु ने अर्जुन की 100 अक्षौणी सेना अपनी कुल्हाड़ी सें काट डाली. एक अक्षौणी सेना की रचना ऐसे होती है:

(1) हाथी	:	21,870
(2) रथ	:	21,870
(3) घोड़े	:	87,480 (65,610 घुड़सवार सैनिकों के लिए तथा 21,870 रथों में जुते हुए.)
(4) हाथी सवार	:	65,610 प्रत्येक हाथी पर सवार 3 मनुश्य (1 चालक, 1 योद्धा तथा 1 सहायक) अतः 21780 हाथियों पर सवार कुल मनुश्य = 65610
(5) रथ सवार	:	65,610 प्रत्येक रथ पर सवार 3 मनुश्य (1 चालक, 1 योद्धा तथा 1 सहायक) अतः 21780 रथों पर सवार कुल मनुश्य = 65610
(6) घुड़सवार	:	65,610 प्रत्येक घोड़े पर एक सवार
(7) पैदल सैनिक		1,09,350 (अतः एक अक्षौणी में कुल मनुश्य (4)+(5)+(6)+(7) = 3,06,180)

अतः 100 अक्षौणी सेना में हुए : 21,87,000 हाथी, 87,48,000 घोड़े अर्थात कुल 1,09,35,000 (एक करोड़ नौ लाख पैंतीस हजार जानवर) तथा 3,06,18,000 (तीन करोड़ छः लाख अठारह हजार) मानव.
इस तरह सें कुल मिला कर 4 करोड़ सें अधिक जीवित प्राणियों की हत्या कर दी ब्राह्मणों के एक अवतार ने!!

ब्राह्मणों के भगवान परशु ने कुल 4 करोड़ 15 लाख 53 हजार प्राणी कत्ल किये. परशु को इतने प्राणी मारने में कितना समय लगा होगा ? अगर समय की गिनती की जाए और यह मान लिया जाए कि उसने एक मिनट में एक प्राणी की हत्या की तथा यह कत्लेआम बिना रूके चलता रहा तो परशु को इतने प्राणी काटने में 79 साल का समय लगा. अर्थात वह कातिल 79 साल तक इसी काम में लगा रहा. ऐसा था ब्राह्मणों का भगवान!!

जमदग्नि झगड़ालू तथा गुस्सैल था. उसने अर्जुन की हत्या की परन्तु फिर भी जन्म सें ब्राह्मण होने के कारण वह ऋशि कहलाया. उसका बेटा परशुराम क्रूर, बेरहम, बेदर्द हत्यारा था. वह अपने बाप सें भी हजार हाथ बढ़ कर था. इसलिए जहां उसका बाप तो मात्र ऋशि बन पाया, उसे ब्राह्मणों के भगवान का अवतार बना दिया गया. हैरानी और दुख होता है कि ऐसे वहशी दरिंदे को भी भगवान का अवतार माना जाता है.!!

उस दरिन्दे अवतार की खून की प्यास यहीं समाप्त नहीं हुई. इतने प्राणियों को मार कर वह क्षत्रियों का नाश करने निकल पड़ा. उसने इस पृथ्वी पर जितने क्षत्रिय मिले, बच्चे, बूढ़े, जवान, अपाहिज रोगी जो भी क्षत्रिय मिला, उसने उनकी हत्या कर डाली. उसके बाद उसने वह किया जिस दृश्य की कल्पना मात्र सें रोंगटे खड़े हो जाते हैं. उसे जितनी गर्भवती क्षत्रिय स्त्रियां मिली, उसने उनके पेट चीर डाले. और गर्भ में पल रहे बच्चों को निकाल कर अपनी कुल्हाड़ी सें काट डाला!!! कसाई में भी इतनी दया, रहम की भावना तो होती ही है कि वह गर्भवती भेड़ बकरी को नहीं मारता. लेकिन ब्राह्मणों का भगवान तो कसाई सें भी गया गुजरा निकला. उसने न केवल गर्भवती माँओं की हत्या की बल्कि गर्भ में सें निकले बच्चे भी कुल्हाड़ी सें काट डाले!!

पूरी पृथ्वी पर एक भी जीवित क्षत्रिय उसने नहीं छोड़ा. ऐसा उसने एक बार नहीं बल्कि 21 बार किया. 21 बार उसने गर्भ में पल रहे बच्चों की हत्या की. अगर परशुराम जैसे हत्यारे भगवान का अवतार हैं तो ऐसे भगवान का तो न होना ही अच्छा है. ओसामा मियां तो परशुराम के आगे वैसे ही हैं जैसे लकड़बग्घे के सामने चींटी.

परशुराम अगर अवतार है तो गीता में जो कुछ कहा गया है वह निरी बकवास है कि भगवान धर्म की रक्षा करने के लिए अवतार धारण करता है. गर्भ में पल रहे बच्चों की हत्या करने में कौन से धर्म की रक्षा हुई?
पूरे विश्व में ऐसी वीभत्स हरकत कहीं और नहीं मिलती.

परशु द्वारा विधवा बनाई गई क्षत्राणियों को सड़कों पर जाकर खड़ा होना पड़ा, वहां सें गुजरने वाले हर ब्राह्मण सें याचना करनी पड़ी कि वह उसके साथ संभोग कर ले ताकि उसके पुत्र पैदा हो सके और वह मोक्ष की हकदार बन सके. तब ब्राह्मणों ने लाचार क्षत्राणियों सें व्यभिचार/ब्लातकार किया जिसके लिए उन्हें भरपूर दक्षिणा भी मिली. ऐसा मात्र ब्राह्मण–धर्म में ही हुआ है कि किसी को ब्लातकार करने के लिए दक्षिणा दी गई हो!! यह पाप का धंधा कई दशकों तक चला क्यों कि परशु ने एक बार नहीं बल्कि 21 बार क्षत्रियों का समूल नाश किया था.

वास्तव में परशु की कहानी पुश्यमित्र शुंग की कहानी है जिसने ब्राह्मण ऋशि पतंजलि के उकसाने पर जातिय अपमान का बदला लेने के लिए ब्राह्मण पुश्यमित्र ने सम्राट वृहदर्थ की हत्या की. (समु 5.142) अतः ब्राह्मण जाति के अपमान का बदला लेने के एवज में पुश्यमित्र शुंग सरीखे हत्यारे, जिसने सम्राट वृहदर्थ का कत्ल किया, को अवतार घोशित कर दिया. पुश्यमित्र को "परशु" तथा उसके कत्लेआम को क्षत्रियों का कत्लेआम बना दिया गया. सत्ता हथियाने के बाद ब्राह्मणों ने बौद्धों को कत्लेआम किया. उस समय तक अधिकतर क्षत्रिय शूद्र घोशित नहीं किये गए थे. जैसे बौद्ध मौर्यों का अकसर 'क्षत्रिय' भी बताया जाता है वैसे ही उस समय अन्य बौद्ध भी 'क्षत्रिय' थे. अतः जब पुश्यमित्र ने बौद्धों का कत्ल किया तो उसे भगवान का अवतार बना दिया गया ताकि लोग उस कत्लेआम को भगवान का भाणा समझ लें.

7. **राम** : राम का जीवन चरित्र अध्याय 5 "ध्वज वाहक" में दिया गया है. अगर उसके जैसा भाई-घाती, पत्नि हत्यारा, नामर्द भी भगवान का अवतार है तो ऐसे भगवान मात्र ब्राह्मणवाद में ही पैदा हो सकते हैं. गद्दी की खातिर धोखे सें बालि की हत्या, गर्भवती सीता का जंगल में फिकवाना, पूजा करते इन्द्रजीत मेघनाद की हत्या, लक्ष्मण जैसे भाई को आत्महत्या करने पर मजबूर करने, महात्मा शंबूक की निर्मम हत्या करने वाला राम कभी भगवान हो ही नहीं सकता. और तो और अंत में अपने जीवन सें तंग आकर राम ने सरयू में डूब कर आत्महत्या कर ली. क्या सारी उम्र कुंठाओं में जीकर अंत में आत्महत्या करने वाला कभी भगवान हो सकता है?

8. **कृश्ण** : कृश्ण का जीवन चरित्र अध्याय 5 "ध्वज वाहक" में दिया गया है. उसके जैसा व्यभिचारी न कभी हुआ और न कभी होने वाला है. भूतो न भविश्यति्. दो जुआरी परिवारों में जूए में जीती सम्पत्ति को लेकर युध की नौबत आ गई. अर्जुन में कुछ मानवता बाकी थी. उसने जूए की सम्पत्ति की खातिर अपनों को मारना उचित नहीं समझा. कृश्ण ने ऐसी पट्टी पढ़ाई, जिसे गीता कहा जाता है, कि टला टलाया युध करवा दिया. अगर महाभारत को सत्य मानें तो कृश्ण ने भारत भूमि वीरों सें खाली करवा दी. परशु ने क्षत्रिय मारे तो क्षत्राणियां सड़कों पर आ गईं, कृश्ण ने महाभारत करवा कर गोपियों को सड़कों पर ला खड़ा किया. धन्य हैं ब्राह्मणों के भगवान!!

किसी देश को युध की आग में झोंकने वाला कभी भी भगवान नहीं हो सकता! एक जुआरी परिवार के हाथों कृष्ण ने दूसरे जुआरी परिवार को मरवा कर कृष्ण ने कौन से धर्म की रक्षा की ? या फिर अपनी सगी मामी राधा सें नित्य संभोग करके कौन से धर्म स्थापित किया गया ? हाँ, उसने ब्राह्मण–धर्म अर्थात गोधर्म अवश्य शिखर पर पहुंचा दिया. कृष्ण लीलाएं पढ़ कर ऐसा अवश्य लगता है कि गोकुल मथुरा वृंदावन में शायद ही कोई स्त्री बची होगी जिस के साथ कृष्ण और उसके दल ने व्यभिचार का खेल न खेला होगा. बस यही धर्म स्थापित किया था कृष्ण ने. या फिर जो थोड़ी बहुत मानवता जुआरी अर्जुन के मन में बची थी उसका सर्वनाश किया था उसने गीता का ज्ञान देकर!!
और अगर वह भगवान का ही अवतार था तो जरासंध सें डर कर मथुरा छोड़कर क्यों भागा ?(सभा पर्व 14.67) भगवान तो सर्वशक्तिमान होता है उसे किसी सें डर कर भागने की क्या जरूरत?

9. वामन : यह तथ्य सभी जानते हैं कि प्राचीन भारतीय समाज में देव, दानव, असुर, राक्षस, यक्ष, आदि अनेक संस्कृतियों के लोग रहते थे. देव अथवा देवता कहे जाने वाले लोग सबसें अधिक ऐय्याश होते थे. यज्ञ करना और उसमें माँस, मदिरा तथा मैथुन का खुला प्रयोग करना, उनकी जीवनश्शैली थी. लूटमार करना उनकी दिनचर्या थी. यक्ष भी लगभग वैसे ही थे मगर वे संख्या में कम थे. असुर वे लोग थे जो शराब नहीं पीते थे. दैत्य लोग जैन अथवा बौद्ध धर्मी होते थे. दानव सरल स्वभाव के होते थे तथा दान देना उनकी दिनचर्या होती थी. जो लोग रक्ष संस्कृति को मानते थे वे रक्षक कहलाते थे जिन्हें बाद में "राक्षस" बनादिया गया. अधिकतर ब्राह्मणों की देवों सें सांठ गांठ थी. वैसे अनेक ब्राह्मण भी महात्मा रावण द्वारा स्थापित ''रक्ष संस्कृति'' को अपना कर रक्षक (राक्षस) बन गए थे.

ब्रह्मपुराण (अध्याय 73) के अनुसार बलि नामक एक महान राजा थे. उन्होंने ऐय्याश देवों को हरा कर धरती को स्वर्ग समान बना दिया था. तीनों लोकों में महाराज बलि के बराबर गुरूभक्ति, सच्चाई, बहादुरी, ताकत, त्याग और क्षमा वाला आदमी नहीं था. उनके राज्य में तीनों लोकों में कहीं कोई वैर, रोग अथवा मानसिक चिंता नहीं थी. गुंडे बदमाश, अकाल, अधर्म आदि शब्द सपने में भी सुनाई नहीं देते थे.

उपरोक्त वर्णन ब्राह्मणों के सबसें पुराने कहे जाने वाले पुराण में दर्ज है. आम लोगों ने तो सदैव माँस, मदिरा तथा मैथुन का खुला प्रयोग करने वाले देवों का विरोध किया था. ऐयाशी करते करते समय के साथ देवों की शक्ति क्षीण हो गई थी. अतः वे महाराज बलि सें सीधे युद्ध में हार गए. समस्त भूमण्डल पर मानवों का राज हो गया. ऐसे में यज्ञों के स्थान पर हवन होने शुरू हो गए. देवों का माल पानी बन्द हो गया.

जैसे नशेड़ी को एक दिन भी नशा न मिले तो वह हाय तौबा मचाने लगता है, वैसी ही हाय तौबा देवों और ब्राह्मणों ने मचानी शुरू कर दी. देव व ब्राह्मण भी विष्णु के आगे जाकर रोये. भगवान सिंह सही कहते हैं कि ब्राह्मणों का आधा साहित्य देवों की "बचाओ, बचाओ" सें भरा पड़ा है तथा बाकी आधा प्रजापति या भगवानों की कारस्तानियों सें भर पड़ा है. दुनियां की समस्त बुराइयां देवों ने अपनी रक्षा करने या असुरों को हराने के लिए पैदा की हैं.

इमानदारी व सत्य की लड़ाई में तो देव हार चुके थे मगर चालाकी और धोखाधड़ी में कोई उनका सानी न था. अतः ब्राह्मणों ने विष्णु के साथ मिल कर छल कपट सें महाराज बलि को हराने की कुयोजना बनाई. वे जानते थे कि दानव दान देने में दरिया दिल होते हैं. अतः उन्होंने दानवों की दान देने की प्रवृति का लाभ उठाने का षडयंत्र रचा. विष्णु वामन यानि बौना बन गया और वे सब दानव राज बलि के दरबार मे पहुंचे. उन सें दान मांगने का नाटक करते हुए उनको घेर लिया.

कथा के अनुसार वामन ने महात्मा बलि सें तीन कदम चलने जितनी धरती मांगी. एक कदम सें उसने धरती तो दूसरे सें आकाश माप लिया तथा तीसरे कदम पर महाराज बलि को पाताल में धकेल दिया. इस तरह विश्णु ने सोची समझी योजना के अंतर्गत महादानी बलि की हत्या कर दी. अगर आज के समय में विश्णु ऐसी योजना बना कर हत्या करता तो उसे ''कोल्ड ब्लड प्लांनड मर्डर" अर्थात ठंडे दिमाग सें सोची समझी हत्या का दोशी पाया जाता और उसे फांसी पर लटका दिया जाता. लेकिन यह तो ब्राह्मणवाद ही है जहां ऐसे हत्यारे और ब्लात्कारी भगवान बना कर पूजे जाते हैं.

पूछा जा सकता है कि महादानी महाराज बलि का दोष क्या था. उनके राज्य में कहीं कोई अनाचार नहीं होता था. **स्वयं ब्राह्मणों के ग्रन्थ इस बात की गवाही देते हैं कि उनके राज्य में सपने में भी अधर्म नहीं होता था. फिर विष्णु ने उन्हें धोखे सें कत्ल क्यों किया.** इस वामन अवतार ने तो एक सन्त की कुनियोजित हत्या करके हजारों ऐय्याशों की रक्षा की थी. कौन से धर्म की स्थापना की विष्णु ने एक सन्त सरीखे महाराजा को धोखे सें कत्ल करके? क्या व्यभिचारी और ऐय्याश देव और ब्राह्मण साधु कहलाने के योग्य थे जिनकी खातिर उसने धोखे सें हत्या जैसा जुर्म किया.

10. संग्राम (लड़ाई)
11. आदिवक
12. त्रिपुरारि
13. अंधकार

14. **घ्वज (झंडा)**
15. **वर्त**
16. **हलाहल (जहर)**
17. **कोलाहल (शोर)**
18. **सनत्कुमार** : ब्रह्मा का पुत्र.
19. **नरनारायण : "अध्यात्मक वेश्याएं" उर्वशी सें कॉपी करो. पृ 62 आज 14.08.2006 को**
20. **कपिल**
21. **दतात्रेय**
22. **यज्ञ**
23. **ऋशभ (सांड)**
24. **पृथि**
25. **धन्वंतरि**
26. **मोहिनी** : मोहिनी को भी अवतार घोशित किया गया है जो कि एक वेश्या थी. उसने स्वयं मानती है कि वह व्यभिचारिणी तथा कुलटा स्त्री है. (भगवत 10.67.9)
27. **वेदव्यास**
28. **नरदेव**
29. **कल्कि** : वैसे तो ब्राह्मण ग्रन्थ कहते हैं कि कलियुग के अंतिम चरण में कल्कि पैदा होगा जो बौद्धों और मलेच्छों (मुस्लमानों व अन्य धर्म के लोगों) को मार कर इस धरती पर पुनः वैदिक धर्म की स्थापना करेगा लेकिन कल्कि पुराण को सत्य मान लें तो उसने जन्म लेने सें पहले ही दो लोगों – एक दूध पिलाती माँ और उसके पांच साल के अबोध बच्चे का कत्ल कर दिया है. वह अब तक कुंभकर्ण के बेटे निकुंभ की बेटी कुथोदरी ओर उसके दूध पीते बेटे विकंज की हत्या कर चुका है. दूध पिलाती माँ की हत्या करना क्रूरतम अपराध माना जाता है जिसके लिये अदालतें मौत की सजा देती हैं. और साथ में दूध पीते बच्चे की हत्या करना तो दरिंदगी की चरम सीमा है. मानव इतिहास में शायद कभी ऐसा हुआ ही नहीं है कि कोई इतना निर्दयी भी हुआ हो कि उसने दूध पिलाती माँ और दूध पीते बच्चे की हत्या कर दी हो.

लेकिन ऐसा वहशियाना कत्ल कल्कि ने किया है. कितने शर्म की बात है कि ऐसे दरिंदे को भगवान बताया जाता है. पता नहीं जब वह सचमुच पैदा होकर मलेच्छों और बौद्धों की हत्याएं करेगा तो कितनी दरिंदगी अभी और दिखाएगा.

उपरोक्त सूचि के अतिरिक्त बलराम को भी अवतार बताया जाता है. बलराम हर समय शराब के नशे में धुत रहता था. कादम्बरी नामक शराब उसे खास प्रिय थी. तथा हर समय गोपियों के झुण्ड में घुसा रहता था. ऐसा लगता है कि जहां कृश्ण व बलराम रहते थे वहां की स्त्रियां वासना की पिटारियां ही थीं. उनका आचरण वेश्याओं के जैसा था. बलराम ने शराब पी कर पराई औरतों सें ऐयाशी करके कौन से धर्म की रक्षा की, सभी अनुमान लगा सकते हैं. (भागवत 10.67.9)

अवतारों को बनाने का वास्तविक उद्देश्य

यह तो निश्चित है कि अवतार नाम की घटना सम्भव ही नहीं है. और कभी कोई अवतार हुआ भी नहीं. अवतार एक कोरी कल्पना है जिसे सोची समझी चाल के अंतर्गत मूर्त रूप दिया गया. ब्राह्मणों द्वारा अवतारवाद का शोशा इन कारणों सें बनाया गया.

1. भगवन बुद्ध ने ब्राह्मणवाद के खोखलेपन को लोगों के सामने उजागर कर दिया था. उनके सभी कर्मकांडों की पोल जगजाहिर कर दी थी. सम्राट अशोक ने बुद्ध धर्म घर घर पहुंचा दिया. ब्राह्मणवाद मृतप्राय हो गया. तब ब्राह्मणों ने सम्राट अशोक के पौत्र वृहदर्थ की हत्या कर दी तथा बौद्धों तथा भिक्षुओं का कत्लेआम किया. तब उन्होंने नरसिंह की कथा रची. लोगों पर अपना भय बनाये रखने के लिए ब्राह्मणों ने वृहदर्थ के हत्यारे को भगवान का रूप बता दिया. उनका यह प्रपंच सफल रहा.

2. अवतारवाद के प्रपंच की सफलता सें उत्साहित होकर उनमें अवतार बनाने की होड़ लग गई. जहां भी उनका काम अटकता दिखाई देता, वे एक अवतार और गढ़ देते. करते करते 21 अवतार गढ दिए गए. ब्राह्मणों के हाथ जादू की छड़ी लग गई. वे जो भी कुकर्म करना चाहते, वैसा ही अवतार गढ़ लेते. जूआ खेलने के लिए अर्जुन को नर का अवतार बना दिया, दूसरों की बहन बेटियों को अपनी हवस का शिकार बनाने के लिए कृश्ण का अवतार गढ़ लिया. किसी की नृशंश हत्या करने के लिए परशु का अवतार गढ़ लिया. धोखे सें मारने के लिए राम का अवतार गढ़ लिया.

बलात्कार करने के लिए विश्णु साक्षात पहले ही मौजूद था. यह सूचि अंतहीन है. ब्राह्मणों ने अपना धंधा जारी रखने के लिए अपने भगवान के अवतार को वेश्या तक बना दिया.

3. ब्राह्मणों ने धर्म के नाम पर धंधा किया है. जैसे एक सुपर मार्किट में हर तरह के साबुन लोशन आदि मिल जाते हैं, ऐसी ही धर्म की सुपर मार्किट ब्राह्मणों ने खोल रखी है. जिस वैरायटी का भगवान चाहिए, यहां मिल जाएगा. जैसे बहु राश्ट्रीय कंपनियां ग्राहकों को लुभाने के लिए अपने उत्पादों के नित्य नये मॉडल बाजार में उतारते हैं वैसा ही इन ब्राह्मणों ने अपने धर्म की सुपर मार्किट में अवतार के नित्य नये मॉडल उतारे हैं ताकि उन का धन्धा न केवल जारी रहे बल्कि फलता फूलता भी रहे. उनके लिए नए नए अवतार गढना वैसा ही था जैसा कार, स्कूटर या घड़ियों वाली कम्पनियां नित्य नए मॉडल बाजार में उतारते हैं.

4. जैसे बहु राश्ट्रीय कंपनियों का आपस में गला-काट स्पर्धा होती है लेकिन वे सभी कंपनियां ग्राहकों सें कमाई करने में व्यस्त रहती हैं, ऐसा ही हाल इन ब्राह्मणवादियों का है. इनके ''गौड़ में ही जोड़'' नहीं है बल्कि नीचे सें ऊपर तक जोड़ ही जोड़ हैं. ब्राह्मणवाद की तीन मुख्य धाराएं हैं जो उनके तीन मुख्य देवों : ब्रह्मा विश्णु महेश पर आधारित हैं. इनके आपसी खूनी संघर्श की कहानियां ब्राह्मण-ग्रन्थों में भरी पड़ी हैं. इन कथाओं में प्रत्येक वर्ग ने अन्य देवों के किये कुकर्मों को जग जाहिर किया. इन कथाओं को यथासंभव उपरोक्त अवतारों के साथ वर्णित किया गया है. इनके आपसी संघर्श में ब्रह्मावादी उसी समय हार गये जब यह तथ्य उजागर किया गया कि ब्रह्मा ने कामांध होकर अपनी बेटी और पोतियों को अपनी हवस का शिकार बनाया था. शैवों और वैश्णवों में चला संघर्श बातों तक ही सीमित नहीं रहा बल्कि सड़कों पर भी खूनी संघर्श हुआ. अंत में वैश्ण्व मत वाले ब्राह्मण शिव को मुर्दों और शूद्रों का देव घोशित करने में सफल रहे. आज स्थिति यह है कि मात्र विश्णु के अवतार ही ब्राह्मण धर्म के बाजार में प्रचलित रह गए हैं. अतः अवतार की शोशेबाजी सें न केवल आम जनता को बेवकूफ बनाया गया बल्कि विरोधी पक्ष को भी मात देने का कार्य किया गया.

5. अवतार का शोशा गढने का एकमात्र कारण था कि ब्राह्मणों की सर्वोच्चता को बना कर रखा जाए. अतः जितने भी अवतार गढे गए उन्होंने चाहे कुछ और किया हो या न किया हो ब्राह्माणों के चरण धोकर अवश्य पीए हैं. कृश्ण ने सुदामा के पैर धोकर पीए तो राम ने वशिश्ठ के. परशु राम तो था ही बाह्मण. ब्राह्मणों ने अवतारों सें पूजित होकर अपनी सत्ता कायम रखी. ब्राह्मणों ने अपने भगवानों की डुप्लीकेट कॉपियों अर्थात अवतारों सें ही अपनी सेवा करने की कथाएं नहीं गढी बल्कि ओरिजिनल अथवा साक्षात भगवानों सें भी अपनी सेवा की कहानियां बनाईं. यहां तक कथा बनाई कि जब थोक में अवतार लेने वाले ओरिजिनल अथवा साक्षात विश्णु के भृगु नामक ब्राह्मण ने लात मारी तो विश्णु उस ब्राह्मण के पैर पकड़ कर बोला,''हे! ब्राह्मण आपको चोट तो नहीं आई.'' अतः ब्राह्मणों ने भगवान और उसके अवतार इसलिए गढे ताकि वे स्वयं को अपने भगवान सें भी बड़ा घोशित कर सकें.

6. ब्राह्माणों ने कोई भी अवतार वैश्य या शूद्र कुल में पैदा हुआ नहीं बनाया. सभी अवतार ब्राह्माण अथवा क्षत्रिय कुल में पैदा किए गए. यहां तक कि उन्हें गंदगी खाने वाला सूअर तक बना दिया गया परन्तु उन्हें शूद्र और वैश्य नहीं बनाया गया. इसका एकमात्र कारण था कि समाज के इन दो मुख्य धाराओं को ब्राह्माण अपने जूते तले दबा कर रखना चाहते थे. ये अवतार क्यों कि ब्राह्माणों और क्षत्रियों में ही पैदा हुए, इसलिए वैश्य और शूद्र समाज इन दो वर्णों को ही सर्वोच्च मानता रहा. क्षत्रियों का समूल नाश ब्राह्माण परशु ने कर दिया था. अतः कुल मिला कर ब्राह्माण ही धर्म की सत्ता पर काबिज बने रहे. अतः अवतार गढने की उनकी स्कीम आशा सें बढ़ कर कारगर सिद्ध हुई.

7. ब्राह्मण-धर्म को केवल बौद्ध धर्म ने सफलता पूर्वक चुनौती दी थी. धर्म के नाम पर जो कुकर्म ब्राह्मण कर रहे थे, बौद्ध धर्म के कारण उन्हें वे सब बन्द करने पड़े. लेकिन जैसे ही अशोक सम्राट के पौत्र वृद्रहथ की हत्या करके ब्राह्मण सत्ता पर काबिज हुए, उन्होंने बौद्धों को असुर और दैत्य कहना शुरू कर दिया. तब ब्राह्मणों ने अपने सभी अवतारों की रचना बौद्धों को मारने लूटने के लिए की. सभी अवतारों ने मात्र बौद्धों का दमन किया.

8. इन अवतारों के साथ साथ इन ब्राह्मणों ने काली, भैरवी, भैरव, ... आदि देवी देवताओं की कल्पना भी कर डाली जो माँस और शराब का भक्षण करते थे. अतः लोगों ने इन देवी देवताओं पर माँस और शराब का प्रसाद चढ़ाया. और इस माँस और शराब पर इन ब्राह्मणों ने मस्ती की. साथ में उन्होंनं शिव को लिंग बना दिया. अतः अवतार के शोशे सें ब्राह्मणों का माँस, शराब और शबाब का धन्धा बेरोक टोक चलने लगा.

9. ब्राह्मणों ने लगभग सभी अवतार इस ढंग सें गढे कि उनका गोधर्म भी बेरोकटोक चलता रहे. उन्होंने लगभग सभी अवतार अवैध सम्बंधों सें पैदा हुए बनाए. उदाहरणतः राम ऋश्यश्रृंग नामक ब्राह्मण ऋशि द्वारा कौशल्या के पैदा किया गया, हनुमान को उसकी माँ अंजनि ने पवन सें वयभिचार करके पैदा किया. वेद व्यास भी एक ब्राह्मण ऋशि द्वारा किए गए बलात्कार की उपज है. इस तरह हरामी अथवा अवैध अवतार गढ कर ब्राह्मणों ने आम लोगों को यह संदेश दिया कि व्यभिचार करना भी धर्म का ही अंग है तथा ब्राह्मणों सें किये गए व्यभिचार सें तो भगवान पैदा होते हैं. अतः हरामी अवतारों की आड़ में उन्होंने अपनी हवस मिटाने का रास्ता खोज निकाला.

10. ब्राह्मणों ने लगभग सभी अवतारों की ऐसी कथाएं गढी कि इन अवतारों ने ब्राह्मणों को दोनों हाथों सें धन दिया. फलतः लोगों ने भी ब्राह्मणों को खूब धन दिया. उनके मंदिर, उनके यज्ञ तथा उनके अन्य कर्मकांड धन कमाने का

साधन बन गए. ब्राह्मणों के सबसें कामांध अवतार कृश्ण ने न केवल ब्राह्मणों को राधिकाएं सप्लाई करवाईं बल्कि उन्हें प्रचुर मात्रा में धन भी दिलवाया. इसीलिए जब अहमदाबाद के नटवर लाला शाम लाल मंदिर के प्रधान गोसाईं महाराज के यहां छापा पड़ा तो उसके पास सें 74 लाख की नकदी और सोना मिला. यह सन 1976 की बात है. आज के हिसाब सें यह रकम लगभग 20–25 करोड़ रूपए बैठती है. इतना ही नहीं उसके पास सें गोधर्म की अनेकों वस्तुएं भी मिली. जैसा उनका भगवान वैसा उसका चेला. (समु 4.98)

11. अवतारवाद के सिद्धांत ने भारत भूमि को विदेशियों की गुलाम अवश्य बना दिया. जब भी लुटेरों ने हिन्दुओं पर हमला किया, उनके धन माल को लूटा, उनकी बहन बेटियों को अगवा किया, यहां के लोग भगवान के अवतार लेने की प्रतीक्षा में हाथ पर हाथ धरे बैठे रहे. उन्हें ब्राह्मणों ने विश्वास दिलाया हुआ था कि जब जब भी धर्म की ग्लानि होगी, भगवान उन्हें बचाने आएगा. (समु 6.162) यहां तक कि जब सोमनाथ का मंदिर लूटा जा रहा था तो हिन्दू दूर खड़े आकाश की ओर देख रहे थे कि अभी भगवान आएगा और गजनवी को मार भगायेगा. वहां हिन्दुओं की इतनी भीड़ जमा थी कि अगर वे हमलावरों के ऊपर गिर ही पड़ते तो भी हमलावर पिस कर मर जाते! मगर उनको तो ब्राह्मणों की गीता पर विश्वास था कि धर्म को बचाने भगवान आएगा.

12. अवतार घढ़ने का सबसें मुख्य कारण था गोधर्म. जब भगवान भी हरामी हो सकते हैं तो आदमी का तो क्या है.

आत्मा का सिद्धांत

गीता में आत्मा के बारे में कही गई बातें इस प्रकार सें हैं:

1. जो असत् है वह स्थाई नहीं है. जो सत् है वह अविनाशी है. ऐसा तत्वदर्शियों ने प्रकृति के अध्ययन सें निश्कर्श निकाला है. (2.16)

2. जो सारे शरीर में व्याप्त है तू उसे अविनाशी मान. उसे कोई नश्ट नहीं कर सकता. (2.17)

3. उस अविनाशी, अप्रमेय (जिसका आकार मापा न जा सके) द्वारा धारण किया शरीर का नाश अवश्य होगा. इसलिए हे, अर्जुन तू युद्ध कर. (2.18)

4. जो इसको मरने वाला मानता है अथवा जो इसको मारने वाला मानता है वह दोनों नहीं जानते कि यह न मरता है और न मारा जाता है. (2.19)

5. यह न कभी जन्म लेता है और न कभी मरता है. इसने न कभी जन्म लिया है और न कभी जन्म लेगा. यह अजन्मा, अपरिवर्तनीय, स्थायी और पुरातन है. शरीर को **मारने** पर भी यह नहीं मारा जाता. (2.20)

6. जो इसे अविनाशी, अजन्मा, अपरिवर्तनीय, स्थायी जानता है वह भला कैसे किसी को मार अथवा मरवा सकता है. (2.21)

7. जिस प्रकार नर फटे पुराने वस्त्र त्याग कर नए वस्त्र ग्रहण करता है, उसी प्रकार देही जीर्ण (वृद्ध और व्यर्थ) हुए शरीर को त्याग कर नया शरीर धारण करता है. (2.22)

8. इसे कोई शस्त्र छेद नहीं सकता, न आग जला सकती है, न पानी गीला कर सकता है और न ही हवा इस को सुखा सकती है. (2.23)

9. इसे न तोड़ा जा सकता है, न जलाया जा सकता है, न घोला जा सकता है, न सुखाया जा सकता है. यह नित्य, **सर्वगत,** अविकारी, **अचल** तथा सदा एक सा रहने वाला है. (2.24)

10. यह अव्यक्त, अकल्पनीय और अविकारी कहलाता है. अतः इसे अच्छी तरह समझ कर तुझे इसकी चिन्ता नहीं करना चाहिए. (2.25)

11. यदि तू इसे सदा जन्म लेने वाला तथा हर बार मरने वाला मानता है तो भी तुझे इसकी चिन्ता नहीं करना चाहिए. (2.26) और लड़ाई करनी चाहिए.

12. जिसने जन्म लिया वह अवश्य मरेगा और जो मरेगा उसका जन्म अवश्य होगा. अतः अपने अटल कार्य करने पर तू शोक न कर. (2.27)

13. सारे प्राणी शुरू में अप्रकट होते हैं. बीच में प्रकट होते हैं. निधन होने पर फिर अप्रकट हो जाते हैं. अतः इसमें दुःख की कोई बात नहीं है. (2.28)

14. कोई इसके बारे में हैरानी सें देखता है, कोई हैरानी सें बताता है, कोई हैरानी सें सुनता है परन्तु **कोई कभी भी कुछ नहीं समझ पाया.** (2.29)

15. सब की देह में जो देही है उस का कोई वध नहीं कर सकता. अतः तुझे किसी भी जीव के लिए चिन्ता नहीं करनी चाहिए. (2.30)

उपरोक्त शलोकों का अर्थ वैसा ही किया गया है जैसा कि इस्कॉन के ए सी पी ने ''गीता..यथारूप'' में किया है. उसने अपनी पुस्तक में प्रत्येक संस्कृत शब्द का हिन्दी में अर्थ भी दिया है तथा साथ में पूरे श्लोक का भावार्थ भी दिया

है. लेकिन जैसा कि अक्सर ब्राह्मण ''लेखक'' करते आए हैं उसने भी कई स्थानों पर भावार्थ तोड़ मरोड़ कर किए हैं. उदाहरण के लिए श्लोक 2.29 में शब्दों का अर्थ देते हुए उसने ''कोई'' शब्द का प्रयोग एक बार किया है (जैसा कि ऊपर दिया गया है) लेकिन भावार्थ में उसने ''कोई कोई'' कर दिया. इससें पूरी बात का अर्थ ही बदल गया. जहां उसने शब्दार्थ भी गलत किए हैं वहां हमने आप्टे कृत संस्कृत शब्दकोश का सहारा लिया है.

सर्वप्रथम तो उपरोक्त श्लोकों में ध्यान देने योग्य बात है कि इनमें कहीं भी ''आत्मा'' नाम का शब्द नहीं आया है. सत् असत् सें शुरू करके गीताकार देहि पर ही अटक जाता है. शेश गीता में भी आत्मा नाम का शब्द नहीं आया है. आत्म शब्द अगर कहीं आया है तो "Self" अर्थात ''स्वयं'' ''निज" के लिए आया है. अतः यथार्थ में गीता का आत्मा सें कोई लेना देना नहीं है. लेकिन ब्राह्मणवादियों ने इस देहि को ही आत्मा बना दिया है.

गीता में दिये गए आत्मा के इन सिद्धांत को दो कसौटियों पर परखा जा सकता है:

1. **संदर्भ की कसौटी पर**
2. **सत्यता की कसौटी पर**

1. **संदर्भ की कसौटी पर:** गौतम बुद्ध का कथन है कि कोई भी बात तब तक सत्य नहीं मानी जा सकती जब तक कि उसे सत्य सिद्ध न किया जाए. किसी भी बात अथवा सिद्धांत की सत्यता परखने के लिए यह जानना जरूरी होता है कि वह बात अथवा सिद्धांत को कब, कहां और क्यों प्रतिपादित किया गया. समय और स्थान के अनुसार सिद्धांत की एप्लीकेशन में अंतर आता है.

उदाहरणतः ''सदा सत्य बोलना चाहिए, झूठ कभी नहीं'' एक सर्वमान्य सिद्धांत है. कोई भी धर्म सदा सत्य की जगह, सदा झूठ बोलने की शिक्षा नहीं दे सकता. लेकिन यह सिद्धांत भी हर जगह पर अपनाया नहीं जा सकता. समय और स्थान के अनुरूप यह सिद्धांत भी सत्य अथवा झूठा हो सकता है. अगर कोई सैनिक अधिकारी दुश्मनों के कब्जे में आ जाए तो वह वहां सभी कुछ सत्य नहीं बता सकता कि कौन सा हथियार कहां रखा है अथवा सेना की रणनीति क्या है आदि.

ऐसे ही माना जाता है कि सुबह की सैर और कसरत लाभदायक होती है लेकिन यह सिद्धांत भी सभी के लिए सत्य नहीं है. जो आदमी बुखार सें पीड़ित हो अगर वह सैर को जाएगा तो और ज्यादा बीमार हो जाएगा. सुबह के समय गहरी धुन्ध में घूमने सें दमा और अधिक बढ़ जाता है. ऐसे ही किसी मरियल व्यक्ति को ''पहलवान'' कह कर संबोधन करने का अर्थ यह नहीं हो जाता कि वह व्यक्ति वास्तव में ही पहलवान है.

इसी तरह आत्मा और इसका सिद्धांत सत्य है अथवा नहीं इनको कसौटी पर परखने सें पहले यह जानना जरूरी है कि गीता में आत्मा का सिद्धांत कब, क्यों, कहां दिया गया.

एक पल के लिए अगर महाभारत की कथा को सत्य मान लिया जाए तो गीता उन बातों का संग्रह है जो कृश्ण ने अर्जुन सें तब कहीं जब उसने धन के लिए अपने गुरू, दादा, मामा नाना भाई भतीजों को मारने सें इन्कार कर दिया था. अर्जुन ने अपने सगे सम्बंधियों के खून सें सने धन को प्राप्त करने की जगह भीख माँग कर जीना अधिक उचित समझा था. कृश्ण के बार बार उकसाये जाने पर उसने यहां तक कह दिया था कि **हम सब** मिल कर महापाप करने जा रहे हैं. पता नहीं क्यों कृश्ण इस पूरे खानदान को नश्ट करने पर तुला हुआ था. उसने अर्जुन को लड़ने मरने को उकसाया. स्वर्ग तथा राजभोग का लालच भी दिया. इसी कड़ी में उसने आत्मा का पैंतरा भी अपनाया. उसने अर्जुन सें कहा कि असली चीज तो देहि (आत्मा) है, शरीर तो तुच्छ है. वह जिसे भी मारेगा केवल शरीर मारेगा. आत्मा न जन्म लेती है, न मरती है, न घिसती है और न ही आग पानी हवा सें प्रभावित होती है. शरीर ने तो वैसे भी मर ही जाना है इसलिए तू ही मार दे.

गीता का तथाकथित ज्ञान एक गुरू द्वारा शिश्य को दिया गया ज्ञान नहीं है बल्कि यह तो अर्जुन को लड़ाई करने के लिए उकसाये जाने की बातें मात्र हैं. कृश्ण ने उपरोक्त 15 श्लोकों में जो कुछ कहा उसका ध्येय अर्जुन को ज्ञान देना नहीं था बल्कि येन केण प्राकरेण उसे लड़ाई की आग में झोंकना मात्र था. उपरोक्त समस्त श्लोकों का सार मात्र इतना ही है कि लड़ाई में किसी को मार देने सें मात्र उसका शरीर मरता है. आत्मा पर हथियार का असर नहीं होता. अतः जब लड़ाई का अवसर आ जाए तो मरने और मारने सें बिल्कुल भी नहीं झिझकना चाहिए.

कृश्ण ने न कभी इस घटना सें पहले और न कभी इस घटना के बाद अर्जुन सें ''आत्मा" के बारे मे बातें कीं. मात्र लड़ाई करवाने की नीयत सें उसने गीता के 700 श्लोक बोले. लड़ाई करवाने की लालसा के कारण जो अनाप शनाप उसके मन में आया उसने कह डाला. इसीलिए ब्राह्मणवाद के महान समर्थक राधाकृश्णन् को भी यह कहना पड़ा कि गीता बड़ी असंगत सी पुस्तक है.

उपरोक्त 15 श्लोकों में भी उसने ऐसी ही असंगत बातें की हैं. श्लोक 2.24 में वह आत्मा को ''सर्वगत" और ''अचल" दोनों एक साथ बता देता है. कोई भी वस्तु ''सर्वगत" अर्थात हर जगह जाने वाली और ''अचल" अर्थात अपनी

जगह सें न हिलने वाली, एक साथ कभी नहीं हो सकती!! जो अचल है वह कहीं जा नहीं सकती और जो हर जगह जाने वाली है वह अचल नहीं हो सकती. लगता है अर्जुन द्वारा लड़ने सें इंकार करने पर कृश्ण के दिमाग पर गहरा आघात लगा. तभी वह ऐसी बहकी बहकी बातें करने लग गया. इसी कड़ी में अपने मन की बात साफ करते हुए वह बोला (2.26) हे अर्जुन, अगर तू आत्मा को शरीर की तरह ही जन्म लेने वाला और मरने वाला मानता है तो भी तू सामने खड़े तेरे सम्बंधियों को मार दे क्योंकि जिस ने जन्म लिया उसने मरना तो है ही. इसलिए उन्हें तू ही मार दे.

अतः संदर्भ के लिहाज सें कृश्ण का एकमात्र उद्देश्य अर्जुन के हाथों उसके गुरू, दादा व अन्य रिश्तेदारों को मरवाना था. इसीलिए जब आत्मा के विशय में किये गए अनर्गल भाशण का अर्जुन पर कोई असर न हुआ तो वह तुरंत बोला हे अर्जुन क्षत्रिय के लिए लड़ने मरने के अवसर बहुत कम आते हैं. अतः जब भी लड़ने मरने के अवसर मिले उन्हें खोना नहीं चाहिए क्योंकि उस समय स्वर्ग के दरवाजे खुल जाते हैं. अतः अगर लड़ाई में मर गया तो स्वर्ग जाएगा और अगर जीत गया तो यहां ऐश करेगा.

"आत्मा" पर की गई अनर्गल वार्ता असफल होते देखकर कृश्ण ने उसे यहां तक कह दिया कि अगर वह नहीं लड़ेगा तो लोग उसे कायर कहेंगे और कायर कहलवाने सें तो मरना ही अच्छा है. और अगर उसने बिना सोचे समझे लड़ाई में अपने गुरू, दादा आदि को मार भी दिया तो भी उसे पाप नहीं लगेगा. (2.34–38)

उपरोक्त सारे श्लोक कहने का कृश्ण का एक ही मकसद था कि किसी तरह सें भी अर्जुन अपने रिश्तेदारों को मारने के लिए तैयार हो जाए. वह बार बार अर्जुन को समझा रहा था कि शरीर को तो कभी न कभी मरना ही है आत्मा कभी नहीं मरेगी. उस पर किसी हथियार का असर नहीं होगा अतः अगर वह अपने रिश्तेदारों को मार भी देगा तो भी उनकी आत्मा तो मरेंगी नहीं शरीर ने तो देर सवेर वैसे भी मर जाना है अतः तू ही मार दे. फिर आत्मा तो बुढ़े शरीरों को त्यागना ही है अगर तेरे मारने सें त्यागेगी तो उसे उन्हें जल्दी सें नया शरीर मिल जाएगा.

कृश्ण ने सोची समझी चाल के तहत यह कहा कि आत्मा बूढ़े हो चुके शरीरों को त्याग कर नये नवेले शरीर धारण कर लेती है और अगर वह अपने बुजुर्ग रिश्तेदारों को मारेगा तो उसे पाप नहीं लगेगा. कृश्ण द्वारा ऐसा कहने का मकसद था कि अर्जुन को ऐसा लगे कि अगर वह अपने बुजुर्ग रिश्तेदारों को मारेगा तो वह पाप करने की बजाए पुण्य का काम करेगा क्योंकि ऐसा करने पर उसके बुजुर्गों की आत्माओं को नए नवेले शरीर मिल जाएंगे. अर्जुन द्वारा हथियार पटकने का एकमात्र कारण यही था कि वह अपने बुजुर्ग हो चुके गुरू, दादा, मामा, नाना आदि को नहीं मारना चाहता था. अर्जुन अपने उस दादा की हत्या नहीं करना चाहता था जिसकी गोद में बैठ कर वह इतना बड़ा हुआ था. नही वह अपने गुरू द्रोण को मारना चाहता था जिसने उसे सर्वश्रेश्ठ धनुर्धर बनाने के लिए वीर एकलव्य का अंगूठा काट लिया था. अर्जुन कृत्घन नहीं बनना चाहता था. लेकिन उसकी एक न चली.

गीता में एक भले आदमी के हाथों उसके सगे सम्बंधियों को मरवाने की साजिश के मन्त्र हैं. जैसे सम्राट अशोक को सही राह दिखाने वाले बौद्ध भिक्षु मिल गये थे अगर ऐसा ही कोई अर्जुन को मिल गया होता तो लाखों नर नारियों की जान बच गई होती. गीता का भड़काऊ भाशण देकर कृश्ण ने वर्शों बाद सही राह पर आए अर्जुन को पुनः पाप के मार्ग पर धकेल दिया.

सत्यता की कसौटी पर : जिन हालातों में अथवा जिस संदर्भ में कृश्ण ने अर्जुन सें गीता में वर्णित बातें कहीं उससें तो यही जाहिर अथवा स्पश्ट होता है कि कृश्ण का एक मात्र उद्देश्य अर्जुन को युद्ध की आग में झोंकना था. उसका अर्जुन को ज्ञान देने जैसा कतई इरादा न था. कृश्ण बस इतना चाहता था कि अर्जुन लड़ने मरने को तैयार हो जाए आत्मा को चाहे माने या न माने कृश्ण को कोई अंतर नहीं पड़ता था. इतना ही नहीं बल्कि जो कुछ उसने "आत्मा" के बारे में कहा, उसमें भी कहीं कोई सच्चाई नहीं है. इस तरह सें कृश्ण ने न केवल अनुचित समय पर बातें कहीं बल्कि झूठ बातें भी कहीं.

गीता के उपरोक्त श्लोकों में आत्मा के विशय में निम्नलिखित सिद्धांत दिये गए हैं:

1. आत्मा जो कि सारे शरीर में व्याप्त है उसे कोई नहीं मार सकता.
2. आत्मा अविनाशी है. यह न जन्म लेता है न मरता है. (तो यह आत्मा शरीर में घुसती किधर सें है और निकलती किधर सें है. अगर 9 द्वारों सें आना जाना है तो कभी भी निकल जानी चाहिए तथा कभी भी वापिस आ जानी चाहिए.)
3. शरीर के मारे जाने पर भी आत्मा नहीं मारी जाती.
4. जैसे मनुश्य फटे पुराने कपड़े उतार कर नए कपड़े पहन लेता है वैसे ही आत्मा जीर्ण शरीर त्याग कर नवीन शरीर धारण कर लेता है. (इस श्लोक में कोरी बकवास की गई है. अगर जैसे मनुश्य जीर्ण होने पर कपड़े बदलता है वैसे ही आत्मा जीर्ण होने पर शरीर का त्याग करती है तब तो कोई भी जवान मरना ही नहीं चाहिए था. कोख सें जन्म लेते ही बच्चा बिल्कुल नवीन शरीर वाला होता है मगर फिर भी अनेकों बच्चे जन्म लेते ही मर जाते हैं. उनका शरीर जीर्ण तो क्या पुराना भी नहीं हुआ होता है. और ऐसे भी असंख्य उदाहरण हैं जहां लकवा मारा व्यक्ति कई

बरसों तक बिस्तर पर पड़ा रहता है मगर उसके शरीर सें आत्मा नहीं निकलती. हर गली मौहल्ले में ऐसे अनेकों वृद्ध मिल जाएंगे जो उठने बैठने सें भी लाचार होते हैं उन्हें आंखों सें दिखता नहीं कानों सें सुनता नहीं मगर बरसों तक उनकी आत्मा शरीर सें नहीं निकलती. और वीर लाल बहादुर शास्त्री जैसे भी होते हैं कि रात को स्वस्थ सोते हैं मगर सुबह मृत पाए जाते हैं.)

5. आत्मा पर किसी अस्त्र, आग, पानी, हवा का कोई असर नहीं होता.

6. (आज 14अक्तूबर 2005 है. 49 साल पहले बाबा साहिब ने नागपुर में धम्मचक्र चलाया था) यह **सर्वगत**, अविकारी और **अचल** है.

7. हर कोई आत्मा के बारे में सुन कर हैरान होता है लेकिन कोई भी इस के बारे में समझ नहीं पाया है.

8. जो आत्मा को अविनाशी, स्थाई और पुरातन मानता है अगर वह किसी को मार दे अथवा मरवा दे तो भी उसने न किसी को मारा है और न ही किसी को मरवाया है क्योंकि आत्मा तो मर नहीं सकती.

9. अगर कोई आत्मा को शरीर की तरह बार बार जन्म लेने वाला और बार बार मरने वाला मानता है तो भी उसे इसके बारे में चिन्ता नहीं करनी चाहिए क्योंकि जो जन्मा है उसने मरना तो है ही. अतः लड़ाई में किसी को मार देने सें कोई अन्तर नहीं पड़ता है.

10. अगर कोई ऐसा माने कि आत्मा जन्म लेने वाला तथा मरने वाला है तो भी उसे लड़ने मरने सें नहीं झिझकना चाहिए क्यों कि अगर आत्मा लड़ाई में नहीं मरी तो भी वैसे भी तो उसे मर ही जाना है.

महाभारत, कृशण अर्जुन आदि सत्य हों या न हों लेकिन यह शत प्रति शत सत्य है कि सदियों सें ब्राह्मण गीता के इसी पाखण्ड की आड़ में दोनों हाथों सें सुरा, सम्पत्ति और स्त्री का भोग करते आ रहे हैं. ब्राह्मणों के सारे कर्मकांडों की जड़ आत्मा ही है. ब्राह्मणवाद सें ''आत्मा'' का पाखण्ड निकल जाए तो शेश कुछ बचेगा ही नहीं. उनकी रोजी रोटी ही समाप्त हो जाएगी. अस्तु.

इन श्लोकों पर टिप्पणी करने सें पहले यह बताना भी उचित है कि इन श्लोकों का अर्जुन पर कोई असर न हुआ. उसने अपनों को मारने के लिए हथियार न उठाए. इसलिए अगले कुछ श्लोकों में कृशण ने उसे नपुंसक क्षत्रिय होने का ताना भी दिया. युद्ध करने पर धरती का राज्य अथवा स्वर्ग मिलने का लोभ भी दिया. अतः कृशण द्वारा आत्मा पर भाशण देने का असली उद्देश्य मात्र इतना ही था कि अर्जुन किसी भी तरह सें युद्ध करने और अपनों को मारने के लिए तैयार हो जाए. कृशण का अर्जुन को ज्ञान देने का कतई कोई उद्देश्य न था.

गरूड़ पुराण कहता है कि मरने के बाद आत्मा 10 दिन तक घर में ही रहती है.(समु 1.28) लेकिन कृशण कहता है कि जैसे आदमी कपड़े बदलता है, आत्मा भी वैसे ही एक शरीर सें निकल कर दूसरे शरीर में घुस जाती है. ( )
यजुर्वेद (अ.39 मंत्र 5,6) के अनुसार आत्मा एक शरीर सें निकल कर इधर उधर घूम कर दूसरे शरीर में प्रवेश करता है. इस श्लोक पर दयानंद ने अपनी व्याख्या इस प्रकार सें दी हैः एक शरीर सें निकल कर आत्मा को पहले दिन में सूर्य, दूसरे दिन में अग्नि, तीसरे दिन में वायु, चौथे दिन में महीना, पांचवे दिन में चन्द्रमा, छठे दिन में वसन्त आदि ऋतु, सातवें दिन में मनुश्य आदि प्राणी, आठवें दिन में सूत्रात्मा वायु, नौवें दिन में प्राण, दसवें दिन में उदान, ग्यारहवें दिन में बिजली तथा बाहरवें दिन में सब दिव्य गुण प्राप्त होते हैं. तब आत्मा अपने कर्मों के अनुकूल गर्भाशय में जाकर शरीर धारण करके जन्म लेती है. (यजु. भाश्य)

वृहदारण्यक उपनिशद (अ.4 ब्रा.4) के अनुसार जैसे घास का जलायुका (एक प्रकार का कीड़ा) एक तिनके सें दूसरे तिनके पर जाने के लिए पहले तिनके के अंतिम छोर पर पहुंच कर दूसरे तिनके पर अगले पांव जमाने के बाद पिछले तिनके को छोड़ता है, उसी प्रकार आत्मा एक शरीर को तभी छोड़ती है जब वह दूसरे नये शरीर का आश्रय ग्रहण कर लेती है.

इन दोनों में सें कौन झूठा है, कौन सच्चा, कोई नहीं जान सकता! क्योंकि न तो किसी ने आत्मा को 12 दिन घूमते देखा है और न ही किसी ने उसे जलायुका की तरह एक तिनके सें दूसरे तिनके पर पैर जमाते देखा है. हर ब्राह्मण अपनी अपनी हांक रहा है या अपने भगवानों सें हंकवा रहा है.

कर्म का सिद्धांत

गीता के बारे में जो सर्वाधिक प्रचारित बात है वह है इस में सें निकाला गया कर्म का सिद्धांत. गीता रचियता ने ऐसा कोई कर्म का सिद्धांत देने की कोशिश नहीं की थी जैसा कि ब्राह्मणवादी लोग उसमें सें अर्थ निकालते हैं. वास्तव में, अगर महाभारत को सच माना जाए तो अर्जुन ने जूए की सम्पत्ति की खातिर अपने गुरू, भाई बन्धुओं व अन्य रिश्तेदारों को मारने सें इन्कार कर दिया था तब कृशण ने उसे बरगलाने की कोशिश में यह बात कही थी कि उसे अपना काम (क्षत्रिय होने के कारण लोगों सें लड़ाई) करना चाहिए, फल चाहे कुछ भी हो, उसकी चिन्ता नहीं करनी चाहिए.

कर्म के सिद्धांत की जो व्याख्या तिलक जैसे लोग करते हैं वह बिलकुल वैसे ही है जैसे एक प्रसिद्ध ब्राह्मण कवि के बारे में कथा बताई जाती है. कथा है कि एक राजकुमारी को शास्त्रार्थ करने का शौक था. उसने शास्त्रार्थ में अनेकों बार ब्राह्मणों को हरा दिया था. हारे हुए ब्राह्मणों ने उससें बदला लेने के लिए एक मूर्ख ब्राह्मण कवि को पकड़ा. उससें कहा गया कि अगर वह बोले नहीं तो उसे भरपेट लड्डू खाने के लिए दिये जाएंगे तथा राजकुमारी सें शादी भी करवा दी जाएगी. ब्राह्मण कवि राजी हो गया. राजकुमारी सें कहा गया कि पंडित का मौन व्रत है अतः वह बोलेगा नहीं बल्कि इशारों सें बात बताएगा. शास्त्रार्थ शुरू करते हुए राजकुमारी ने एक अंगुलि उठाई कि परमात्मा एक है. पंडित ने सोचा कि वह उसकी एक आँख फोड़ना चाहती है. उसने बदले में दो अंगुलियां उठाईं कि वह उसकी दोनों आँखें फोड़ देगा. पंडितों ने इसकी व्याख्या दी कि चाहे भगवान एक है लेकिन संसार में अच्छाई और बुराई दो शक्तियां हैं. राजकुमारी ने तीन अंगुलियां उठाईं कि ऐसे तो तीन तत्व हैं– सत्व, रजस एवं तमस. मूर्ख पंडित ने फिर सें तीन की बजाए चार अंगुलियां उठादीं कि अगर वह तीन मारेगी तो वह चार मारेगा. पंडितों ने व्याख्या दी कि चाहे तत्व तीन हैं लेकिन महाभूत चार हैं– पृथ्वी, जल, अग्नि और वायु. राजकुमारी ने पाँचों अंगुलियां दिखाई कि इन चार महाभूतों के अतिरिक्त चेतना भी आवश्यक है. मूर्ख पंडित ने सोचा कि वह उसके थप्पड़ मारना चाहती है. अतः उसने घूंसा तान दिया. पंडितों ने व्याख्या दी कि चाहे ये पाँच तत्व हैं लेकिन जब तक यह इक्कठे न हों प्राणी का निर्माण नहीं होता. इस व्याख्या के आगे राजकुमारी ने अपनी हार स्वीकार कर ली.

कुछ ऐसी ही व्याख्या गीता के सिद्धांतों विशेशतः कर्म के सिद्धांत की की जा रही है. **गीता में निश्काम भाव सें काम करने की बात कहीं नहीं कही गई है.** बल्कि कृश्ण ने तो स्पश्ट कहा कि हे अर्जुन तू लडाई कर. अगर जीत गया तो हस्तिनापुर का राज मिलेगा और अगर मारा गया तो स्वर्ग मिलेगा. (2.37) निश्काम भाव अथवा बिना फल की इच्छा के काम करने की बात पूरी गीता में कहीं नहीं मिलती. हां, बिना सोचे समझे अथवा बिना फल की परवाह करने की शिक्षा अवश्य मिलती है. यह व्याख्या तो घूंसे को ''पाँच तत्वों का संगम'' बताने वाली बात के समान है.

गीता सें निकाले गए कर्म के सिद्धांत की विवेचना के लिए इन तथ्यों को भी जानना आवश्यक है कि कृश्ण ने यह बात कब, कहां और किस संदर्भ में कही.

इस सच्चाई को सभी जानते हैं कि महाभारत की कथा के अनुसार पांडव हद दर्जे के जुआरी थे. एक बार कौरवों के साथ खेले गए जूए में धर्मराज कहा जाने वाला युद्धिश्ठर अपना सब कुछ हार गया. वह न केवल अपने हिस्से का राज्य हारा बल्कि अपने भाईयों और छोटे भाई की पत्नि द्रोपदी तक को भी जूए में हार गया. कुंती शायद कहीं दूसरे गांव गई होगी या फिर बुढापे में उसकी ज्यादा कीमत न रही होगी वर्ना धर्मराज उसे भी दांव पर लगाने का धर्म अवश्य कमा लेता. राज्य हार जाने के कारण पांडवों को बनवास जाना पड़ा. बनवास की शर्त पूरी होने पर उसने आकर राज्य में अपना हिस्सा मांगा. उसकी यह मांग अनुचित थी. अतः पूरे कुनबे में किसी ने भी युद्धिश्ठर की मांग का समर्थन न किया. (गीता 1.34) यहां तक कि पांडवों के दादा, मामा, ससुर, पौत्रों, सालों तक ने भी युद्धिश्ठर का विरोध किया. और तो और पांडवों का मामा भी उनके साथ न लगा बल्कि वह भी कर्ण का सारथी बन कर कौरवों की ओर सें लड़ा. मात्र कृश्ण ने इन जुआरिओं का पक्ष लिया.

जब अर्जुन युद्ध के मैदान में आया और उसने अपने कुकृत्य के विरोध में अपने गुरू, मित्रों भाईयों व रिश्तेदारों को हथियार लिए खड़ा देखा. उसने सोचा कि जिस गुरू के चरणों में बैठ कर उसने विद्या अर्जित की है, जिन दोस्तों के साथ खेला कूदा है, जिन रिश्तेदारों के साथ मिल बैठ कर जिंदगी के सुख दुख बांटे हैं, क्या उन्हें कुछ रूपयों की खातिर मार देना उचित होगा!! (गीता प्रथम अध्याय). ऐसी स्थिति में एक सच्चे और सीधे सादे इन्सान का अन्तःकरण जो निर्णय लेता वही निर्णय अर्जुन ने लिया. उसने जूए में हारे धन की खातिर अपने किसी यार दोस्त भाई बन्धु गुरू चाचा ताया दादा आदि का खून बहाना उचित नहीं समझा. अर्जुन को लगा कि अगर वह धन, सम्पत्ति अथवा राज्य के लिए अपनों ही को मारेगा तो उसे पाप लगेगा तथा उसे और उसके परिवार वालों को नरक में जाना पड़ेगा. (1.38 सें 47) अतः उसने अपनों के खून सें सने धन को प्राप्त करने सें इन्कार कर दिया. (2.5) अर्जुन ने यहां तक कहा कि ''सचमुच यह हम सबने (पांडव और कृश्ण ने) एक बड़ा पाप करने की योजना की है.'' (1.44) (गीता रहस्य 616) अतः वह धनुश पटक कर रथ में पीछे बैठ गया.

महाभारत के पाँडव पक्ष वाले पात्रों में सें अर्जुन सबसें कम दुश्ट तथा कमीना पात्र है. उसके मन में थोड़ी बहुत मानवीयता उपजी थी जिसे भी कृश्ण ने गीता के उपदेश तले रौंद डाला. परिणामस्वरूप उस कृश्ण ने एक जुआरी परिवार के हाथों दूसरे लाखों जुआरिओं को मरवा दिया. **उनकी लड़ाई में धर्म का कहीं कोई मसला ही नहीं था. वे मात्र और मात्र जूए में हारे धन को लेकर लड़े थे.**

वास्तव में अर्जुन द्वारा ऐसे हथियार रखने सें कृश्ण को अपना बना बनाया खेल बिगड़ता नजर आया. उसे आशंका हुई कि अगर कौरव पांडव फिर सें एक हो गये तो उसकी तो चौधराहट ही समाप्त हो जाएगी. उसे बरसों का बना बनाया पलान एक पल में चौपट होता नजर आया. ऐसा लगता है अर्जुन की समझदारी व भलमानसत की बातों ने कृश्ण के दिमाग को जोरदार झटका दिया. जिस कारण वह पागलों की तरह अनाप शनाप बकने लगा. इसीलिए गीता

में परस्पर विरोधी बातें भरी पड़ी हैं. इन्हीं अनाप शनाप बातों के कारण ही ब्राह्मणवाद के एक प्रमुख लेखक और भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपति डा. राधाकृश्णन को भी कहना पड़ा कि गीता बड़ी असंगत सी पुस्तक है. कृश्ण के दिमाग पर हर हालत में कौरवों तथा पांडवों के बीच लड़ाई करवाने का भूत सवार था. इसलिए उस ने अर्जुन को युद्ध करने के अनगिनित बहाने सुझाए, अनेकों पैंतरे अपनाए. उन्हीं बहानों में से एक बहाना ''अपना काम करो'' का भी था जिसे ब्राह्मणवादी लेखकों ने आज के समय में कर्म का सिद्धांत बना दिया है.

उसने अर्जुन को कई प्रकार के प्रलोभन दिये लेकिन अर्जुन फिर भी धन के लिए अपनों को खून बहाने को राजी न हुआ था. कृश्ण ने अर्जुन सें कहा :

1. कि तू समझदारों के जैसी बातें न कर बल्कि युद्ध कर. (2.11)
2. कि अगर तू लड़ाई में अपने स्वजनों को मारेगा तो मात्र उनके शरीर मरेंगे. उनकी आत्मायें नहीं मरेंगी. वे नया शरीर धारण कर लेंगी. अतः तू उन्हें मारने (उनकी हत्या करने) का गम न कर. (2.18 सें 22)
3. कि अगर तू आत्मा को अमर नहीं मानता तो भी तू अपने स्वजनों को मार दे क्योंकि जो जन्मा है उसे एक न एक दिन तो मरना ही है. अतः तू ही मार दे.(2.26 सें 28)
4. कि मैं भगवान हूँ. इसलिए मेरी बात मान ले और युद्ध कर ले.
5. कि ''मैं'' भगवान हूँ और तेरे स्वजनों की मौत तो पहले ही तय कर चुका हूँ. तूने तो उन्हें मारने का दिखावा मात्र ही करना है. अतः तू उन्हें मार दे. अगर तू नहीं मारेगा तो उन्हें मैं मार दूंगा. (11.32–33)
6. कि तू क्षत्रिय है. अतः लड़ाई करना तेरा धर्म है. अतः तू लड़ाई करके अपने स्वजनों को मार दे. उन्हें नहीं मारेगा तो अधर्म होगा और तुझे पाप लगेगा. (2.31 सें 32)
7. कि तू वीर है, योद्धा है. इसलिए युद्ध के मैदान में आकर बिना मरने अथवा मारने के लौटने सें तेरी बेइज्जती होगी, अपयश होगा. ऐसी बेइज्जती सें तो अपनों को मारना ही अच्छा है. (2.33 सें 34)
8. कि अगर तू लड़ाई में जीत गया तो यहां राज करेगा, ऐश्वर्या (ऐयाशी) भोगेगा और अगर मारा गया तो स्वर्ग में अप्सराओं (वेश्याओं) के साथ ऐयाशी करेगा. (2.37)
9. कि तू मेरा स्मरण करता हुआ युद्ध कर. ऐसा करने पर तू मुझे (भगवान) को पा लेगा. (8.7)
10. कि निराश होकर निर्ममता पूर्वक युद्ध कर. 3.30
11. कि जब जब धर्म (जूए) की ग्लानि होती है, मैं अवतार लेता हूँ. (4.8) अतः मेरे कहने सें युद्ध कर.
12. कि तू वेदों के तुच्छ ज्ञान को छोड़ दे. वेदों का ज्ञान इतना ही लाभकारी है जितना चारों ओर पानी ही पानी होने पर कूंआ लाभकारी होता है. (2.42 सें 46) तिलक 635

ब्राह्मणवादी लेखकों ने गीता के श्लोक 2.47 में सें कर्म के सिद्धांत निकाला है. कृश्ण ने जैसे अन्य पैंतरे अर्जुन पर आजमाए, उसी तरह यह बात भी एक पैंतरे के तौर पर अर्जुन पर अपनाई थी. लेकिन ब्राह्मणवादी लेखकों ने ''घूंसे'' को ''पाँच तत्व'' बना दिया है. औरों की तो छोड़ो स्वयं अर्जुन ने भी इस पैंतरे वाले श्लोक को एक कान सें सुन कर दूसरे सें बाहर निकाल दिया. कृश्ण अपनी हांकता रहा. अर्जुन को उसकी बात कतई ध्यान देने योग्य लगी ही नहीं. उसके तथाकथित कर्म के सिद्धांत को दरकिनार करते हुए वह बोला मुझे यह बताओ कि स्थितप्रज्ञ क्या होता है? (2.54)

अर्जुन ने इस प्रश्न का प्रयोग बिल्कुल इस तरह सें किया जिस तरह हम अकसर ढीठ सेल्समैन सें पीछा छुड़ाने के लिए करते हैं. हमारे साथ ऐसा कई बार होता है कि कोई सेल्समैन अपनी वस्तु बेचने के लिए कई तरह के बहाने बनाता है. जबकि हमें उस चीज की आवश्यकता नही होती. तब हम उससें पीछा छुड़ाने के लिए ऐसा कोई प्रश्न करते हैं जिससें उसे लगे कि हमें उसकी बातों में कोई दिलचस्पी नहीं है और वह हमारा पीछा छोड़े. अर्जुन ने भी पीछा छुड़ाने के लिए ऐसा ही प्रश्न पूछा.

गीता सें निकाले गए इस कर्म के सिद्धांत को तीन कसौटियों पर परखा जा सकता है:–

1. **हालात की कसौटी पर**
2. **सत्यता की कसौटी पर**
3. **गीता की कसौटी पर**

1. **हालात की कसौटी पर :** सभी जानते हैं कि पाँडवों और कौरवों में भयंकर जूआ खेला गया था. इस जूए में पाँडव अपना सब कुछ हार गये थे – धन दौलत जमीन जायदाद यहां तक कि अपनी पत्नि द्रौपदी तक को जूए में हार गए. कौरवों ने द्रोपदी तो उसी समय लौटा दी थी लेकिन जूए में जीती सम्पत्ति लौटाने सें इंकार कर दिया था. जूए में हारी सम्पत्ति वापिस मांगने का पाँडवों का कोई हक नहीं बनता था और न ही कौरवों द्वारा लौटाने का कोई औचित्य था. लेकिन कृश्ण की शह पर पाँडव बार बार जूए में हारी सम्पत्ति वापिस मांगते रहे. उनकी इस अनुचित मांग का सभी रिश्तेदारों भाई बन्धुओं ने विरोध किया परन्तु पाँडवों ने जिद्द नहीं छोड़ी. अंततः नौबत लड़ाई की आ गई. इस लड़ाई में

सभी रिश्तेदार भाई बन्धु हथियार लेकर पाँडवों के विरोद्ध में डट गए. कृश्ण ने पाँडवों की तरफ सें अनेकों लोगों की मिन्नतें की कि वे पाँडवों का साथ दें मगर किसी ने भी पाँडवों की अनुचित मांग का समर्थन नहीं किया.

अतः जब अर्जुन युद्ध के मैदान में आया तो उसने देखा कि उनकी अनुचित मांग के विरोध में उसके सारे यार मित्र, गुरू, दादा, मामा, ससुर, साले व अन्य रिश्तेदार सामने हथियार लिए खड़े हैं. अपने समस्त रिश्तेदारों को अपने विरोध में खड़ा देखकर अर्जुन को अपनी गलती का आभास हुआ. उसे महसूस हुआ कि युद्ध में अधिकतर जवान पुरूश मारे जाएंगे. और क्योंकि ब्राह्मण–धर्म में 10 पुत्र पैदा करना अनिवार्य हैं अतः उसके कुल की बहू बेटियों को गैर मर्दों सें पुत्र पैदा करने पड़ेंगे जिससें वर्ण संकर सन्ताने पैदा होगी और इस तरह कुल–धर्म का नाश हो जाएगा. जो पाप वह करने जा रहा था उसकी भयावह कल्पना करके उसका मन आत्मग्लानि सें भर गया. उसकी अन्तरात्मा चीत्कार कर उठी. अतः उसने कृश्ण को अपनी अन्तरात्मा की आवाज सुना दी. वह बोलाः

''अहो बत महत्पापं कर्तुं व्यवसिता वयम् !
यद्राज्यसुखलोभेन हन्तुं स्वजनमुद्यताः !! (1.44)

ओह! कितनी अफसोस की बात है कि हम सब (एक्सप्लेन इट) ने यह महापाप करने का निश्चय किया है. क्योंकि राज्यसुख भोगने के लालच में हम अपनों की ही हत्या करने को तत्पर हो गए हैं.

कृश्ण बोला ऐसी (अपनों को मारने में) कायरता मत दिखलाओ. तब अर्जुन ने अत्यंत मार्मिक शब्द कहे. वह बोला कि अपने दादा व गुरू जैसे बुजुर्गों को मार कर राज्यसुख भोगने सें तो अच्छा है कि आदमी भीख माँग कर गुजारा कर ले! अपनों की हत्या करके जो भोग की वस्तुएं हम जीतेंगे वे सब अपनों के ही खून सें सनी होंगी. ऐसे रक्त रंजित भोगों को कौन सभ्य पुरूश भोग सकता है. मात्र एक गांव का राज्य तो क्या सारी धरती का राज्य भी अपनों की हत्याओं के गम को दूर नहीं करने में समर्थ नहीं है!! (2.4 सें 2.9) इतना कह कर अर्जुन ने अपना धनुश पटक दिया और चुप होकर एक ओर बैठ गया.

अर्जुन ने जो कुछ आभास किया और जो कुछ वह बोला, दुनिया के किसी भी सभ्य परिवार वाले व्यक्ति को यही बोलना चाहिए था. आम भाशा में जिसे "आँख की शर्म'' कहा जाता है, अर्जुन को उसी का आभास हुआ था. पारिवारिक जीवन में अनेकों बार ऐसे प्रसंग आते हैं जब कोई रिश्तेदार किसी अनुचित बात पर अड़ जाता है. ऐसी स्थिति में उसे सद्बुद्धि देने के लिए हम उसके जान पहचान वाले किसी बुर्जुग को उसके पास लेकर जाते हैं ताकि वह उसकी शर्म मान कर अपनी अनुचित मांग छोड़ दे. अर्जुन के साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ. उसने भी जब अपनी अनुचित मांग के विरोध में अपने सामने अपने बड़े बुजुर्गों को डटे देखा तो उसे भी उसी सद्बुद्धि का बोध हुआ. उसे अपनी गलती का एहसास हो गया. वह आत्मग्लानि में डूब गया. उसके हाथ पैर फूल गए. अपने विरोध में अपनों को ही सामने खड़ा देखकर हर किसी सभ्य सरल व्यक्ति सें जिस व्यवहार की आशा की जाती है, बिल्कुल वैसा ही व्यवहार अर्जुन ने किया. जो व्यक्ति अपने बड़ों का आदर करता है उनके प्रति वह यही बात कहेगा. सभ्य समाज में सभी लोग ऐसा ही करते हैं. इसी कारण सें ही सभ्य समाज अपना अस्तित्व बनाए हुए है. मानवों में ही नहीं पशुओं तक में भी अपनों सें बड़ों का आदर करने, उनकी बात मानने की प्रवृति होती है. अतः अर्जुन ने अपने बुजुर्गों को मार कर धन प्राप्त करने की अपनी अनुचित मांग छोड़ने का निश्चय कृश्ण को बता दिया. (2.4 सें 2.9)

कृश्ण ने बरसों सें युद्ध का जो ताना बाना बुना था वह सब उसे एक पल में तहस नहस होता नजर आया. उसने अर्जुन को युद्ध के लिए उकसाना शुरू कर दिया. उसे हर तरह सें डराया धमकाया. हर तरह के लालच दिये. इन्हीं धमकियों में एक धमकी अकर्मणा न होने की भी थी. **कृश्ण बोला 'हे अर्जुन तेरा कर्म करने पर अधिकार है और फल पर बिल्कुल नहीं. तथा तू अकर्मणा न रह तथा तू अपने आप को फल का कारण न समझ.**

जिन हालातों में अर्जुन ने अपने मित्रों सम्बन्धियों को मारने सें इन्कार किया था, उन हालातों में कृश्ण द्वारा यह कहा जाना कि वह अपना कर्म करे और कर्म करने सें न टले तथा परिणाम का कारण अपने आप को न समझे तो इस बात का सीधा सा अर्थ है :

1. कि किसी भी व्यक्ति को अपने रिश्तों की लिहाज शर्म में नहीं पड़ना चाहिए. धन अथवा राज्यसुख प्राप्त करने के लिए जो भी रास्ते में रूकावट बने उसे कत्ल कर देना चाहिए चाहे वह उसका पिता दादा गुरू आदि कुछ भी लगता हो! वस्तव में यही है गीता में कर्म का सिद्धांत!!

2. कि कोई भी कर्ता अपने आप को उस कर्म के फल अथवा परिणाम का कारण (अर्थात करने वाला) न समझे. कृश्ण के कहे अनुसार अगर अर्जुन अपने दादा, गुरू, बच्चों आदि का कत्ल करता है तो वह अपने आप को उनके कत्ल का कारण (अथवा कत्ल करने वाला) न समझे. जब कर्ता किसी काम के फल का कारण ही नहीं है तो उस परिणाम अथवा फल को प्राप्त करने वाला भी नहीं है. अतः कृश्ण के अनुसार अर्जुन अगर धन के लिए अपनों को मारता है तो वह

उनके कत्ल का कारण नहीं है. जब वह कारण नहीं है तो वह कातिल भी नहीं है. और जब कातिल ही नहीं तो कत्ल का दोशी भी नहीं है.

3. अपनी इस बात को पक्का करने के लिए वह आगे कहता है कि कौरवों को वह पहले ही मार चुका है. अर्जुन अगर उन्हें मारेगा तो दिखावा मात्र करेगा.

4. विश्व में गीता एक मात्र किताब है जो धन के नाम पर अपने सगे सम्बनधियों को, अपने गुरूओं को कत्ल करना धर्म बताती है. दुनिया में कहीं भी किसी भी सभ्यता अथवा धर्म में ऐसी किताब नहीं है जो धन की खातिर अपनों को मारने का आदेश देती हो. मात्र और मात्र ब्राह्मणों की गीता ही एकमात्र ऐसा ग्रन्थ है जो ऐसा पाप करने को धर्म बताती है.

इस श्लोक में कृश्ण अर्जुन सें स्पश्ट कह रहा है कि वह अपने आप को फल का कारण अर्थात अपनों की हत्या का दोशी न समझे. अतः उसे बिना सोचे समझे इस महापाप को कर डालना चाहिए. उसका मात्र अपनों को मारने का अधिकार है. उनकी हत्या करने पर जो परिणाम होगा, उसका कारण वह नहीं है. और इन हत्याओं का वह कारण (दोशी) भी नहीं होगा. इसलिए कृश्ण उसे उकसाता है कि हे अर्जुन तू अपनों को मार डाल!!

कहा जाता है कि लकड़बग्घे सबसें निर्दयी हत्यारे अथवा शिकारी होते हैं परन्तु वे भी अपनों को नहीं मारते. कृश्ण ने तो उसे लकड़बग्घों सें भी बदतर कर्म करने की सलाह दे डाली. एक इन्सान सें उसी के बुजुर्ग, गुरू, भाई बन्धु मरवा दिए. अर्जुन ने इस महापाप सें बचने के बहुतेरे प्रयत्न किये मगर कृश्ण ने उसे अपने वाक् जाल सें निकलने न दिया. अंततः असहाय होकर उसने कृश्ण ने कहने सें वह पाप कर डाला जिसकी विश्व में कहीं और मिसाल नहीं मिलती. कृश्ण के उकसावे में आकर अर्जुन ने अपने उस दादा को मार दिया जिसके सामने वह कभी ऊँची आवाज में भी न बोला था, अपने उस गुरू को मार दिया जिसने उसे श्रेश्ठ धनुर्धर घोशित करने के लिए तत्कालीन सर्वश्रेश्ठ धनुर्धर एकलव्य का अंगूठा काटने का जघन्य पाप किया था.

अतः जिन हालातों में कृश्ण ने यह बात कही उसका सीधा सरल अर्थ है कि आदमी को सम्पत्ति की लड़ाई में किसी छोटे, बड़े, अपने, पराए का कोई लिहाज नहीं करना चाहिए. अगर वे सीधे ढंग सें मानें तो ठीक वर्ना लड़ने की नौबत आ जाए तो उसमें भी पीछे नहीं हटना चाहिए. और अगर गीता के इस संदेश को इसके तुरंत बाद में हुई महाभारत की लड़ाई के साथ देखा जाए तो कृश्ण का सीधा सा संदेश है कि धन के लिए अपनों को अगर धोखे बेईमानी सें भी मारना पड़े तो भी आदमी को झिझकना नहीं चाहिए. बस यही गीता का कर्म का संदेश है!!

सत्यता की कसौटी पर : सत्यता की कसौटी पर तो गीता का कर्म का सिद्धांत उतना ही कारगर है जितना माँस के लिए गिद्ध को रक्षक बनाना. गीता के कर्म के सिद्धांत की कोई कैसे भी व्याख्या कर ले, यह सिद्धांत है ही असत्य. किसी किस्म की लीपापोती इसकी असत्यता पर पर्दा नहीं डाल सकती.

शब्दद् अर्थ : गीता के श्लोक 2.47 का शब्द दर शब्द अर्थ है कि कर्म करने में निश्चय ही तेरा अधिकार है परन्तु फल में कभी नहीं. तुम कभी भी अकर्मणे (कर्म न करने वाले) न होवो और न ही कभी अपने आपको फल का कारण समझो.

अगर यह बात स्वीकार कर ली जाये कि आदमी का काम करने पर ही अधिकार है उसका फल प्राप्त करने पर बिल्कुल नहीं तो इसके दो अर्थ निकलते हैं.

पहला तो यह कि हमें आम जिंदगी में बस काम करना चाहिए उसके बदले में कुछ नहीं मांगना चाहिए. अर्थात मजदूर को सारा दिन काम करने के बाद दिहाड़ी नहीं मांगनी चाहिए. बाबूओं को सारा महीना नौकरी करके तनखाह नहीं मांगनी चाहिए क्योंकि उनका काम पर अधिकार है फल पर नहीं और न ही उन्हें स्वयं को महीने भर की गई नौकरी का कारण समझना चाहिए. ऐसे ही बाह्मणों को अपनी पंडिताई करने के बाद दक्षिणा नहीं मांगनी चाहिए. अगर ब्राह्मण ही ऐसा करने लग जाएं तो दुनिया में कोई ब्राह्मण ही न रहे!! विद्यार्थी जब साल भर मेहनत करके परीक्षा दें तो उन्हें परिणाम की आशा नहीं करनी चाहिए.

दूसरा यह कि जितने भी कत्ल चोरी आदि के अपराध होते हैं वहां भी कातिलों चोरों को अपराध करने को तो अधिकारी माना जाना चाहिए परन्तु उसके फल अर्थात सजा का अधिकारी उन्हें नहीं माना जाना चाहिए क्योंकि उन्हें फल (अपराध) का कारण नहीं समझा जाना चाहिए.

जहां तक बात है अकर्मणे रहने की तो जिस स्थिति में कृश्ण ने यह बात अर्जुन सें कही थी उससे इस बात का यही अर्थ निकलता है कि जब धन के लिए झगड़ा हो जाए तो आदमी को पीछे नहीं हटना चाहिए. धन के लिये अपनो को न मारना "अकर्मण्यता" है. गीता के अनुसार आदमी को ऐसा अकर्मणा नहीं होना चाहिए.

हमारे विचार में **ऐसा नीच कर्मणा होने सें तो अकर्मणा होना कहीं अधिक श्रेयकर है.**

गीता के इस सिद्धांत पर दुनिया का कोई इन्सान नहीं चलता और न ही कोई चल सकता है. यहां तक कि नित्य गीता का प्रचार प्रसार करने वाली गीता प्रैस का मालिक भी इस सिद्धांत पर अमल नहीं करता. अगर वह स्वयं को अपनी प्रैस में छपी किताबों का कारण न माने तो उसे उसके लिये लोगों सें कीमत मांगने का भी अधिकार नहीं है. औरों की तो

छोड़ो जो तथाकथित महाराज नित्य टीवी अथवा स्टेजों पर गीता की कथा करते हैं वे भी कथा करने का मोल पहले ही तय कर लेते हैं. वे स्वयं गीता के इस सिद्धांत को झूठा साबित कर देते हैं.

पूछा जा सकता है कि क्या कृश्ण ने जमुना के तट पर बांसुरी बिना फल की इच्छा के बजाई थी. अगर उसकी बांसुरी सुन कर राधा और गोपियां अपने पतियों को छोड़ कर नहीं आती तो क्या वह फिर कभी बांसुरी बजाता! क्या दशरथ ने बिना फल की इच्छा के ही अश्वमेध यज्ञ में किया जाने वाला कामुक नाटक किया था!

इतना ही नहीं मानव शरीर में कुछ क्रियाएं अपने आप होती हैं जैसे पसीना निकलना, सांस चलना, दिल धड़कना आदि. यह क्रियाएं भी बिना मकसद के नहीं होती. फेफड़े सांस अन्दर बाहर करने का कर्म करते हैं इसका फल है अथवा इसका कारण है कि आदमी जीवित रहता है. अगर फेफड़ों को आदमी को जिन्दा रखने का कारण न माना जाए तब तो आदमी के मर जाने पर भी फेफड़ों को अपना कर्म जारी रखना चाहिए. अतः गीता न केवल मानव निर्मित नियमों के विरुद्ध है बल्कि भगवान के बनाये नियमों के भी विपरीत है.

गीता की कसौटी परः अगर कृश्ण द्वारा दिये गये कर्म के सिद्धांत की विवेचना स्वयं उसके द्वारा दिये गये अर्थ के आधार पर करें तब भी यह बात सिद्ध होती है कि ब्राह्मणों ने अपने निजि स्वार्थ के लिए घूंसे को पंच तत्व बना रखा है. कृश्ण के अनुसार कर्म का अर्थ है : शास्त्र विहित यज्ञ, दान व होम आदि करने के लिए द्रव्यों का त्याग कर्म है. अतः कृश्ण के अनुसार जैसा शास्त्रों में लिखा है उस विधि सें यज्ञ करने, दान देने व होम आदि करने के लिए धन सम्पत्ति देना ही कर्म है. कृश्ण और गीता का अच्छे काम करने और बुरे काम न करने के सिद्धांत सें कोई लेना देना नहीं है. वैसे भी अर्जुन ने जूए में हारे धन के लिये अपने रिश्तेदारों को कत्ल करने सें मना करके बुरे काम सें बचने की कोशिश की थी. लेकिन कृश्ण ने गीता का ज्ञान देकर उसके हाथों उसका पूरा कुनबा कत्ल करवा दिया.

कृश्ण के अनुसार शास्त्र विधि सें हर प्रकार के यज्ञ अर्थात गोमेध, नरमेध, अश्वमेध करने के लिये ब्राह्मण (क्योंकि केवल ब्राह्मण ही दान लेने का अधिकारी है) को गाय बच्चे और घोड़े दान दिये जाने चाहिए ताकि शास्त्र विधि सें उनकी बलि दी जा सके. ब्राह्मण को होम करने के लिये घी लकड़ियां आदि भी दान की जानी चाहिए. अन्य कर्मकांडों के लिए भी द्रव्य अर्थात धन सम्पत्ति सोना चांदी जमीन आदि का दान दिया जाना चाहिए. यही मनुश्य का कर्म है और ऐसा करने मात्र का वह अधिकारी है. ब्राह्मण को यह सब दान देने पर भी वह इसके फल का अधिकारी नहीं है.

गीता की असलीयत

1. आज के समय में अगर निश्पक्ष नजर सें देखा जाए तो गीता किसी माफिया डॉन द्वारा अपने गुर्गे को दिया गया आदेश जैसा लगता है. अर्जुन ने धन के लिए अपने दादा तथा गुरू की हत्या का पाप करने सें मना कर दिया तो कृश्ण उससे बोला 'नपुंसक मत बन. अपनों की लिहाज करना उसके धर्म (धन्धे) को शोभा नहीं देती.' (2.3) हिन्दी फिल्मों का डॉन अपने गुर्गों को ऐसी बातें बोल कर ही हिम्मत बंधाता है. अगर ऐसे ही धर्म की रक्षा करने के लिये ही ब्राह्मणों का भगवान अवतार लेता है तो इससें तो अवतार न होना ही अच्छा है.

2. कृश्ण अर्जुन सें कहता है कि मनुश्य का शरीर बचपन सें जवानी, जवानी सें बुढापे, बुढापे सें मृत्यु की ओर चलता जाता है. इसलिए उसे ''शरीर'' का मोह नहीं करना चाहिए. अतः उसे अपने विरोधियों को मार देने में कोई हिचक नहीं करनी चाहिए. (2.13) अगर गीता की इस बात को मानें तब तो किसी भी कातिल को सजा होनी ही नहीं चाहिए. जज को किसी के भी शरीर सें मोह नहीं करना चाहिए. जो जन्मा है उसे मरना तो है ही अतः अगर कातिल ने मार दिया तो उसने तो ''भगवान'' के काम का बोझ ही हलका किया है. वर्ना कृश्ण को (अगर उसके भगवान होने के दावे को सच्च मान लें तो) एक आदमी और मारना पड़ता. कातिलों को तो सीधा स्वर्ग में स्थान मिलना चाहिए!

3. पूरी गीता में ''आत्मा'' शब्द कहीं आया ही नहीं है जिसका अर्थ उस आत्मा सें है जो अमर है और जो कपड़ों की तरह शरीर बदल लेती है. ब्राह्मणों ने अपनी रोजी रोटी के लिए प्रपंच रच डाला है.

4. कृश्ण कहता है कि देही (जिसे कि ब्राह्मण आत्मा का नाम देते हैं) सारे शरीर में व्याप्त होती है. लेकिन ब्राह्मणों का दूसरा ग्रन्थ श्वेताश्वतर उपनिशद (5.9) कहता है कि आत्मा का आकार बाल की नोक के दस हजावें भाग के बराबर होता है. मुण्डक उपनिशद कहता है कि जिन्हें पूर्ण ज्ञान हो वही आत्मा के बारे में जान सकता है. इस उपनिशद के रचियता को ज्ञान कुछ ज्यादा ही हो गया लगता है. वह कहता है आत्मा पाँच तरह की वायु में तैरता रहता है.(3.1.9) इन पाँच हवाओं में सें एक अपान वायु भी है जिसे प्राणी गुदा सें बाहर निकालते हैं. (ए सी प्र द्वारा लिखी—गीता यथारूप पृ. 99) लगता उसने अफारे सें मरते किसी पशु को देख लिया होगा. अफारा आने पर पशु मूँह और गुदा दोनों सें हवा निकालता हुआ मर जाता है. ऋशि के समझ नहीं आया होगा कि आत्मा किधर सें निकली. अतः उसने ज्ञान बघार दिया कि आत्मा कहीं सें भी तैर कर निकल सकती है.

5. गीता का यह सिद्धांत कि आत्मा अजर, अमर अजन्मा है, वास्तव में कठोपनिशद् (1.2.18) सें नकल किया गया है. भानुमति ने कुनबा जोड़ा, कहीं की ईंट कहीं का रोड़ा. लेकिन कृश्ण इससें दो कदम आगे बढ़ गया. वह बोला जो व्यक्ति यह जानता है कि आत्मा अमर है वह किसी को मार ही नहीं सकता. (2.21) अतः अगर कातिल यह जानता है कि आत्मा अमर है तो वह किसी को मार ही नहीं सकता. अतः उस पर तो कत्ल का मुकदमा चलना ही नहीं चाहिए.

6. गीता (2.22) कहती है कि जैसे मनुश्य फटे पुराने वस्त्र त्याग कर नए वस्त्र धारण करता है वैसे ही आत्मा पुराने जीर्ण हुए शरीर त्याग कर नए धारण कर लेती है. अगर ऐसा है तो नवजात बच्चे क्यों मर जाते हैं. तब आत्मा बिल्कुल नए शरीर क्यों त्याग देती है. बिजली का करंट लगने सें छोटा बच्चा, जवान आदि सभी मर जाते हैं. उस समय उनका शरीर कहीं सें भी जीर्ण नहीं होता. लेकिन कोमा में मनुश्य बीसियों साल पड़ा रहता है. तब उसका शरीर सड़े हुए पिंजर जैसा हो जाता है लेकिन तब भी आत्मा उसके शरीर को नहीं त्यागती! अतः गीता का यह सिद्धांत कोरी बकवास है जो एक जुआरी को दूसरे जुआरी सें मरवाने के लिए की गई थी.

7. कृश्ण ने आत्मा जैसा कोई सिद्धांत नहीं दिया था. उसने तो अर्जुन को लड़वाने के लिए यह पैंतरा चला था. उसने अध्याय 2 में 22 सें 25 तक श्लोकों में अर्जुन को समझाया कि असली चीज तो आत्मा है किसी को मार देने पर शरीर मर जाता है, आत्मा नहीं मरती, वह तो दूसरा नया शरीर बदल लेती है. इसलिए उसे बेफिक्र होकर अपने बुर्जुगों को मार देना चाहिए. जब अर्जुन पर उसकी इन बातों का असर न हुआ तो कृश्ण ने अपने ''आत्मा अमर है'' के पैंतरे पर स्वयं मिट्टी डाली और बोला, अगर तू मानता है कि आत्मा सदा जन्म लेती हैं, मरती है तो भी तू लड़ाई कर क्यों कि जो (आत्मा) जन्मा है उसे तो मरना ही है. तू क्षत्रिय है इसलिए हे पहलवान, तू लोगों को मार दे.

अपनी बात मनवाने के लिए उसने उसको महाबाहु (पहलवान) कह कर कटाक्ष भी किया. (ए सी प्र –गीता यथारूप पृ. 112) अतः कृश्ण ने गीता में जो कुछ कहा उसका असली और एकमात्र उद्देश्य अर्जुन के हाथों उसके परिवार को मरवाना था. कृश्ण ने कोई सिद्धांत नहीं दिया. ब्राह्मणों ने अपना धन्धा चलाने के लिए घूंसे को पंचतत्व का योग बना दिया. कृश्ण चाहता था जैसे परशुराम ने अबोध बालकों का कत्लेआम किया, गर्भ में पल रहे बच्चों तक को उसने मार दिया वैसा ही कुछ अर्जुन भी करे. दुर्भाग्य सें कृश्ण अपने कुत्सित इरादों में कामयाब हो गया! काश, अर्जुन को बुद्ध मिल गए होते! लाखों नारियां विधवा होने सें बच जाती! हजारों माओं के जवान बेटों को चील कौवे न खाते!! लड़ाई में विधवा हुई क्षत्राणियों और गोपियों को सड़कों पर जाकर खड़ा न होना पड़ता, वहां सें गुजरने वाले हर ब्राह्मण सें याचना न करनी पड़ती कि वह उसके साथ संभोग कर ले ताकि उसके पुत्र पैदा हो सके और वह मोक्ष की हकदार बन सके.

8. आत्मा के सिद्धांत के समर्थन पर हजारों हजार ग्रन्थ लिखे गए हैं. लेकिन आज तक कोई यह नहीं बता पाया कि आत्मा क्या होती है, शरीर में आती कैसे है जाती कैसे है आदि. ब्राह्मणों को इसी बात में फायदा है कि लोग इसी गोरख धंधे में पड़े रहें. कृश्ण ने सात सौ श्लोकों की गीता कर डाली मगर एक श्लोक में भी "आत्मा क्या है", यह नहीं बताया. वास्तव में उसे भी पता न था. उसने तो बस अर्जुन को लड़वाने के लिए यह बात कह दी थी. अध्याय 2.29 में वह स्वयं मान लेता है कि आत्मा के बारे में कोई नहीं जानता.

9. जब अर्जुन ने कृश्ण की आत्मा सम्बन्धी बातें दरनिकार कर दीं तो कृश्ण ने उसे एक और लालच दिया कि जो क्षत्रिय लड़ाई में मारे जाते हैं वह स्वर्ग में जाते हैं. अतः लड़ते हुए मरने पर उसके सारे रिश्तेदार स्वर्ग में जाएंगे. (2. 31,32) इस्कान का संस्थापक ए सी अपनी पुस्तक ''गीता यथारूप'' में इसकी व्याख्या करते हुए कहता है कि जैसे यज्ञ में मारा गया पशु स्वर्ग में जाता है वैसे ही लड़ाई में मरने वाला क्षत्रिय स्वर्ग में जाता है. (पृ.118) अपनी व्याख्या के सबूत के तौर पर उसने संहिता (वेद) सें संस्कृत का एक श्लोक भी दिया है.

10. अपनी बात का असर न होते देख कृश्ण ने फिर पैंतरा बदला. वह बोला अगर क्षत्रिय होकर भी वह नहीं लड़ा तो लोग उसे कायर होने का ताना देंगे. उसकी बेइज्जती करेंगे. बेइज्जत होकर जीने सें अच्छा है कि वह मर जाए. अपने रिश्तेदारों को मार देगा तो यहां का राज्य मिलेगा अगर वे तुझे मार देंगे तो तुझे स्वर्ग मिलेगा. इसलिए तू लड़ने मात्र के लिए लड़ाई कर. अपनों को मारने में तुझे कोई पाप नहीं लगेगा. (2.31 सें 38)

11. **सबसें महत्वपूर्ण बात यह कि क्या गीता के सिद्धांत मात्र अर्जुन के लिए ही थे? क्या वे सभी पर लागू नहीं होते? अगर वे सब पर लागू होते हैं तब तो किसी को भी झगड़ा होने पर अपने बड़े बुजुर्गों का लिहाज नहीं करना चाहिए. जैसे कृश्ण के कहने पर अर्जुन ने सम्पत्ति में हिस्सा देने पर अपने गुरू दादा तक को मार दिया वैसे ही सम्पत्ति में हिस्सा न मिलने पर गीता मानने वालों को चाहिए कि वे अपने बुजर्गों को मार दें. सरकार को भी चाहिए कि इस तरह के कत्लों को "गीता के कर्म" समझे और कातिलों को कृश्ण की तरह पूजे!!**

कितनी शर्म की बात है ऐसी दुर्भावना वाली बातें करने वाले को भगवान कहा जाता है. ऐसी भयंकर पापपूर्ण बातों को धर्म बताया जाता है. कृश्ण अगर गीता का उपदेश आज दे तो निश्चित रूप सें उस पर अदालत में हत्या के लिए उकसाने (abetment to murder) का मुकद्दमा चल सकता है जिसकी सजा हत्या जुर्म के बराबर होती है!

गीता रचे जाने की वास्तविकता : गीता के उपरोक्त वर्णित सिद्धांतों पर चर्चा करने सें पहले गीता की वास्तविकता सें परिचित होना भी आवश्यक है. अगर गीता को महाभारत का अंग माना जाए और यह भी सत्य मान लिया जाए कि जब अर्जुन ने जूए के धन की खातिर अपने भाई बन्धुओं गुरू व रिश्तेदारों को मारने सें इन्कार कर दिया था, तब कृश्ण ने गीता का उपदेश दिया था जिसे सुन कर महाभारत का रूका रूकाया युद्ध पुनः भड़क उठा था. इस युद्ध में इतने लोग मारे गए कि भारत भूमि पुरूशों सें खाली हो गई. अगर यह सत्य है तो निश्चित रूप में यह कहा जा सकता है कि गीता का उपदेश एक व्यभिचारी धूर्त द्वारा जूए में अपनी पत्नि तक को हारे जुआरियों को दिया गया भड़काऊ भाशण था जिसे सुनकर एक पक्ष के जुआरियों ने दूसरे पक्ष के जुआरियों का समूल नाश कर दिया.
वास्तव में जब सिकन्दर दुनिया जीतता हुआ भारत आया तो यहां का मौसम और जलवायु उसके सैनिकों को रास न आया. भारतीय योद्धाओं ने भी उन्हें डट कर टक्कर दी. अतः उन्होंने हथियार फैंक दिए और वापिस अपने देश जाने की योजना बनाई. जब सिकन्दर को उनकी योजना का आभास हुआ तब उसने अपने सैनिकों में जोश जगाने के लिए जो भाशण दिया उसकी ही प्रतिलिपि है गीता. गीता का सारा वार्तालाप वास्तव में युद्ध सें मूँह मोड़ कर भागे सैनिकों को सिकन्दर द्वारा दिया गया भाशण है जिसे सुनकर उसके सिपाही पुनः युद्ध में कूद पड़े थे और पौरस को हरा दिया था. युनानियों में हर घटना को लिखने की आदत थी. सिकन्दर का यह ऐतिहासिक भाशण भी लिखा गया.
सन 400 ईस्वी में राजा ने गीता लिखवाई और महाभारत में घुसेड़ दी. कभी किसी ब्राह्मण कथाकार के हाथ यह भाशण लग गया और उसने उठा कर इसे महाभारत में चिपका दिया. वैसे यह भी तथ्य ही है कि महाभारत नामक ग्रन्थ कभी "जय" नाम सें जाना जाता था और इसमें मात्र 000 श्लोक थे. जो भी कथाकार आया इसमें अपनी रामकहानी घुसेड़ता गया. फलस्वरूप आज इसमें एक लाख सें अधिक श्लोक हैं. 000 सें एक लाख तक की संख्या तक पहुंचाने में सात सौ श्लोकों (गीता) का योगदान सिकन्दर का भी है.

गीता में अन्तर्विरोध

ऐसा लगता है कि गीता घढ़ने में भी कइयों का योगदान है. या फिर जिसने भी गीता घढ़ी उसने डट कर सोम पी रखी थी. उसे ध्यान ही नहीं रहा कि पीछे वह क्या बकवास कर चुका है. कई बार तो उसने कुछेक श्लोको के बाद ही अपनी बात पलट दी. उदाहरणतः

1. श्लोक 2.22 में आत्मा एक शरीर सें दूसरे में जान वाली वस्तु है लेकिन दो श्लोकों के बाद ही आत्मा स्थिर और अचल बता दी गई है.
2. श्लोक 4.37 में ज्ञान सबसें बड़ी चीज है जिससें सभी पाप नष्ट हो जाते हैं. लेकिन श्लोक 18.66 में केवल पूजा सें ही पाप नष्ट होने की बात कही गई है.
3. श्लोक 2.45 में वेदों के तीनों गुणों सें बचकर रहने का आदेश दिया गया है तो श्लोक 8.11 में वेदों को परम पद बताया गया है. जबकि श्लोक में वेदों को बेकार की वस्तु बताया गया है. उनकी उपयोगिता इतनी बताई गई है जितनी बाढ़ के समय में कूंए की.
4. श्लोक 5.14 में भगवान न तो संसार को बनाता है न चलाता है लेकिन श्लोक 18.61 में वही भगवान सारी दुनिया को चलाने वाला बताया गया है जिसकी मर्जी के बिना पत्ता भी नहीं हिल सकता.